।। श्रीगोकुलेन्दुर्जयति ।।

पंचमकुमार श्रीरघुनाथजीके पंचमगृह (कामवन)की रीति अनुसार

श्रीगोकुलचन्द्रमाजी हवेली

हजीरा रोड, पाल, सूरत

सेवा प्रणालिका

वि.सं.२०७५सू श्रीगोकुलचन्द्रमाजी हवेली, सूरतमें या प्रणालिका अनुसार सेवाक्रम प्रारंभ भयौ

❖❖❖

भाग -१

(कुल भाग ४ हैं)

❖❖❖

:संकलन, संशोधन तथा लेखन:

गो. श्रीद्वारिकेशलालजी महाराजश्रीके नेतृत्त्व एवं मार्गदर्शनमें **गो. श्रीकन्हैयालालजी महोदय** (कामवन-सूरत)

♦♦♦♦♦♦

:आधार:

♦श्रीब्रजवल्लभजी मुखियाजीवाली पंचमनिधि **श्रीगोकुलचन्द्रमाजी, कामवन** की प्रणालिका (वि.सं. २०२३)

♦गो. श्रीद्वारिकेशलालजी महाराजश्रीकी आज्ञासू गो.श्रीअनिरुद्धलालजी द्वारा लिखी **श्रीनवनीतप्रियाजी, सूरत** की प्रणालिका (वि.सं.२०५०-अंदाजित)

❖❖❖

।। श्रीगोकुलेन्दुर्जयति ।।

❖❖❖

श्रीगोकुलचंद्रमाजी हवेली, पाल-हजीरा रोड, सूरत

इतिहास तथा स्वरूप परिचय

:इतिहास:

श्रीगोकुलेन्दु प्रभुकी इच्छा एवं श्रीवल्लभ-विट्ठल-रघुनाथजीकी कृपासू श्रीगोकुलचन्द्रमाजी हवेली निर्माणकौ विचार पू.पा.गो. श्री१०८श्रीद्वारिकेशलालजी महाराजश्री (कामवन-सूरत) कू २००० ई.स. मैं आयौ। आपश्रीनै तत्कालीन वैष्णव समाजके अग्रणी नवसारीके नारायणभाई पारेख और सुरतके श्रीसुनीलभाई कनैयालाल मोदी, श्रीजवाहरभाई रमणलाल परीख, श्रीकनुभाई ओ. शाह, श्रीराजनभाई धनवनभाई दरु तथा श्रीदक्षेशभाई शाह जैसे वैष्णवन्के साथ मिलिकै रांदेर-अडाजण विस्तारमैं श्रीगोकुलचन्द्रमाजी प्रभुके बिराजवे लायक एक योग्य, सुंदर, सुरम्य तथा मनोहर स्थानकी खोज प्रारंभ करी। या कार्यमैं आपश्रीके दोनों पुत्र (बडे पू.पा.गो. श्रीअनिरुद्धलालजी तथा छोटे पू.पा.गो. श्रीकन्हैयालालजी) भी साथ रहे। वैष्णवन्के अथाग प्रयत्नके बावजूद शहरके समीप कोई योग्य स्थान मिल नहीं रह्यौ हतौ।

अचानक एक दिन शहरसू थोडे बाहर, भूलका-विहार स्कूलके बगलमैं, एक बडौ खेत बिकाऊ है यह समाचार ज्ञात भये। स्थान बहुत दूर है यह शंका मनमैं होते हुए भी स्थान देखवे गये। वहाँ जाते ही सबन्कू यह स्थान खूब रमणीय तथा शुभ लग्यौ। जगहके मालिक किसानसू बात करते समय एक रोचक और रोमांच करायवेवारी वार्ता जानवे मिली:

१९७० ई.स. के लगभग या खेत पै हतौ तब अचानक वहाँ एक साधु आयौ। वा साधुनै यासू थोडौ जल मांग्यौ, सो याने दियौ। थोडी देर विश्राम करि साधुने किसानसू प्रसन्न होयके कही: "तेरौ यह खेत बहुत शुभ है, या स्थान पै आगै चलके कोई देवताकै स्थान बनेगौ"!!

यह वार्ता सुनते ही सबन्के मनमैं एक ही विचार आयो... कैसी भगवद् लीला ?! श्रीगोकुलचन्द्रमाजीने इतने वर्ष पूर्व ही बिराजवेकू यह स्थान निश्चित कियो है और हम यह मानैं हैं कि हम प्रभुके लिये स्थान ढूंढ रहे हैं! सब समझ गये कि हम सब तौ निमित्त हैं, या स्थानकौ चयन तौ स्वयं श्रीगोकुलेन्दु प्रभुनै अनेक वर्ष पहले ही करि लियौ है! यह विचार मात्रसू सबन्के मनकी शंका दूर हो गई और सबन्नै यह स्थान हवेली निर्माणके लिये सुनिश्चित कियौ। कुल ५००० वार (चो. गज) की जगह ८ वैष्णव भगवदीयन्नै मिलके ८०,००,०००/- रुपियामैं खरीद्यौ जामैंसू ७५० वार हवेलीकू भेट करी।

◆भूमिपूजन: इ.स.२००२ ◆वास्तु: इ.स. २००५ ◆पाटोत्सव: इ.स. २००६

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

:पाटोत्सव:

वि.सं.२०६२, श्री शुभ मिति (व्रज) महा वद ६, शुक्रवार तदनुसार दिनांक २०/०१/२००६ (ई.स.) के दिन नवनिर्मित हवेलीमें पू. पा. गो. श्री१०८श्रीद्वारिकेशलालजी महाराज (कामवन-सूरत)ने **श्रीगोकुलचन्द्रमाजी प्रभु**कू प्रथम वखत पाट बिराजमानके सेवाकौ क्रम प्रारंभ कियौ। श्री...जीके झाँपीजी प्रात १०:३० बजे श्रीगोविन्दजीकी हवेली, गोपीपुरा, सूरतसू वाहन द्वारा विजय भये। वहाँसू अडाजणके आनंद महल रोड एक वैष्णवके घरके पधारे। या स्थान पै थोडे विश्राम पश्चात् झांपीजीकू एक बग्गीमैं गो. श्रीअनिरुद्धलालजी तथा श्रीकन्हैयालालजीके श्रीहस्तमें बिराजमान करि कीर्तनिया, निशान-डंका, बैण्ड बाजा तथा बडी संख्यामें वैष्णव समाज, अलग-अलग वाहन तथा घोडा आदि अति शोभनीय एवं भव्य शोभायात्रा स्वरूपसू अडाजण विस्तारमैं होते भये हवेली तरफ बढे। **मध्याह्न १:३० बजेके शुभ मुहुर्तमैं श्रीगोकुलेन्दु प्रभुने श्रीगोकुलचन्द्रमाजी हवेलीमैं प्रथम वार प्रवेश कियौ**। या शुभ दिन तथा ता २२/०२/२००६ कू सानंद संपन्न भये छप्पनभोग पै पंचम गृहके कामवन, भावनगर आदिसू सभी बालक, बहुजी, बेटीजी तथा अन्य घरन्के अनेक वल्लभकुल बालक एवं बीकानेर, जयपुर, सूरत, मुंबईसू सजातीय वर्ग उपस्थित रहे हते।❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

हवेलीमैं बिराजते अन्य स्वरूप :

श्रीबालकृष्णजी: श्रीगोकुलचन्द्रमाजीके बगलवाले सिंहासन पै बिराजमान श्रीबालकृष्णजी प्रभु कामवनसू पधारे है, ये स्वरूप कामवनमैं श्रीछोटे रघुनाथजी (१६६०) या उनसू पूर्वके आचार्य बालकन् के सेव्य अन्य प्राचीन स्वरूपन्के साथ बिराजते। पू.पा.गो. श्रीद्वारिकेशलालजीके आग्रहसू उनके भतीजा पं.पी.पू.पा.गो. श्रीवल्लभलालजी महाराज (कामवन)ने ये स्वरूपकू सूरत सप्रेम पधराये, तिथि ज्ञात नहीं।

श्रीशालिग्रामजी तथा श्रीगिरिराजजी: २ गिरिराजजीके स्वरूप कामवनसू पधारे। नूतन हवेलीके शुभ समाचार ज्ञात भये तब पू.पा.गो. श्रीद्वारिकेशलालजीके साढू भाई नि.ली.पू.पा.गो. श्रीव्रजजीवनजी महाराज (अमरेली-मुंबई)ने सस्नेह १ शालिग्रामजी पधराये हते।

पादुकाजी: वि.सं. २०६५मैं पंचमगृहके श्रीकाका वल्लभजी (वि.सं.१७२९) के भावनात्मक पादुकाजी कामवनमैं उपर बिराज रहे पूर्व आचार्य बालकन्के पादुकाजीन्मैं सू पधराये, तबसू यह पादुकाजी भी श्रीगोकुलचन्द्रमाजीके निजमंदिरमैं बिराजैं हैं।

———————————————————

गादीजीकी स्थापना: शुभ मिति महा वद ५, वि.सं. २०६२, तदनुसार दि. १९/०१/२००६ कू श्रीदेवकीनन्दनजी महाराज (वि.सं. १९१५) के गादीजी पू.पा.गो. श्री१०८श्रीद्वारिकेशलालजी महाराजश्रीने सायं ५ बजे श्रीगोकुलचन्द्रमाजी हवेलीमैं बिराजमान किये। गादीजीकी पाग स्वयं श्रीदेवकीनन्दनजीकी धरी भई प्राचीन है, पादुकाजी नये सिद्ध करके पधराये हते। अमुक वर्ष पीछै, वि.सं. २०६९के लगभग श्रीदेवकीनन्दनजी महाराजकी धरी हुई प्रसादी बण्डी नवसारीके एक वैष्णवके घरसू यहाँ पधारी। यह बंडी वल्लभकुलके दर्शन मात्र गादीजीके उत्सव (चै.सु.३ - गणगौर)के दिन तिलकके समय होवैं हैं। नौंध: पुष्टिमार्गीय हेवलीकी सेवा गुरुके गृहमैं बिराजते प्रभुकी सेवा है यह भावसू प्रत्येक हवेलीमैं पूर्वाचार्यन्के गादीजी प्रभुसू पहले पधरायवेकी परंपरा रही है। गादीजीकी आडीसू ही हवेलीमैं बिराजते प्रभुकी सब सेवा होवे है। उत्सवन् पै जो २ श्रीफल धरे जावैं वे भी गादीजी तरफ की भेट ही मानी जावै।

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

❖❖❖

:चित्र सूची:

(१) **श्रीगोकुलचन्द्रमाजी प्रभुके प्रथम दर्शन** (२०/०१/२००६)

(२) **श्रीदेवकीनन्दनजीके गादीजीकी स्थापना** (१९/०१/२००६)

(३) **प्रथम छप्पनभोग** (२२/०१/२००६)

(४) **नवनिर्मित श्रीगोकुलचन्द्रमाजी हवेली, पाल, सूरत** (१९/०१/२००६)

❖❖❖

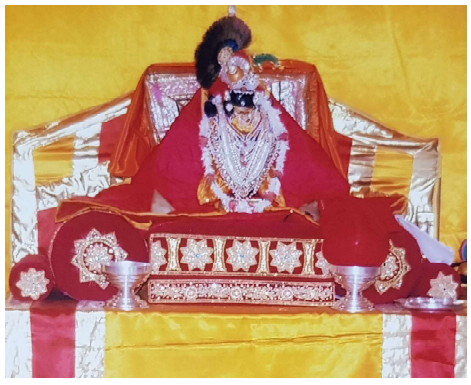

(१)

(२)

(३)

(४)

भादौं

❖❖❖

भादौं वद ८: **जन्माष्टमी। थापा-बंदनमाल/तोरण** (आसोपालव तथा गलगोटा)

विशेष: प्रात: शंखनादसू हवेलीकी पोरि (द्वार) पै **शहनाई-नौबत** बजैं। आज झाँझ-पखावज बजत ही श्री...जी जगैं। आज मंगलासू नवमीके राजभोग तक सब आरती थालीकी होवैं।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। **श्रृंगार दुहैरा भारी**। त्रिवल,चंपकली, कंठा, नवरत्न, तोता पदक, हस्त साँकला आदि सब धरैं। तिलक-अलकावली दुहैरा। संभव होय तौ आज गुंजामाला भी नई धरी जाय। **वागा-सूथन केसरी जामदानी अथवा डोरीयाके**, तोई वाले। **कुलह केसरी**, पटका सूतराऊ लाल, किरणकौ। ठाडे वस्त्र (कंदरा तथा चरणचौकीके वस्त्र) लाल सूतराऊ नए। पीठिकाकी ओढनी: जन्माष्टमीकी (प्रतिवर्ष नई सिद्ध होवै - केसरी साटीनके, श्याम साटीनकी पट्टावाली - भारी किनारीकी)।

सामग्री: **गोपीवल्लभभोग (तिलक पीछै)**: ओट्यो केसरी दूध तथा केसरी पाटिया। **राजभोग**की अनसखडी: केसरी बूँदी-सकलपारा, मुरब्बाकी कटोरी, सिखरन वडी, गोरस, मैदापूडी तथा संधाणा, दहीकी कटोरी, केसरी बिलसारु, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी। सखडी: तीनकूडा, धोवादाल (विशेष नौंध: जब भी धोवादाल बनै तब कौर **धोवादालसू ही सान्यौ जाय**), पापड, कचरीया, पूडी (रोटी अनिवार्य नहीं), रायता, भुजैना, छाछवडा। **महाभोग**की अनसखडी: पंजीरीके लड्डू (नौंध: पंजीरीके अमुक लड्डू वल्लभकुलके बालक-बहु-बेटी अवश्य बाँधैं), बूंदी, सकलपारा, केसरी तथा सफेद चन्द्रकला, इंदरसा, सेवके लड्डू, मठडी, गूंजा, बाबर (४ नग - बहुत बडे नहीं), सिखरन वडी, मणका तथा चावलकी खीर, केसरी पैंडा (छोटे २० नग), केसरी बासौंदी (२ लीटर दूधकी), ४ प्रकारके कच्चे संधाणा। माखन-मिश्री, विविध सूकेमेवा (तले तथा पाके भये अलग-अलग), तरमेवा, केसरी बिलसारू, नींबू-आदापाचरी। एक थालीमैं नमक, विभिन्न प्रकारके पक्के संधाणा, मुरब्बाकी कटोरी। सखडी: पाँच

भात (सादा, दही, सिखरन, नींबू, मेवा), केसरी पाटिया, धोवादाल, तीनकूडा, छाछवडा, चार प्रकारके शाक तथा भुजैना, ४ तरहके कठोळ, गाँठिया, पापड, कचरीया, रायता, पूरी। (विशेष नौंध: बूंदी, सकलपारा, चन्द्रकला, इंदरसा, सेवके लड्डू, मठडी, गूंजा, तथा पंजीरीके ६-६ नग अलग निकाल लेने। इनमैं सू २-२ नग दो दिनके पलना तथा ९के दिना राजभोगमैं आवैं। जन्माष्टमीकी सब सामग्रीके ३० नग नित्यसू थोडे बडे सिद्ध करने, अंदाज १ किलो घी मैं ३० नग)।

सेवाक्रम (मंगलासू राजभोग): शंखनाद बेगे (जल्दी) प्रात:काल ५:१५ बजे होवैं। मंगल भोग धरि पंचामृतकी तैयारी करि लेनी।

मंगला आरती भीतर करि श्रीकू श्रृंगार चौकी पै पधराय धोती-उपरणा सूतराऊ केसरी पाटके (सूतराऊ केसरी किनारीवाले) धरिये, उपरणाकू वाम श्रीहस्तके उपरसू जनेऊकी तरह धरि दक्षिण श्रीहस्तके नीचे एक गाँठ मारि धरानौ। शयनके आभरण बडे करि सोनाकी शयनकी जोड धरिए, मुखारविन्द पै बाँक, तिलक, नकवेसर और कर्णफूल ही रहैं, अलकावली नहीं (जानकारीके लिए: कामवनमैं पंचामृतके समय श्री...जी श्रीनारायणदासजी ब्रह्मचारीजीके सिद्ध करवाए प्राचीन आभरण धरैं)। इतनेमैं सिंहासनके सन्मुख मंदिरवस्त्र करि पंचामृतकौ थाल पधराय पंचामृतकी तैयारी सजाय देनी, पट्टाके नीचे चंदनकौ साथिया करनौ। फेरि, **शंख-टकोरा-घंटा** बजत श्री...जीकू पट्टा पै पधराय दर्शन खोलिये, शंख-टकोरा बजते रहैं। दंडवत् करि प्रथम तिलक करि, अक्षत लगाय १-१ बीडा दोनों तरफ धरिये। तुलसीजीके १-१ पत्ता पंचामृतकी सब सामग्री तथा शंखमैं पधराय बची भई तुलसीजी चंदनमें डुबोय चरणारविन्दमैं समर्पिये। फेरि, पंचामृत कराय टेरा लीजिये (नौंध: श्री...जीके पंचामृत कराते समय यह सावचेती राखनी कि तुलसीजीके पान श्री...जीके मस्तक पर नहीं आवैं, पहले ही कटोरान्मैं सू निकालि थालमैं पधराय देने)। वस्त्र-आभरण बडे करि फुलेल तथा दोनों प्रकारके चंदनसू उबटन, अभ्यंग करि सुहाते जलसू स्नान कराईये। श्री...जीकू श्रृंगार चौकी पै पधराय, अंगवस्त्र करि अत्तर समर्पिये। दंडवत् करि श्रृंगार करिये।

श्रृंगार होत माला धराय (आरसी दिखायवे या तुलसी समर्पण करवेसू पहले) दर्शन खोलिये, अभी टकोरा नहीं। प्रथम अभ्यंगवाली डांडेकी आरसी दिखाय अन्य सब पाससे दिखावनी (२ आरसी सिंहासन पै तथा २ निजमंदिरके द्वारके पास खुली भई पधराय देनी)। **शंख-टकोरा बजत** दंडवत् करि **श्री...जीकू तिलक** करि गादी पै दोनों तरफ १-१ बीडा (चौंच कंकूमैं डबायके) पधराईये। ता

पाछै **अन्य सब स्वरूपन् कू तिलक करिय, पादुकाजी भी**। सब बालकन् की ओरसू श्रीफल भेट होय (जितने वल्लभकुल, बहु-बेटीन् की संख्या होय उतने के १-१ श्रीफल, ता उपरान्त दो गादीजीकी भावनासू पधराये जाएँ सो जानोगे)। **मुठिया वारि चूनकी आरती करिये**। पाछैं जो आरसी खोलिके पधराई हेंय सो सब क्रमसू निकट तथा दूरसू दिखाय ठिकाने धरनी। फेरि, १ झारीजी भरि पधराय टेरा लीजिये। पाछैं तुलसी समर्पण करि गोपीवल्लभ भोगमैं श्री...जी सन्मुख एक पडघा पै केसरी पाटिया तथा श्री...जीके दक्षिण (दाँई) तरफ दूसरे पडघा पै केसरी दूधको डबरा पधराईये। दूधमैं तिल और गुडके टुकडा यह श्लोक बोलते हुए पधराने :

सतिलगुडसंमिश्रम् अंजल्यर्धं शितं पयः।

मार्कण्डेय महाबाहो पिबाम्यायुसमृद्धये।।

समय भये (१५ मिनिट) आचमन कराय १ बीडा धरि श्रृंगार भोगमैं केसरी खीर धरनी। श्रृंगार भोग सराय, खेलकौ साज माढि, माला धराय खेलके दर्शन खोलिये। आरासी दिखाय खिलैये, आज खेलके दर्शनमैं ४ कीर्तन होवैं। छेले कीर्तनकी चलती आवै तब झारीजी बडी करि, भरिके पुनः सिंहासन पै दोनों झारीजी पधराय टेरा डारि राजभोग धरिये। (नित्यकी घडी, ५० मिनिट)। राजभोग सरे, माला धराय सिंहासन पै चाँदीको कुँजा (राजभोगके दर्शनसू संध्या-आरती तक ही आवै)। पधराय, राजभोगकौ साज माँढि दर्शन खोलिये। या समय - *आज नंदरायके आनंद भयो* - यह कीर्तन होय। राजभोगमैं आरती थालीकी, डोरा-भांत काँगराकी, दुहैरा बातीवारी।

सेवाक्रम (उत्थापनसू महाभोग): साँझकू शंखनाद सायं ६:३०बजे (शंखनादसू पहलै महाभोगके लिये तुलसीजी तुडवाय लेनी)। उत्थापनसू शयनकी आरती भये तक कीर्तन नहीं होवैं। उत्थापनसू शयनभोग अरोगवे तककी सेवा नित्यवत्। **शयनके दर्शनमैं संध्या-आरतीकौ साज मँढै** (सिंहासन पै चाँदीकौ कुंजा आवै), दोनों **बडी दीवी जुडैं**, शैय्याजी तक पैंडा बिछै, अनवसरवत् सब तैयारी होवैं। **सन्मुखमैं तृष्टि पधराय शयनके दर्शन खोलिये**। शयन आरती भये पीछे तृष्टि बडी करि लेनी, दर्शन खुले रहैं (नौंधः आरती पीछे शयनके दर्शन ही *जागरणके दर्शन* कहे जाएँ)। आरती भये पीछै कीर्तन शुरु होवैं - पहले ४ महात्म्यके, ता पाछैं अन्य जन्माष्टमीकी बधाई बुलैं। **तिलक/पंचामृतकी तैयारी**: दर्शन बंद होवेसू थोडी देर पहले मुखिया-परिचारक पंचामृत, पीताम्बर (साटीनकौ ओट्यो भयो केसरी वस्त्र), शालिग्रामजीके बिराजवेकू श्री...जीकी स्नानयात्रा वाली चौकी पै केसरी साटीनकौ छोटो वस्त्र , अरगजा (चंदन चूरा), फूलकी माला तथा

तिलक-बीडा सब तैयारी करि लैं। चाँदीकौ पलना भी तोषाखानेमैं सू चौकमें पधराय खडौ कारवाय लेनौ। रात्रीकू ११:४५ बजे टेरा डारि सब साज तथा दीवी बडे होवैं, मालाजी रहैं। पंचामृतकौ थाल श्री...जी सन्मुख मंदिरवस्त्र करि पधराय, शालिग्रामजीकू पधरायवेकौ वस्त्र सिंहासन पै धरि किंवाड लगाय बाहर आय बैठनौ। **श्रीमद्भागवत्जी के १० स्कन्धके ३ अध्यायके ८$^{१/२}$ श्लोक <u>तीन बार बोलने</u>**, सो श्लोक:

अथ सर्वगुणोपेतः कालः परमशोभनः। यर्ह्योवाजनजन्मर्क्षं शान्तर्क्षग्रहतारकम्।।१।।
दिशः प्रसेदुर्गगनं निर्मलोडुगणोदयम् । महीमङ्गलभूयिष्ठ पुरग्रामव्रजाकराः ।।२।।
नद्यः प्रसन्नसलिला ह्रदाः जलरुहश्रियः । द्विजालिकुलसंनादस्तबका वनराजयः ।।३।।
ववौ वायुः सुखस्पर्शः पुण्यगन्धवहः शुचिः । अग्नयश्च द्विजातीनां शान्तः तत्र समन्धितः।।४।।
मनांस्यासन्प्रसन्नानि साधूनामसुरद्रुहाम् । जायमानेऽजने तस्मिन्नेदुर्दुन्दुभयो दिवि ।।५।।
जगुः किन्नरगन्धर्वास्तुष्टुवुः सिद्धचारणाः । विद्याधर्यश्च ननृतुरप्सरोभिः समं तदा ।।६।।
मुमुचुर्मुनयो देवाः सुमनांसि मुदान्विताः । मन्दं मन्दं जलधराः जगर्जुरनुसागरम् ।।७।।
निशीथे तम उद्भूते जायमाने जनार्दने । देवक्यां देवरूपिण्यां विष्णुः सर्वगुहाशयः ।।८।।
आविरासीद् यथा प्राच्यां दिशीन्दुरिव पुष्कलः ।।८$^{१/२}$ ।।

ये श्लोक पढिके रात्रीकू बराबर **१२ बजे घंटानाद-शंख-टकोरा शुरु** करि कीर्तनियान्कू - *ब्रज भयो महरिके पूत* - कहि बधाई देनी, तब तुरंत कीर्तनिया यह बधाई झाँझसू शुरु कर दैं। घंटा भीतरीयाकू थमाय निजमंदिरमैं प्रवेश करिए, शंख-घंटा आदि बजते रहैं। दर्शन खोलि, श्रीशालिग्रामजीकू पंचामृतके पट्टा पै पधराईये। पंचामृतके सब डबरा तथा शंखमैं १-१ तुलसी पत्र पधराय बची भई सब तुलसी चंदनमैं डुबोय श्रीशालिग्रामजी पर पधराईये। क्रम अनुसार **पंचामृत करवाईये**। अंगवस्त्र कराय श्रीशालिग्रामजीकू सिंहासन पै श्री...जीके दक्षिण भागमैं अलगसू श्री...जीकी स्नानयात्रा वाली चौकी पै पीतांबर बिछाय (आधौ बिछाय, आधौ उढाय - गादी नहीं लगै) पधराईये, फूलकी माला धरिये। फेरि, खुले दर्शनमैं श्री...जीकी शयनवाली माला बडी करि, नई माला धराईये। श्री...जीकू तिलक करि, अक्षत लगाय गादी पर दोनों तरफ एक-एक बीडा (चौंच कंकूमैं डुबोयके) पधराईये। <u>पीठक पै पीतांबर उढाय</u> अरगजासू श्री...जीकू खिलाईये।

पादुकाजीके सिवाय अन्य सब स्वरूपनकू तिलक-अक्षत लगाय दंडवत् करि झारीजी बडी करिये। दोनों झारीजी भरिके पधराय दर्शन बंद करिये। पूरे निजमंदिरमैं मंदिरवस्त्र करि श्री...जीकू नीची सांगामाची पै पधराय सन्मुखमें **शीतल जलकौ डबरा** पधरावनौ। महाभोगकी तैयारी करनी: ४ बीडा सांगामाचीके बगलमैं पधराने, श्री...जीके बाईं तरफ (शैय्या मंदिर बाजू) पंजीरी, तरमेवा, दूधघर, अनसखडी - या क्रमसू साजने। दाईं तरफ पाँचौं भात, दाल, कठोळ, टोकरी तथा पूरी, भुजैना आदि - या क्रमसू सखडी साजनी। सांगामाचीके सन्मुख एक छोटी चौकी पै सखडीकौ थाल पधरावनौ। धूप-दीप करि, थाल सानिके (धोवादालसू), **सब भोगमैं तुलसीजी** पधराय शंखोदक करिये। शीतलजलके डबरामैं ही आचमन करवाय (जलसू शीतलजलमैं तैरती कटोरीकू डुबाय देनी - हमेशा शीतलजलके आचमन ऐसे ही होवैं सो जानोगे) डबरा सराइये। **भोगकी सब सामग्रीमैं तुलासीजी पधराय शंखोदक करि** महाभोगकी घडी दिखाईये।

❖**छट्ठी पूजन**: प्रति वर्ष छट्ठीके पट्टा पै **बहु-बेटी पंचम घरकी परंपरा अनुसार चित्र माँडैं**, महाभोग आए पहले ये पट्टा डोलतिबारीमैं पधारै। छट्ठीके पट्टाकी एक तरफ तलवार तथा दूसरी तरफ दही बिलोवेकी बिलौनी पधरानी। **छट्ठी पूजनको क्रम**: महाभोग धरि डोलतिबारीमैं आयके छट्ठी पूजन करिये। सर्वप्रथम हाथमैं जल-अक्षत लै - ***ॐ विष्णु: विष्णु: विष्णु: श्रीमद् भगवत् पुरुषोत्तमस्य श्रीगोपीजनवल्लभ प्रीत्यर्थं षष्ठी पूजनं अहं करिष्ये*** - यह संकल्प छोडिये। श्री...जीकी प्रसादी माला तथा कलाई डोरा मोमसू पट्टा पै धराय देने। तलवार तथा बिलौनी पर भी कलाई डोरा बाँध देने। अब, रुईकौ फूआ घीकी कटोरीमैं डुबाय वासू छट्ठीके पट्टा पै एक-के बगलमैं एक सात धारा करिये। फेरि, प्रसादी अनसखडीकौ दोना सन्मुखमैं पधराय धूप-दीप करिये। आचमनके भावसू थोडो जल पधराय डाँडेकी आरती करिये।

❖**पलानाकी पूर्व-तैयारी**: छट्ठी पूजन करि तिबारीमें सूखी हल्दीसू चौक माँडि तापै आसन बिछाय पलना पधराय नंदोत्सवकी पिछवाई चढाय देनी। पलनाके गादी पै लाल साज, पीठिका पै ओढनी नहीं आवै। पलना बाँधि, **झुलायके अच्छी तरहसू निरीक्षण करि लेनौ**।

कीर्तन: पूरे दिन **जन्माष्टमीकी बधाई**। मंगलासे ही झाँझ-पखावज बजैं। आज उत्थापनसू शयन आरती तक कीर्तन नहीं होवैं। शयन आरती पीछै महात्म्यके ४ कीर्तन होवैं, ता पाछै बधाई बुलें।

भादौं वद ९: **पलना - नंदोत्सव**। संभव होय तौ **तोरण** बदलने (आसोपालव) ।

सामग्री: पलनामैं खिचडाकौ १ थाल (महाभोगकी सामग्री राखि होय तामेंसू २-२ नगकौ थाल) तामैं **माखन-मिश्रीकी कटोरी** भी आवैं। तथा **राजभोग**की अनसखडी: खिचडाकौ १ थाल, मुरब्बाकी कटोरी, पाटिया, बिलसारु, तरमेवा। सखडीमैं बडे उत्सवकौ क्रम तथा थोडे-थोडे **चारौं भात**।

सामग्री-क्रममैं बदलाव: ❖नित्य राजभोगमैं बिलसारु बन्द, मात्र उत्सवन् पै आवै।

सेवाक्रम: प्रात:काल ७:१५ बजे महाभोगके *जयमहाराज* कराय निजमंदिरमैं प्रवेश करि आचमन-मुखवस्त्र कराइये। बीडी अरोगाय, फूलकी माला धरि **सोनाके छोटे झुनझुना** श्री...जीके दक्षिण श्रीहस्तमैं मौमसू धराय देने। **श्री..जीकू पलनामैं पधरायवेसू पहले इतनी तैयारी करि लेनी**: महाभोगकी झारीजी सराय, भरिकै दोनों पलनामैं पधरानी। बडी झारीजीके पीछे ढकनासू ढाँकि सामग्रीकौ थाल पधरानौ। दूसरी तरफ, छोटी झारीजीके पीछे ढँकनासू ढाँक्यौ भयौ एक थालमैं जामैं बीडाकौ बंटा (४ बीडा, बरासकी कटोरी), चोवा, बरास तथा अरगजाकी कटोरी। पलनाके सन्मुख चौकी पै बडे चाँदीके थालमैं खिलौना, झुनझुना, फिरकनी आदि पधराय देने। कोयल, चकडोल, नट आदि भी माँडि देने। पलनाके दोनों तरफ खंड पै पधरायवेवाली ४ थाली तथा सिंहासनके दोनों तरफ पधरायवेकी दोनों खिलौनाकी तपकडी भी साज देनी। फेरि, शंख-टकोरा बाजत श्री...जीकू पलनामैं पधराईये। पलनामैं लालनकू श्री...जीकी गादी पर दक्षिण तरफ पधराईये (लालनके गादीजीके श्रृंगार नहीं पधारैं)। श्रीशालिग्रामजीकौ बंटा गादीजीके बगलमैं अलगसू पधरावनौ। मालाजी सभीकू न्यारी-न्यारी धराई जाय। अब, **एक केसरी साटीनकौ वस्त्र पीठिका पै पीताम्बरवत् धराय**, थालीकी आरती *डोरा-भाँत काँगरा* की करि उपस्थित सब स्वरूप (बालक, बहु-बेटी) श्री...जी सन्मुख खेलके थालमैं १-१ रुपिया पधराय न्यारी-न्यारी भेट करैं (कोई स्वरूप बादमैं पधारैं तो खुले दर्शनमैं पलना झुलायवेसू पहले दंडवत् करि, थालमैं भेट पधराय कर ही पलना झुलावे बिराजैं), आज श्रीफलके उपर पधरायकै भेट नहीं होवै। ता पाछै दर्शन खोलि पलना झुलाईये, खिलाइये।

पलनाके दर्शन: पाल हवेलीमैं स्थाई कीर्तनिया न होयवेसुं प्रात: ७:३० सू ९:३० तक पलनाके दर्शनकौ समय निश्चित कियो है, नियमसू आज कुल २५ कीर्तन होवें (८ बधाई, १६ पलना, १ आशीष)। नंद-महोत्सव अंदाजित ८:१५ बजे होवै। **नंदोत्सव पीछै महाभोगकौ सखडी महाप्रसाद तथा जौ बडी होय जाय (बिगड जाय) ऐसी अनसखडी उपस्थित वैष्णवन्कू लिवाय**

देनौ (वल्लभकुल तथा भीतरके सेवकन्के लिए पहले निकाल), अनसखडी अभी कोईकू नहीं बँटै।

सेवाक्रम(मंगलासू शयन): समय भये अथवा कीर्तनकौ क्रम समाप्त होयवे पै, **खुले दर्शनमैं न्यौछावर, राई-लोन** करि टेरा लै माला सहित श्री...जीकू सिंहासन पै पधरावने। तुरंत **शंखनादके भावसू ग्वाल बुलवाय** (शंखनाद नहीं होवें), मंदिरवस्त्र करनौ (सोहनी नहीं)। श्री...जीके मालाजी तथा सब स्वरूपन्के झारीजी आदि बडे करि झारीजी भरि पधरावने, पादुकाजीकी सेवा करि नित्यवत् मंगलभोग धरने। मंगलभोगसू राजभोग धरवे तककी सेवा नित्यवत् होय। **राजभोगके दर्शनमैं अधिक खिलौना** माँढि थालीकी आरती करि अनवसर करने। साँझकू शंखनाद तथा सेवा नित्यवत्।

दर्शनकी नौंध: यदि दर्शनके लिये वैष्णव होवैं तौ ही मंगला (१०:१५-१०:३०) तथा राजभोग (१२:००-१२:१५) एवं शयन (७:०० सू ७:१५) खोलने, अन्यथा नहीं।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖राजभोगके दर्शनमैं सुजनी पै चाँदी, लकडी, माटीके (हाथी, गैया, मोर आदि) अधिक खिलौना मँढैं। सुजनी पै मध्यमैं (नित्यकी चौकीके आगे) टर-टर, झुनझुना आदि खिलौनान् कौ एक बडौ थाल भी आवै, राधाष्टमीके एक दिन पहले ताँई ❖जन्माष्टमीसू माटीके कुंजा-करुआ बंद ❖शयनके दर्शनमैं कुंजा बंद, दोनों झारीजी शुरु।

कीर्तन: **आजसू भादौं वद ३०** तक **बाललीला** के कीर्तन होवैं (पलनाके अलावा)।

भादौं वद १०: **दूसरे पलना।**

श्रृंगार: परचारगीके - **भारी इकहरा** (जोडके स्थान पै *घेरा*)। ओढनी: जन्माष्टमीकी।

सामग्री: **पलना**मैं मिठाई (गुलाब कतली) तथा अनसखडीमैं बेसनके फीके खिलौना (फिरकनी तथा झुन-झुना)। **राजभोग**की अनसखडीमैं: खिचडाकौ थाल (सब सामग्री मिलायकै एक थालमैं पधराई होय ताकू खिचडाकौ थाल कह्यौ जाय), मुरब्बाकी कटोरी। सखडीमैं: रोटीन्के स्थान पै पूडी, बाकी नित्यवत्। विशेष: आज राजभोग सरे पीछै जन्माष्टमीकी अनसखडीकी २ टोकरी (महाभोगकी तथा खिचडाकी १-१) गादीजीकू भोग आए बाद सब प्रसाद बाहर निकलै।

सेवाक्रम: मंगलाके दर्शन बंद होते ही तिबारीमैं ९ वत् पलनाकी सब तैयारी करि लेनी, आज पीठक पै पीताम्बर नहीं तथा पलना भोग भिन्न रहै, एक झारीजी आवैं। श्रृंगार भए पीछे आरसी

दिखाय, तुलसी समर्पण करि, दूधको डबरा अथवा अनसखडी भोग धरि झारीजी भरि सीधे पलनामैं पधरानी (नौंध: यदि वल्लभ बालकन्की आज्ञासू डबराभोग अधिक धरने पडैं तो झारीजी श्री...जीके पास ही रहैं, आज्ञा होय तब भोग सराय झारीजी भरि सीधे पलनामैं पधारैं)। पलनाकी सब तैयारीकौ निरीक्षण करि निजमंदरिमैं जाय आचमन करवाय श्री...जी, लालन तथा श्रीशालिग्रामजीकू ९ वत् पलनामैं पधराय दर्शन खोलिये, **आज पलनाके दर्शनमैं मालाजी नहीं धरैं**। चार कीर्तन भए न्यौछावर करि टेरा दीजिये। श्री...जीकू सिंहासन पै पधराय राजभोग धरिये। ता पीछै शयन तक नित्यक्रम।

जानकारीके लिए: आजके दिन काका श्रीवल्लभजी (वि.सं. १७२९) ने प्रथम बार पंचमनिधि श्रीगोकुलचन्द्रमाजीके जन्माष्टमीके श्रृंगार किये यासू आपश्रीके मनोरथ स्वरूप आजकौ पलना प्रारंभ कियौ गयौ हतौ, या प्रसंगकौ संवत् ज्ञात नहीं है। या पहले मात्र नवमीके दिन ही श्री...जी पलना झूलते। कामवनमैं आजके दिन आज्ञासू दर्शन करायवेकी परंपरा है।

भादौं वद ११: **अजा एकादशी**।

श्रृंगार: पिछौरा कसूंबी। आभरण हरे। ओढनी: खुलती। श्रृंगार कुंडलके।

सामग्री: राजभोगमैं एकादशीकौ सीधा तथा तरमेवा।

जानकारीके लिए: कामवनमैं वि.सं. २०१५के लगभगसू आजके दिन नि.ली.पं.पी.गो. श्रीगोविन्दलालजी महाराजके मनोरथ स्वरूप पलनाकौ क्रम शुरु भयौ, यह क्रम सूरतमैं नहीं है।

भादौं वद १२: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा इच्छा अनुसार।

भादौं वद १३: **श्रीविठ्ठलेशजीकौ उत्सव** (वि.सं.)।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। कुलह-पिछौरा केसरी। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं: बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी,तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु। सखडीमैं: पाटिया, रोटी।

भादौं वद १४: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा इच्छा अनुसार।

भादौं वद ३०: **श्रृंगार**: कुंडलके। **सामग्री**: राजभोगमैं तरमेवा।

भादौं सुद १ या २: पहले दिन वार सुंदर होय (रवि या मंगल न होय) ता दिन **अभ्यंग**। श्रृंगार: कुंडलके,

ओढनी: अभ्यंगकी। पहले दिन वार सुंदर नहीं होय तौ दूसरे दिन अभ्यंग करनौ।

कीर्तन: आजसू राधाष्टमीकी *सूकी* (बिना झाँझकी) बधाई बैठै।

कार्यालयके लिये: राधाष्टमी, दान एकादशी तथा वामन द्वादशीके दर्शनकौ समय लिखवाय देनौ।

भादौं सुद २: नित्यक्रम। **सामग्री**: राजभोगमैं मूंगकी दालकौ वारा।

भादौं सुद ३: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा इच्छा अनुसार।

भादौं सुद ४: **गणेश चौथ**।

श्रृंगार: फैंटा-धोती श्याम। ओढनी: खुलती।

सामग्री: राजभोगमैं गुडके चूरमा (१०-१२ नग), मुरब्बाकी कटोरी।

भादौं सुद ५: नित्यक्रम, पाग-पिछौरा कसूंबी (आजसू राधाष्टमी ताँईं कत्थई, श्याम आदि गहरे रंगके वस्त्र नहीं धरने)।

कीर्तन: आजसू राधाष्टमीकी बधाई झाँझसू शुरु।

भादौं सुद ६: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा इच्छा अनुसार।

भादौं सुद ७: **श्रृंगार**: पाग-पिछौरा कसूंबी, आभरण पिरोजाके।

भादौं सुद ८: **राधाष्टमी।** थापा-तोरण (आसोपालव, गलगोटा)

श्रृंगार: **अभ्यंग**। चाकदार वागा तथा कुलह जन्माष्टमीके, केसरी। **श्रृंगार दुहैरा** - जन्माष्टमी वत्। आज श्रीकंठमैं हाँसुली अवश्य धरैं। ओढनी: जन्माष्टमीकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं: बूँदी-सकलपारा, **पंजीरी** (२० नंग), सेव तथा नागरी के लड्डू (बिना जलके मगदकू नागरी कहैं), मुरब्बाकी कटोरी, दो प्रकारके केसरी बिलसारु, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, गोरस, ४-४ प्रकारके कच्चे तथा पक्के संधाणा। सखडी: तीनकूडा, धोवादाल, **पाँच भात**, पाटिया, पापड, कचरिया, पूडी, छाछवडा,चार प्रकारके भुजैना, चार प्रकारकी टोकरी, वडी भी आवैं (सब सामग्रीकी मात्रा जन्माष्टमीसू आधी)।

सेवाक्रम: शंखनाद बेगे (जल्दी) प्रात: ४ बजे करने, मंगला आरती भीतर होवै। श्रृंगार भए पीछे

तिलक तारेकी छाँवमैं (सुबह ६:३० बजे तक) होय जाने चाहिएँ ऐसौ नियम है। श्रृंगार भये पीछै तुरंत (आरसी दिखाये या तुलसी समर्पण किये बिना) फूलकी मालाजी धराय दर्शन खोलिये। छोटी-बडी सब आरसी (बडी आरसीयाँ खुलके दोनों तरफ पधराय देनी) देखें। शंख-टकोरा बजत श्री...जीकू तिलक करि अक्षत लगाईये, २ बीडा कुंकुममें डुबाय गादीजी पै दोनों तरफ पधराईये। अन्य सब स्वरूपन्कू तिलक-अक्षत करिये, पादुकाजी भी। २ श्रीफल पधराय भेट करि मुठिया वारि चूनकी आरती थालीकी एवं न्यौछावर करिये। झारीजी बडी कर, दोनों झारीजी भरि पधराय टेरा लीजिये। मालाजी बडी करि, ग्वाल बुलवाय, तुलसी समर्पण करि राजभोग धरिये। आज राजभोगके दर्शन ८ सू ८:४५ होवैं। शामकी सेवा नित्यवत्।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖राजभोग दर्शनमैं सुजनी पै अधिक खिलौना आजसू नहीं आवैं ❖शयनमैं जोडके नूपुर आज ताँई आवैं ❖शयन पीछै गादी-तकीयान् पै आधी सफेदी चढै।

जानकारीके लिये: कामवन तथा श्रीगोविन्दजीकी हवेलीमैं वर्ष भरमैं मात्र आजके श्रीस्वामिनीजीके पेटीजीकी सेवा होवै, ये क्रम पाल हवेलीमैं नहीं है।

भादौं सुद ९: **श्रृंगार**: परचारगीके। ओढनी: चित्रकी। शेष नित्यक्रम।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖नित्यमैं चरण़चौकी वस्त्र तथा कंदरावस्त्र **सफेद सूतराउ** शुरु।

कीर्तन: आजसू २० दिन **दानके कीर्तन** गवैं।

भादौं सुद १०: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा इच्छा अनुसार।

भादौं सुद ११: **दान एकादशी** (परिवर्तिनी एकादशी)।

श्रृंगार: काछनी तथा पीतांबर (पटका) गुलैनार (गहरे केसरी), सूथन जन्माष्टमीकी जोडकौ (केसरी जामदानी या डोरीया), कंठवस्त्र श्याम। मुकुट वृन्दावनी (चमकीली जरीकौ), मुकुट पै छोटे गोकर्ण धरैं। अन्य स्वरूपन् के वस्त्र केसरी जामदानीके, जन्माष्टमीके - पादुकाजीके वस्त्र कसूंबी। **श्रृंगार भारी इकहरा**। शयनमैं कुलह-पिछौरा कसूंबी। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं: गोरस (१ लीटर दूधकौ। गोरसमें केसर, सूकेमेवा, बूरा, बरासादि, डलें), मोहनथाल (कामवनमैं *याके स्थान पै गिजलीकौ मनोहर* लिख्यौ है), मुरब्बाकी कटोरी, पेडा, एकादशीकी सब

सामग्री, तरमेवा। सखडीमैं: पूरी, दहीवडा (कामवनमैं दहरवडी लिखी है)। **उत्थापन**में मिसरीकौ पना (शीतल जल) तथा २ लीटर दूध कौ गोरस - २ प्रकारकौ (मीठेमैं इलायची, केसरवालौ तथा नमकीनमैं जीरावालौ)।

सेवाक्रम: उत्सवकी आरती राजभोगमैं, संध्या आरतीके दर्शनमैं **वेणुजी धरैं** (आरती डांडेकी उतरै)। आवश्यक जानकारी: श्रीवल्लभजी महाराज (वि.सं.१८६१) कू श्रीनाथजीने गोकुलचन्द्रमाजीके स्वरूपसू दर्शन दिए तबसू पंचम गृहमैं श्रीनाथजीवत् सीधे वेणुजी धरैं सो जानोगे।

दान एकादशी तथा वामन द्वादशी भेली/एक होवैं तौ ...

श्रृंगार: वस्त्र/श्रृंगार दान एकादशीके तथा जनेउ धरैं। दूसरे दिन किरीट मुकुट धरैं था द्वादशीके वस्त्र धरैं।

सामग्री: एकदशी तथा द्वादशीकी सब सामग्री राजभोगमैं अरोगैं। घडी नित्यवत् ही रहै।

सेवाक्रम: प्रात: श्रृंगार भये पीछै वामनजीके पंचामृतकौ क्रम, साँझकू संध्या-आर्तिमैं वेणुजी धरैं।

भादौं सुद १२: **वामन द्वादशी**। तोरण (आसोपालव)

श्रृंगार: **अभ्यंग**। धोती-उपरणा केसरी (धोती केसरी, लाल किनारीकी सूतराउ, उपरणा उत्तरीय भाँत धरैं) अन्य सब स्वरूपन्के वस्त्र केसरी, जरीकी किनारीवाले। श्रृंगार हल्के - चौंसरके, वार्षमैं मात्र आज जनेउ/यज्ञोपवीत धरैं (जनेउके भावसू चौसरकी बिना पदकवाली एक माला श्री...जीके वाम/बाएँ स्कन्धसू दक्षण/दाँई जाँघ तक लटकायकै धरनी)। किरीट मुकुट जडाउ, आभरण माणिकके। कुंडल, लड धरैं, शीषफूल तथा सग्गी नहीं। शयनमैं कुलह-पिछौरा केसरी। ओढनी: जन्माष्टमी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं: बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी, १ रायता, तरमेवा, बिलसारु, नींबू-आदापाचरी। सखडीमैं: तीनकूडा, धोवादाल, पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, भुजैना। दहीभात विशेष आवै। पंचामृतके बाद शीतलजलकौ डबरा आवै।

सेवाक्रम: श्रृंगार करि आरसी दिखाय, तुलसी समर्पण किए पीछै, दूध अथवा अनसखडीकौ डबरा

सन्मुख धरि पंचामृतकी तैयारी करिये। तैयारी भए पीछे फूल माला धराय दर्शन खोलिय, टकोरा नहीं। श्री...जीकू पाससू आरसी दिखाय **शंख-टकोरा-घंटा** शुरू होवैं। शालिग्रामजीकू थालमैं पधराय क्रमानुसार पंचामृत करावाय, शालिग्रामजीकू अंगवस्त्र करि सिंहासन पै आधौ पीताम्बर बिछाय, आधौ उढायकै पधराईये। फेरि, शालिग्रामजीकू मालाजी धराय प्रथम श्री...जीकू तिलक करि कंकूमैं कौने डुबाय २ बीडा गादीजी पै दोनों तरफ पधराईये। शालिग्रामजी तथा लालनकू तिलक करिए, पादुकाजीकू नहीं। दोनों झारीजी भरि पधराय टेरा दीजिए। शालिग्रामजी सिवाय अन्य स्वरूपन्की मालाजी बडी करि, शीतलजलकौ डबरा सन्मुखमैं पधराय राजभोग साजिये (राजभोगकी घडी दिखाते समय डबरामैं ही आचमन करवाय सराय लेनौ)। राजभोग सरे पै श्रीशालिग्रामजीकू यथास्थान पधराय देने।

कीर्तन: आज पूरे दिन झाँझ बजै। पंचामृतमैं वामन जयन्तीके, बाकी समय दानके।

भादौं सुद १३: श्रीनवनीतप्रियाजी (श्रीगोविन्दजी हवेली)कौ पाटोत्सव।

श्रृंगार: इकहरा - हल्के, कुलह-पिछौरा केसरी।

सामग्री: राजभोगमैं एक इच्छानुसार सामग्री, मुरब्बाकी कटोरी।

विशेष: यदि श्राद्धपक्षमैं कोई तिथि टूटी होय तौ आज राजभोगसू साँझीकी आरती शुरू।

विशेष नोंध: वि.सं. २०४९ मैं जीर्णोद्धार पीछे श्री...जी पुन: पाट बिराजे। पंचम पीठाधीश्वर नि.ली.गो. श्री१०८श्रीगिरधरलालजी महाराज (कामवन)एवं उनके अनुज प्रात:स्मरणीय गो. श्रीद्वरिकेशलालजी महाराज (कामवन-सूरत)के करकमलन् सू।

भादौं सुद १४: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा इच्छा अनुसार।

सेवाक्रम: आजसू राजभोगमैं साँझीकी आरती शुरु, आज १ चँदाकी थाली उतरै।

भादौं सुद १५: **श्रृंगार**: कुंडलके। **सामग्री**: राजभोगमैं तरमेवा। आज ५ चँदाकी थाली उतरै।

आश्विन (आसोज/क्वार)

❖❖❖

आश्विन वद १ या २: वार सुंदर होय (रवि या मंगल वार न होय) तौ **अभ्यंग**। वार सुंदर नहीं होय तौ दूसरे दिन अभ्यंग करनौ। जा दिन अभ्यंग करैं वा दिन **श्रृंगार**: कुंडलके। ओढनी: अभ्यंगकी।

सेवाक्रम: १के दिन शंखकी तथा २के दिन चक्रकी थाली उतरै।

आश्विन वद ३: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा इच्छा अनुसार। गदाकी थाली उतरै।

आश्विन वद ४: नित्यक्रम। पद्मकी थाली उतरै। **सामग्री**: राजभोगमैं तुवर दालकौ वारा।

आश्विन वद ५: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा इच्छा अनुसार। पंच-मुद्राकी थाली उतरै।

आश्विन वद ६: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा इच्छा अनुसार। छ: मुद्राकी थाली उतरै।

आश्विन वद ७: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा इच्छा अनुसार। सीताजीके आसनकी थाली उतरै।

आश्विन वद ८: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा इच्छा अनुसार। अष्टदलकी थाली उतरै।

आश्विन वद ९ या १०: जा दिन वार सुंदर होय (रवि या मंगल वार न होय) ता दिन **अभ्यंग**। जा दिन अभ्यंग होवै वा दिन **श्रृंगार**: कुंडलके। ओढनी: अभ्यंगकी।

सेवाक्रम: ९के दिननाईकी आरसी तथा १०के दिन गिल्ली-डंडा की थाली उतरै।

आश्विन वद ११: **इन्दिरा एकादशी**।

श्रृंगार: कुंडलके। ओढनी: इच्छानुसार।

सामग्री: **राजभोग**मैं एकादशीकौ सीधा तथा तरमेवा।

आश्विन वद १२: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा इच्छा अनुसार। चकवा-चकवी की थाली उतरै।

आश्विन वद १३: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा इच्छा अनुसार। ९ चंदाकी थाली उतरै।

आश्विन वद १४: **श्रीगोपेन्द्रजीको उत्सव**। थापा-तोरण (आसोपालव)।

(**जानकारीके लिये**: आपश्रीके पादुकाजी श्रीगोविन्दजीकी हवेलीमैं बिराजैं यासू वहाँ श्रीपादुकाजीकू तिलक होवैं।)

श्रृंगार: **अभ्यंग**। काछनी, पीतांबर (पटका) गुलैनार, सूथन खुलती, कंठवस्त्र श्याम। अन्य स्वरूपन्के वस्त्र गुलैनार। मुकुट तथा आभरण हीराके। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं: बूंदी, सकलपारे, **चंद्रकला**, मुरब्बाकी कटोरी, १ रायता, तरमेवा, बिलसारु, नींबू-आदापाचरी। सखडीमैं: तीनकूडा, धोवादाल, पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, भुजैना।

सेवाक्रम: आज संध्या-आरतीमैं साँझीकी छेली कोट की आरती उतरै।

आश्विन वद ३०: **श्रृंगार**: दुमाला/ग्वालपगा-पिछौरा, रंग इच्छा होय सो। **सेवाक्रममैं बदलाव**: ❖श्रृंगारके समय पिछौरा आज तक ही धरैं। **सामग्री**: राजभोगमैं तरमेवा।

❖ नवविलास/नवरात्री ❖

आश्विन सुद १ सू ९ कू *नवरात्री* कह्यौ जाय: इन ९ दिनन्मैं नित्य **राजभोगमैं नियम अनुसार सामग्री, मुरब्बाकी कटोरी आवैं** (नवरात्रीसू दशहरा तककी सामग्रीकौ नेग १० किलो घी कौ है)। राजभोगके दर्शनमैं तिथि अनुसार **विलासके कीर्तन** होवैं। नवरात्रीन्मैं वस्त्रके रंगकौ कोई नियम नहीं है परंतु अ.सौ. श्रीकृष्णा बहुजीने नवरात्रीन्की भावनाकू ध्यानमैं रखकै वस्त्रके रंग वि.सं. २०७०के आसपाससू निश्चित कर दिये हैं, प्राचीन प्रणालिकान्मैं वस्त्रके रंगकौ क्रम प्राप्त नहीं होवै है सो जानोगे।

तिथिन्मैं वध-घट होय तो: विलासकी कोई तिथि टूटी होय तौ वा विलासकी सामग्री तथा कीर्तनकौ क्रम अगले विलासके साथ ही होवै। यदि कोई तिथि बढ जावै तो वा बढी भई तिथिके दिन राजभोगमैं इच्छा होय सो सामग्री धरनी, एक ही विलासकौ कीर्तन दोय दिन गवै।

आश्विन सुद १: **श्रृंगार**: **अभ्यंग**। चाकदार वागा, सूथन छापाके लाल (नौंध: आज चाकदार वागा आवै सो ध्यान राखनौ, नवरात्रीकी बाकी सब तिथिन् पै खुले बंद धरैं)। कुलह जडाऊ, आभरण (मुखारविन्दके आभरण) तथा जोड (श्रीअंगके आभरण) इच्छानुसार। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: **राजभोग**मैं अनसखडी: खुली बूंदी। सखडीमैं: तीनकूडा, धोवादाल, पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, भुजैना।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖आजसू सब समय शैय्याजी पै दुहैरा चादर ❖आजसू शयन-मंगलामैं पिछौरा (नित्यवाले, छापेके नहीं) वाम स्कंधसू आवै।

विशेष नौंध: आज राजभोग धरिकै जवारा बुवैं (संभव होवै तो वल्लभकुलके श्रीहस्तसू)।

आश्विन सुद २: **श्रृंगार**: आजसू खुले-बंदके वागा शुरू। खुले बंद तथा अन्य स्वरूपन् के वस्त्र पीले।

नौंध: जब भी खुले-बंदके वागा धरैं तब सूथन और पाग एक रंगके तथा खुले-बंदकौ वागा उनसू खुलतौ (उलटे रंगकौ) आवै, पटका नहीं धरैं। आभरण तथा पीठिकाकी ओढनी तीसरे रंगकी (सबसू खुलती) धरने। अन्य स्वरूपन्के वस्त्र खुले बंदके रंगके लेने। नौंध: खुले बंध धरैं तब कटि पै मौमकी बत्ती नहीं आवै तथा श्रृंगार हल्के चौंसरके होवैं।

सामग्री: सकलपारा। आजसू नवमी ताँईं राजभोगमैं एक दिन कढी और एक दिन तीनकूडा आवै। जा दिन तीनकूडा आवै ता दिन धोवादाल तथा कोई एक रायता भी आवै, कौर धोवादालसू।

आश्विन सुद ३: **श्रृंगार**: नित्यक्रम। खुले बंद तथा अन्य स्वरूपन् के वस्त्र हरे। **सामग्री**: सेवके लडुवा।

विशेष: आज शयन पीछै काँचकौ बंगला चढै।

कार्यालयके लिये: दशहरासू शरद पूर्णिमाके दर्शनकौ समय लिखवाय देनौ।

आश्विन सुद ४: **श्रृंगार**: कुंडलके। खुले बंद तथा अन्य स्वरूपन् के वस्त्र लाल, पीले या केसरी। **मात्र आज सब वस्त्र एक रंगके रहैं**।

सामग्री: मोहनथाल, सखडीमैं फीके सेव। **अनवसरके बंटामैं** दालकी कचौरी (फीकी)।

सेवाक्रम: आज मंगलासू ही श्री...जी काँचके बंगलामैं बिराजैं। यह बंगला सप्तमीके दिन मंगला

पीछै बडौ होवै, तब तक पूरी सेवा यामैं ही होवै।

जानकारीके लिये: यह बंगलाकौ क्रम श्रीयमुना बहुजीके मनोरथ स्वरूप प्रारंभ भयौ हतौ, कामवनमैं थोडे समय पहले तक इन दिनन् मैं हाथीदाँतकौ बंगला आतौ।

आश्विन सुद ५: **श्रृंगार**: खुले बंद तथा अन्य स्वरूपन् के वस्त्र आसमानी । **सामग्री**: मुखविलास।

आश्विन सुद ६: **श्रृंगार**: नित्यक्रम। खुले बंद तथा अन्य स्वरूपन् के वस्त्र श्याम। **सामग्री**: कपूरनारी।

आश्विन सुद ७: **श्रृंगार**: नित्यक्रम। खुले बंद तथा अन्य स्वरूपन् के वस्त्र गुलाबी। **सामग्री**: मदनदीपक।

विशेष: आज मंगला पीछै बंगला बडौ होवै।

आश्विन सुद ८: **श्रृंगार**: **अभ्यंग**। श्रीमस्तक पै टिपारा, श्रीकर्णमैं कुंडल या लोलकबंद। आज सूथनके स्थान पै मल्लकाछ धरैं। खुले बंद तथा अन्य स्वरूपन् के वस्त्र जांबली। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: गूँजा। सखडीमैं खंडरा, खंडराकौ गोरस और खंडराकी कढी आवै।

आश्विन सुद ९: **श्रृंगार**: फैंटा तथा धोती लाल या पीले, खुले बंद तथा अन्य स्वरूपन्के वस्त्र खुलते।

सामग्री: केसरी घेवरके २ नग, आज सखडीमैं नियमसू तीनकूडा ही आवै।

विशेष: आज शयन पीछै एक दिनके लिए गादी-तकीयान्की सफेदी उतरै।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖चाँदीकौ कुँजा आज ताँईं आवै। **कार्यालयके लिये**: आज ही दशहराकौ पट्टा भी ढूँढ लेनौ तथा गोबरके पूवान्के लिये **गोबर मँगवाय लेनौ**।

आश्विन सुद १०: **दशहरा।** तोरण (आसो, गल)। आज भीतर-बाहरकी सब दहेरी श्वेत खडियासू मढैं।

श्रृंगार: **अभ्यंग** बडौ। चाकदार वागा सफेद जरीके, पटका लाल, कुलह सफेद मलमलकी। मुखारविन्दके आभरण लाल, श्रीअंगके आभरण हीराके। तिलक-अलकावली दुहैरा, श्रृंगार भारी इकहरा। आज **चरणचौकी वस्त्र तथा कंदरावस्त्र लाल** आवैं। ओढनी: जन्माष्टमीकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं: बूंदी, सकलपारे, मालपुआ, फेनी, दूधके पूआ (जलकी जगह दूधसे बँधैं), मुरब्बाकी कटोरी,तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु। सखडीमैं: धोवादाल, पापड, भुजैना, पाटिया, रोटी। **उत्थापनभोग**मैं खाली तरमेवा आवैं। **संध्याभोग**मैं नित्यकी २ मठडीके

अलावा **माट** (१० बडे, १० छोटे) तथा मुरब्बाकी कटोरी आवैं। **शयनभोग**मैं छूटी बूंदी, मुरब्बाकी कटोरी।

सेवाक्रम (मंगलासू राजभोग): श्री...जीके श्रृंगार होते रहैं तब अथवा राजभोग धरिके तिबारीके मध्यमैं श्वेत खडियासू चौक माँडि (बहुजी-बेटीजी होंय तो वे माँडैं), पट्टा पधराय, तापै गोबरके १० पूवा धरिए (प्रत्येक पूवा पै सिंदूरके ५-५ टपका होवैं)। इतनौ करि राजभोग सराय नित्यवत् अनवसर करवाईये।

सेवाक्रम (उत्थापनसू शयन): उत्थापनभोग तक नित्यवत्।

जवारेकी तैयारी: ❖साँझके शंखनादसू पहले अथवा उत्थापनभोग धरि जवारे काट, स्वच्छ करि लेने ❖**श्री...जीके लिए मोरपंखके जोडवत्** जवारेकौ एक बडौ पूळा धागासू बाँधि, मौमकी बत्ती लगाय तैयार करि लेनौ, **लालनके लिए** ऐसौ ही एक छोटौ पूळा तैयार करनौ ❖**श्रीशालिग्रामजी तथा पादुकाजीके लिए** कुल ५ और पूळा मात्र धागासू बाँधिके धरि राखने ❖**तकिया** पै पधरायवेकू तथा १० **पूवान् पै पधरायवेकू** खुले जवारे भी न्यारे राखि लेने। ये सभी जवारे एक थालीमैं पधराय वाकू गीले कपडासू ढाँकि राखनो।

जवारे धरवेकौ क्रम: **आज भोग तथा संध्या-आरतीके दर्शन अलग-अलग होवैं**। उत्थापन भोग सरायकै फूलमाला धराय (वेत्र अभी नहीं), खंड आदि सन्मुख पधराय भोगके दर्शन खुलैं तब श्रीपादुकाजीकी झारीजी बदलके (आज पादुकाजीकी सेवा शयन दर्शन पीछै होवै), चौपड-खंड तथा कुंजा-पंखा बडै होय जावैं, बगली तकिया रहैं। अब श्री...जी तथा अन्य सब स्वरूपन् कू **या क्रमसू जवारे धराईये**: ❖**शंख-टकोरा-घंटा** शुरु करवाय, श्री...जीकू दंडवत् करि, कंकूकौ तिलक-अक्षत लगाय, कंकूमें कोने डुबोय २ बीडा गादी पै धरिए ❖**मोरपंखके जोड पै ही जवारे धरिए** ❖अन्य सब स्वरूपन्कू क्रमसू तिलक करि जवारे धराय थोडे छूटे जवारे श्री...जीके दोनों तरफ गादी पै धरि देने ❖१० पूवान् पै उपरसू थोडे-थोडे जवारे पधराईये (इनकू तिलक नहीं) ❖मुठिया वारि **चूनकी आरती थालीकी** करि न्यौछावर करिये ❖झारी-बीडा बडे करि, **दोनों झारीजी** भरिके पधराय टेरा लै संध्या/उत्सव भोग धरिये, भोगकी घडी दुगुनी (२० मिनिट)।

माटके भोग सराय, बडी झारीजी तथा २ बीडा नये पधरायकै श्री...जीकू वेत्र धराय संध्या-आरतीके दर्शन खोलिये, फूलकी माला वही रहै। आज **शयन आरती पीछे श्रृंगार बडे**

होवैं यासू संध्या-आरती पीछै वेत्र गादी पर ही पधराय देनौ। **आज पादुकाजीकी सेवा भी शयन आरती पीछै होवै**।

विशेष: आज शयन पीछै गादी-तकीयान् पै आधी सफेदी तथा *रासकौ साज* चढैं।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖नित्यमैं चाकदार वागा शुरु, शयनसू श्रीअंग पै स्कंधसू खोल शुरु (गरमी होय तौ पिछौरा धरि सकैं) ❖मंगलासू झारीजीके नेवरा कोरे रहैं तथा झारीजीमैं गुलाबजल बन्द ❖शैय्याजी पै एक चादर तथा खोल (दोहड) शुरु (अधिक गरमी होवै तौ उढानी नहीं, चरणके पास पधराय राखनी) ❖संध्या-आरतीमैं कुँजा विजय होवैं पाछैं बंद ❖सिंहासनकी पंखी आज साँझ तक आवैं ❖आज साँझसू श्री...जीकू पंखा नहीं होवैं, ता पाछैं कार्तिक वद ७ तक शैय्याजी पै २-४ पंखी रहैं ❖शयनके दर्शनमैं झारीजी बंद, सीधे शैय्याजी पै पधारैं ❖पादुकाजीकी शामकू सेवा होवै तब सफेद वस्त्रके उपर खोल शुरु, सुबह एक रंगीन वस्त्र रहै।

जानकारीके लिए: जहाँ प्रभु रथयात्रासू तिबारीमैं बिराजैं वहाँ आज शयनभोगसू श्री...जीकी संपूर्ण सेवा निजमंदिरमैं होवै। कामवनमैं आज उत्सवभोग धरिके अन्नकूटकी *भट्टीपूजा* होवै, श्रीगोकुलचन्द्रमाजी हवेली, सूरतमैं यह दौनौं क्रम नहीं हैं।

कार्यालयके लिये: आज शयन पीछै अन्नकूटके माटीके बर्तन तथा छबडा-छबडीकी विगत कार्यालयमैं लिखवाय देनी (छबडा वर्ष भरके या समय ही मँगवाय लेने)।

:साँझकू बेगे शंखनादकौ क्रम:

आसोज सुद ११ सू १५ (शरद पूर्णिमा) तक साँझकू शँखनाद १५-१५ मिनिट जल्दी होते जावैं, शरद पूर्णिमाके दिन साँझके शंखनाद नित्यसू १:१५ घंटा बेगे होय जावैं। यदि कोई एक तिथि बढी होय तौ वा दिन मुकुट तथा वस्त्र आभरण इच्छानुसार, बेगे शंखनादकौ क्रम ५की जगह ६ दिन ताईं चलै। यदि कोई एक तिथि घटै तौ बेगे शंखनादकौ क्रम ४ दिना ही चलै। (**नोंध**: जा दिना साँझके समय पूर्णिमा होय (निशीथ) ता दिन शरद माननी। यदि १५के दिन साँझकू पडवा लगी होय तो १४मैं शरद माननी। शंका होय तब निर्णय पू. वल्लभकुल बालकन् सू लेनो)

आश्विन सुद ११: **पाशांकुशा एकादशी**।

श्रृंगार: मुकुट तथा सब आभरण मोतीके। काछनी-कंठवस्त्र श्याम, सूथन-पीताम्बर पीले।

ओढनी: चित्रकी।

सामग्री: राजभोगमैं एकादशीकौ सीधा तथा तरमेवा।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖ठंडी होय तौ मंगला/शयनमैं खोल शुरु (अन्यथा पिछौरावालौ क्रम चालू राखनौ)

❖आजसू साँझके बेगे शंखनादकौ क्रम प्रारंभ होवै।

कीर्तन: आजसू शरद पूर्णिमा ताईं सब समय *रासके कीर्तन*।

आश्विन सुद १२: **श्रृंगार**: मुकुट तथा सब आभरण पन्नाके। काछनी लाल, कंठवस्त्र श्याम, सूथन-पीताम्बर हरे। **ओढनी**: चित्रकी।

आश्विन सुद १३: **श्रृंगार**: मुकुट तथा सब आभरण पिरोजाके। काछनी पीरी, कंठवस्त्र श्याम, सूथन-पीताम्बर श्याम। **ओढनी**: चित्रकी।

सामग्री: राजभोगमैं तुवर दालकौ वारा (२ नींबूके ४ टूक करि थालमैं)।

आश्विन सुद १४: **श्रृंगार**: मुकुट तथा सब आभरण माणिकके। काछनी हरी, कंठवस्त्र श्याम, सूथन-पीताम्बर लाल तासके। **ओढनी**: चित्रकी।

आश्विन सुद १५: **शरद पूर्णिमा**

श्रृंगार: मुकुट तथा सब आभरण हीराके। काछनी सफेद जरीकी, सूथन दशहराकौ, कंठवस्त्र श्याम, **तनीया केसरी**, पीताम्बर गुलैनार। तिलक-अलकावली दुहैरा, श्रृंगार भारी इकहरा। ओढनी: जन्माष्टमीकी। श्रीपादुकाजीके वस्त्र केसरी। शयनमैं कुलह-पिछौरा केसरी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं घारी (कामवनमैं उपरेटा लिखे हैं, सूरतमें नहीं आवैं), गोरस, तरमेवा, मुरब्बाकी कटोरी। सखडीमैं चेवडा, बाटी, दूधपवा। दोपहरकू **अनवसरके बंटा**मैं नित्यक्रमके आलावा सफेद बासौंदी अधिकमैं आवै।

सेवाक्रम: आज संध्या-आरतीके दर्शनमैं **श्री...जी वेणुजी धरैं**।

कार्यालयके लिये:कार्तिक वद ११ सू कार्तिक सुद १२ तकके दर्शनकौ समय लिखवाय देनौ।

❖❖❖

कार्तिक

❖❖❖

कार्तिक वद १ : **अभ्यंग**। श्रृंगार कुंडलके। चाकदार वागा कसूंबी, सब आभरण पिरोजा या पन्नाके।

ओढनी: अभ्यंगकी।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖आजसू नित्यमैं चाकदार वागा सूतराउ, जरीकी किनारीवाले शुरु।

कीर्तन: गोवर्धनपूजाकी बधाई बैठे - *फीकी* (झाँझ बिना)।

कार्तिक वद २ : वागा जन्माष्टमीके। पाग, आभरण तथा ओढनी खुलते।

कार्तिक वद ३ : वागा रामवनमीके, पाग। आभरण तथा ओढनी खुलते। **सामग्री**: तुवरदालकौ वारा।

कार्तिक वद ४ : वागा छापाके। **सामग्री**: राजभोगमैं तुवर दालकौ वारा।

कार्तिक वद ५ : वागा छापाके। पाग, आभरण तथा ओढनी खुलते।

विशेष: आज अथवा ६, जा दिन वार सुंदर होय ता दिन राजभोग धरकै बालभोगमैं अन्नकूटकी भट्ठीपूजा होवै। भट्ठीपूजामैं अन्नकूटके शिखरकौ *कूर* सिद्ध कियो जाय।

कार्तिक वद ६ : वागा छींटके। पाग, आभरण तथा ओढनी खुलते।

कार्तिक वद ७ : वागा छींटके। दुमाला पीलो, श्रृंगार कुंडलके। आभरण मोतीके। ओढनी: खुलती।

नौंध: यदि ८कौ क्षय होवै तौ आज ८ के श्रृंगार करने।

विशेष: आज शयन पीछै गादी-तकीयान् की सफेदी हट जावै। चाँदीके खिलौना, सिंहासनके पाया आदि स्वच्छ करवाय लेने।

कार्तिक वद ८: **श्रृंगार**: **अभ्यंग**। वागा रथयात्राके (सफेद कारचोबाके), कुलह सफेद। सब आभरण माणिकके। ओढनी: अभ्यंगकी।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖आजसू दीपावली तक शयनमैं चाकदार वागा तथा पीठिकाकी ओढनी रहैं (शयनमैं वस्त्र रहैं तब: चरणचौकी वस्त्र और कंदरावस्त्र, पटका तथा बंद/तनी बडे होय जावैं। स्कन्ध पै मौमकी २ छोटी बत्ती आवैं, हल्की चरणचौकी भी आवै। शयनमैं फूलमालामैं नित्यवत् गाँठ लगाय श्रीमस्तकसू नहीं धरैं, श्रृंगारसू संध्या-आरतीमैं आवै वैसे बत्तन् पै आवै। दूसरे दिन मंगलामैं श्रीमस्तकसू खोल ओढैं) ❖श्रृंगारके समय खासाकौ वागा शुरु ❖मंगलासू शैय्याजीके पासके पंखा बंद ❖शयनमैं सोनेके आभरण शुरु।

कार्तिक वद ९: वागा श्याम कारचोबाके, पाग श्याम। सब आभरण पुखराजके। ओढनी: खुलती।

विशेष: आज शयन पीछै गादीजीकू केसरी वस्त्र धर देने, कार्तिक सुद १३ ताँईं।

कार्तिक वद १०: वागा दशहराके (सफेद जरीके), चीरा सफेद। सब आभरण पन्नाके। **ओढनी**: जरीकी, खुलती। **नौंध**: आजसू १४ ताँईं शयनमैं भी चीरा रहै।

विशेष: आज शयन पीछै साज बदलै। ११ सू दीपावली तक नित्य श्री...जीके वस्त्रके रंगकौ जरीवालौ साज चढै, या कारणसू आजसू ५ दिन नित्य साज बदलैं।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖नित्यमैं लाल रंगके चरणचौकी वस्त्र तथा कन्दरा वस्त्र शुरु ❖अब, नित्यमैं जरीकी चंद्रिका शुरु, इच्छा होय ता दिना मोरपंखकी भी धर सकैं।

❖**विशेष नौंध**:यदि कार्तिक वद ११ सू १४ में कोई तिथि टूटी होय तौ ता दिनके श्रृंगार कार्तिक वद १० के दिन करने।

कार्तिक वद ११: **रमा एकादशी**

श्रृंगार: वागा, चीरा श्याम तासके। सब आभरण मोतीके। ओढनी: पीली तासकी।

सामग्री: राजभोगमैं एकादशीकौ सीधा तथा तरमेवा।

सेवाक्रम: आजसू दीपावली ताँईं शयनके दर्शनमैं दीपमालिका/दीवा/दीवी जुडैं।

जानकारीके लिये: कामवनमैं इन दिनन्मैं शयन दर्शनके समय २ मशाल जुडैं।

कीर्तन: शयनमैं हटडीके, अन्य सब समय गाय खिलायवेके कीर्तन।

कार्तिक वद १२: वागा, चीरा पीले तासके। सब आभरण पिरोजाके। ओढनी: श्याम तासकी।

सेवाक्रम: शयनके दर्शनमैं दीवा/दीवी/दीपमालिका जुडैं।

विशेष: पालकी हवेलीमैं धनतेरसके दिन चौपडा तथा लक्ष्मी पूजन होवै यासू आज शयन पीछै ही चौपडा तथा लक्ष्मीजी वालौ बस्ता बाहर निकाल कै राखि लेनौ। शयन पीछै अन्नकूटकी सब चौकी उतार कै साफ कर लेनी, तिन पै बिछायवेके लिये ६-८ धोती भी मँगवाय लेनी। गौशालामैं गोवर्धन सिद्ध करवेके लिये गोबर संभालके राखवेकी सूचना भी दे देनी।

कार्तिक वद १३: **धनतेरस।** थापा-तोरण (आसोपालव)। आजसू अन्नकूट तक सब दर्शनन् मैं **शहनाई बजै**।

श्रृंगार: वागा हरे तासके, चीरा लाल। श्रीअंगके आभरण माणिकके, मुखारविन्द पै हीराके।

ओढनी: लाल तासकी या अभ्यंगकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं: बूंदी, सकलपारे, **फेनी**, मुरब्बाकी कटोरी,तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु तथा द्राक्षको गोरस। सखडीमैं: धोवादाल, तीनकूडा, पापड, भुजैना, पाटिया, रोटी तथा मीठी थूली (लापसी)। **शयनभोग**: मोतीपाक (आधौ शयनभोगमैं, आधौ शयनके बंटामैं आवै)।

विशेष: आज राजभोग धरकै बालभोगमैं अन्नकूटकी बडी सेवा होवै, बडी सेवा भये पीछै ही राजभोग सराने (यासू राजभोगके दर्शनकौ समय ११:३० लिखवानौ)।

सेवाक्रम: आज उत्थापन तथा संध्या-आरतीके दर्शन भीतर होवैं। संध्या-आरती पीछै श्रृंगार बडे होवैं तब अमुक श्रृंगार रहैं (कटि-मेखला, पदकसू उपरकी सब माला/हार रहैं। चरणारविन्द, श्रीहस्त तथा मुखारविन्दके सभी आभरण भी रहैं। चिबुक, चंद्रिका तथा वेणु-वेत्र बडे हो जावैं)। शयनके दर्शनमैं श्री...जी बंगला या हटडीमैं बिराजैं, तिबारी अथवा चौकमैं (सजावट करवेवाले वैष्णवन्की इच्छानुसार)। शयनके दर्शनमैं दोनो झारीजी पधारैं, दीपमालिका, रोशनी जुडैं। मोरछल होवै - गरमीके कारण पंखा भी कर सकैं (कामवनमैं लिखी नहीं है)। हटडीके ४ कीर्तन होवैं, **शयन आरतीमैं सब खंड जुडैं**।

विशेष: शयन पीछै हटडीकी पूरी सजावट वैष्णवन् सू सरवाय लेनी।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖आजसू आरतीमैं बाती बढैं।

रूप चतुर्दशीके स्नानकी तैयारी: आज शयन पीछै स्नानकी इतनी तैयारी करि लेनी: **चूनके ८ छोटे दीवला** (२-२ बातीवाले), चूनकौ ४ बातीवालौ **एक दीवला तथा ४ मुठिया, माटीकी डली** ७ तथा औंगाकी **दातूनके टूक ७** (दौनौ कौनेन् पै रुई लपेटे भये), एक कटोरा **घिस्यौ भयौ चंदन** (पादुकाजी सहित सब स्वरुपन्के अभ्यंग होय सकैं उतनौ, **गोवर्धन पूजाके लिये भी थोडौ चंदन राखि लेनौ**)।

दशहरावाले गोबरके १० पूडा भी ततैराके पास पधराय देने (जासू सुबह ढूँढने न पडैं)।

कार्तिक वद १४: **रूप चतुर्दशी।** थापा-तोरण (आसोपालव)।

श्रृंगार: **अभ्यंग** (आज दो प्रकारके चंदनसू होवै)। वागा लाल तासके, चीरा सफेद। श्रीअंगके आभरण हीराके, मुखारविन्द पै माणिकके। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं: बूंदी, सकलपारे, मालपुआ, फेनी, मुरब्बाकी कटोरी,तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु। सखडीमैं: धोवादाल, पापड, भुजैना, पाटिया, रोटी।

सेवाक्रम: आज सुबह सेवा जल्दी प्रारंभ होवै, शंखनाद प्रात: ५ बजे। मंगल भोग धरके श्री...जीके **स्नानकी तैयारी** करि लेनी: ❖सब दीवलान्मैं तेल भर लेनौ ❖तिलककी थाली तथा २ बीडा ❖स्नानकी चाँदीकी चौकी जामैं मलमलकौ सफेद वस्त्र ४ घडी करकै ❖उपलान् पै गरम कियौ भयौ स्नानकौ जल तथा स्नानके लिये बडौ परात ❖सादा तथा केसरी चंदनके कटोरान्मैं अत्तर पधराय, घोलि लेनौ ❖औंगाकी दातून तथा माटीकी डली एक थालीमैं पधराय लेने।

स्नानकौ क्रम: मंगला आरती भीतर करिकै निजमंदिरमैं लालनके सिंहासनके आगै मंदिरवस्त्र करि स्नानकौ थाल पधरानौ। वासू थोडी दूरी पै चारौं कोने पै २-२ दीवला पधराय प्रकटाय लेने। परातमैं चंदनकौ साथिया करि ताके उपर स्नानकी चौकी पधरानी। सब दीपक प्रकटते होवैं इतनेमैं श्री...जीकू श्रृंगार चौकी पै पधराय श्रृंगार बडे करि फुलेल समर्पि लेनौ - **स्नानयात्राके धोती-उपरणा** (जनाने नहीं होवैं तो तनीया मै भी स्नान करवाय सकैं), **शयनके आभरण, कर्णफूल तथा नकवेसरके अलावा सब श्रृंगार बडे** कर लेने (तिलक-बाँक भी बडे होवैं)। स्नानके सब दीपक प्रकट जावैं तब दंडवत् करि या **क्रमसू स्नान** करवाईये: ❖घंटा-टकोरा बजत (शंख नहीं) श्री...जीकू स्नानके पाट पै पधराईये ❖तिलक करि कंकूमैं चौंच डुबाय दो बीडा चौकीके दोनों तरफ परातमैं

पधराईये ❖बारी-बारीसू माटीकी ७ डली तथा औंगाकी ७ दातून दोनों हाथमैं लै राई-नौंन वत् ७-७ बार ओसारि, मुठिया वारि चूनकी आरती थालीकी करिये ❖सब चरणस्पर्शवाले (जनाने भी) एक-एक करकै चरणारविन्दमैं थोडौ-थोडौ दोनों प्रकारकौ चंदन समर्पिकै प्रसादी रूपसू नैक-नैक वापिस लेते जावैं, ये प्रसादी चंदन वल्लभकुलकू सौंप देनौ - ध्यान रहै कि **श्री...जीकू श्रीअंग पै अभ्यंग नहीं होवै** ❖सुहाते जलसू श्री...जीके स्नान करावने (नौंध: स्नान कराते समय चारौं तरफ रखे जलते दीवान् पै जलके छींटा मारने)। स्नानकौ क्रम करि, घंटा-टकोरा रखाय, सब आभरण-नेत्र आदि बडे करि, सावधानी-पूर्वक श्री...जीकू श्रृंगार चौकी पै पधराय अच्छी तरह अंगवस्त्र करिये। श्री...जीके श्रृंगार होवैं इतनेमैं अन्य सब स्वरूपन्कू अच्छी तरह चंदनसू अभ्यंग तथा स्नान करवाईये, पादुकाजी तथा गादीजीकू भी। श्रृंगार भये पै आरसी दिखाय, तुलसी-समर्पण करि राजभोग धरने। राजभोगके दर्शन सुबह ८:३०-९:००, क्रम नित्यवत्। साँझकू नित्यक्रम, **शयनमैं दीवी जुडैं**।

विशेष: आज **शयन पीछै चाँदीकौ बंगला** चढै, अन्नकूटके दिन शयन तक रहै। अन्नकूटके लिये घासकी वाड बनवाय लेनी। शयन पीछै **सोनेके झारीजी निकाल लेने**, ये भाई दूज तक आवैं।

सेवाक्रममैं बदलाव:शीतकालके अत्तर (केसर, अंबर, कस्तुरी, हिना) शुरु।

❖ **रूप-चौदस तथा दीपावली एक साथ होंवैं तौ...**

श्रृंगार: दीपावलीके होवैं।

सामग्री: राजभोगमैं दोनों उत्सवकी अरोगैं।

सेवाक्रम: स्नानकौ क्रम चौदसवालौ। श्रृंगारके दर्शन सुबह ९ बजे खोलने, राजभोगके दर्शन सुबह १०:३० - आरती दीपावलीकी आवै। साँझकू दीपावलीवालौ क्रम।

❖ **चौदस दो हो जावैं तो**: नित्यक्रम, चीरा धरै।

कार्तिक वद ३०: **दीपावली।** थापा तथा तोरण (आसोपालव - गलगोटा)।

श्रृंगार: अभ्यंग। वागा सफेद तास या जरीके, कुलह सफेद, पटका लाल। श्रृंगार भारी - दुहैरा। तिलक-अलकावली दुहैरा। ओढनी: जन्माष्टमीकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं: बूंदी, सकलपारे, दीवडा (१०-१२ नग धरने, बाकी हटडी तथा अन्नकूट भोगके लिये राख लेने), मुरब्बाकी कटोरी, १ रायता, तरमेवा, बिलसारु, नींबू-आदापाचरी। सखडीमैं: तीनकूडा, धोवादाल, पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, भुजैना।। **शयनभोग**मैं बैंगनकी टोकरी अवश्य आवै, अन्य नित्यक्रम। **हटडी भोग**: एक थालीमैं दूधकी बरफी ढालकै वापै केसरसू चौपड बनै (संभव होय तौ बहु-बेटी बनावैं), केसरी तथा सफेद पेडा, नित्यकौ सामग्रीकौ बंटा, दीवडा, मोतीपाक, मुरब्बाकी कटोरी, लीलामेवा, नींबू-आदापाचरी, गन्नाके टूक, मिसरीके टूक, खांडकी मिठाई तथा खिलौना, गुलाब-कतली। सूकेमेवामैं बादाम, पिस्ता,काजू (इन सबके ३ प्रकार - सादा, तलमा तथा चाशनीवाले) तथा चिरौंजी, कोपराकी गिरी, किसमिस, छुहारे (खारेक), मुनक्का (काली द्राक्ष)। संभव होय तौ रेवडी, इलायचीदाना, तिनगिनी। हटडी भोगमैं **पेठा अवश्य आवै**।

सेवाक्रम: शंखनाद तथा प्रात:कालकी सेवा नित्यवत्। राजभोगके दर्शन १२ बजे आसपास खुलैं, आरती थालीकी। साँझकू शंखनाद ५ बजे। संध्या-आरती पीछै वेत्र गादी पर ही पधराय देनौ - **श्रृंगार बडे नहीं होवैं**, पादुकाजीकी भी झारीजी बदलैं, सेवा नहीं होवै। संध्या-आरतीकौ टेरा लेकै, सीधे दोनौं झारीजी पधराय शयनभोग आवैं। **शयनके दर्शनमैं साज राजभोगकौ लगै** (गैंद-चौगान, पैंडा, झारी-बंटा-बीडा आदि सब आवैं), दीवी तथा दीपमालिका जुडैं। शयन आरतीमैं डांडेकी आरतीके तीनों खंड जुडैं।

हटडीकौ क्रम: शयन आरती भये पीछै सन्मुखसू सब साहित्य विजय करकै पूरे **शैय्या-मंदिरमैं मंदिरवस्त्र** करि अनवसरमैं रहैं वैसे **शैय्याजीके पास चौपडकी तीनों चौकी** जमाय देनी। अब, **हटडी-भोगकी सब सामग्री साजनी** (पडघा अथवा जमीन जैसी इच्छा या व्यवस्था): श्रीमस्तककी तरफ अनसखडी, दूधघरकी भिन्न-भिन्न टोकरी तथा एक थालमैं अलग-अलग कटोरीन् मैं चोबा, बरास, अरगजा/चंदनचूरा तथा १० बीडा साजकै छोटी झारीजीके पीछै पधराने (नित्यके २ बीडाकौ कटोरा

नित्यवत् एक पडघा पै अलग आवै, फूलमाला नित्यवत् वामैं पधारै)। चरणारविन्दकी तरफ सूकेमेवा, लीलेमेवा, आदि साजने। भोग साजिकै **श्रृंगार चौकी** शैय्याजीके मध्यमैं (नित्यमैं अनवसर समय चौकी लगै है वहाँ) पधराय वाके दोनों तरफ दो छोटे पडघान् पै **दोनों झारीजी** पधरानी (दर्शन समयके झारीजी है रहैं, बदलवेकी आवश्यकता नहीं है)। अब, वेणु-वेत्र श्रृंगार चौकी पै पधराय, दंडवत् करि श्री...जी, लालन तथा श्रीशालिग्रमजीकू **फूलमाला सहित श्रृंगार चौकी पै पधरईये** (शंख आदि कछु नहीं बजै)। पाछैं, सभी वल्लभकुल १-१ रुपियाके सिक्का श्री...जीके अगल-बगल चौकी पै **भेट** धरकै दंडवत् करते जावैं, कुल ११ धरे जावैं (श्रीफल नहीं)। यह क्रम भये पै **आरती थालीकी** (चौपडवाली) करि फूलमाल बडी करिये। श्री...जीके श्रीमस्तक पै सू जोड, कतरा, सग्गी, लूम आदि (पौढवेमैं नडतर-रूप होवैं ऐसे आभरण) सराय सावधानी-पूर्वक प्रभून्कू पौढईये (अनवसरकौ भाव है, पौढवेकौ नहीं)। श्रीशालिग्रामजी बंटा सहित शैय्याजीमैं नित्यके स्थान पै तथा लालन वस्त्र सहित पौढैं (पौढायवेमैं अडचन होवै तौ इनके श्रृंगार बडे कर सकैं), पादुकाजीके मुखारविन्द ढाँक दिये जावैं। अन्तमैं, श्रृंगार चौकीकू चौपडकी तीन चौकीन्के पास पधराय ताके दोनों बगल दोनों झारीजी पधराय देनी। तृष्टि तथा नित्यकौ बीडाकौ कटोरा नित्यके स्थान पै आवैं। भेटके ११ सिक्का चौपडकी बीचवाली चौकी पै आवैं - एक तरफ ५, दूसरी तरफ ६। अनवसरके भावसू ताला-मंगल करि बाहर निकलनौ (मंदिरमैं थोडौ उजाला रखनौ, सब बत्ती बन्द नहीं करनी)। **नौंध**: आज गादीजी भी सिंहासन पै ही पौढैं, वहाँ ही चादर ढाँक कै अनवसरकी भावना करनी, झारीजी-बंटा सब सिंहासन पै ही बिराजैं। इतनौ क्रम करि वल्लभकुलके बालक चौकमैं दंडवत् करि **कानजगाई** करावे गईयान्के पास पधारैं, वहाँसू लौटकै पुन: साष्टांग दंडवत् करि क्रम सम्पन्न करैं।

शयन पीछैकी सेवा: शयनके दर्शन अथवा कानजगाई पीछै चौकमैं तिबारीके बाहर **गोवर्धन-पूजाकी पिछवाई** तथा **चौकके ३ टेरा** बाँध लेने, दर्शनके **कठैडा डोलितबारीके एक कौनेमैं** पधरवाय देने। चौकके मध्यमैं श्री...जीकी गादीजी सहित **सांगामाची**, मुखवस्त्र तथा झारीजीकी तपकडी पधराय मंगलाके दर्शनकी तैयारी करि लेनी (अन्नकूटके दिन गुजराती नव-वर्ष होयवेसू सूरतकी दोनौं हवेलीन्मैं मंगलाके दर्शनकौ क्रम है)। चौककू भीतरसू बन्द कर लेनौ, यदि चौक उपरसू खुलौ होवै तो वहाँ भी चंदरवा लगवाय बन्दोबस्त करवाय लेनौ।

अन्नकूट साजवेकौ प्रारंभ: रातकू एकान्त होय जाय तब तिबारीमैं अनसखडी सजै। सर्वप्रथम

अनसखडीकी सामग्रीके **२ खिचडाकी टोकरी** (जिनमैं लगभग सभी सामग्रीन् के २-२ होवैं) अलग निकाल लेनी। ता पाछैं, तिबारीमैं अन्नकूट भोगकी सब चौकी लगाय, तिन पै सफेद धोती बिछाय तथा मध्यमैं अंदाजित २ फीट जगह छोड (कमरख, माखन-मिसरी आदिके लिये) **जितनी अनसखडीकी सामग्री इन चौकीन् पै सजि सकै उतनी साज लेनी**। तिबारीकौ अच्छी तरह बंदोबस्त करि लेनौ जासू सजी भई सामग्री पै कोई भी बिना अपरसवालेकी दृष्टि न परै। **ध्यान राखिकै चौककौ बंदोबस्त भीतरसू ही करनौ**।

कार्तिक सुद १: **अन्नकूट।** (गुजराती नव-वर्ष)।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडी: अन्नकूटकी सामग्रीके २-२ नगकी १ टोकरी (खिचडाकौ थाल), मुरब्बाकी कटोरी, १ रायता, तरमेवा, बिलसारु, नींबू-आदापाचरी। सखडी: तीनकूडा, धोवादाल, पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, भुजैना। **शयनकौ बंटा दुगुनौ आवै**।

—❖—:अन्नकूट भोगकी सामग्री:—❖—

अनसखडी: कमरखकौ शाक, बडी मठडी, छोटी मठडी, सकलपारे, दीवडा, साँठा, चपटीया खाजा, मोतीपाक, खुली बूंदी, उडदकी बूंदी (*दाणाना पाटनी सामग्री* अथवा *धाँसकी बूंदी* भी कही जाय), मोहनथाल, गुडके मालपुआ, बाबर-घेवर (कुल ४), चन्द्रकला (केसरी-सफेद), सिखरनवडी, अमृतपाक, मैसूरपाक (मैसूक), पपची, बूरा-बुरकी (माखनवडा), इंदरसा, घारी (सूरतमैं अवश्य), मांडा (पूरनपोली), जलेबी। भरवाँ सामग्री: गूंजा, मुखविलास, मेवाबाटी, मदनदीपक, कपूरनारी, खरमंडा। लड्डू: सेव, बूंदी, चूरमा, बेसनकौ मगद, चावलकौ मगद, उडदकौ मगद (उक्कर-पिन्नी), मनोहर, मनमनोहर। खीर-सीरा: सीरा ४ (गेहुँ, बेसन,रवा तथा लापसी), खीर ४ (मणका, चोखा, पाटिया, संजाब/रवा अथवा लापसी)। फीका (अनसखडी): खरखरी, मैदापूडी, जीरापूडी, थपडी, सुहारी, मखाने, कच्चे संधाणे ४, खट्टे-मीठे रायता ४ (ककडी, बूंदी, कोला, बैंगन)। घीमै तले भये चना, वाळ, मूंग, काबूली चना, मटर, सफेद चौळी भी फीकेमैं आवैं (इन पै नमक चूल्हासू उतारकै बुरकनौ)। **दूधघर**: माखन-मिसरीके कटोरा (कम-सू कम नित्यसू चौगुने), पेठा (सफेद कोळा), बासौंदी, पैंडा, बरफी, खांडके खिलौना, कोपरा पाक, काजू कतली, बादाम बरफी। सूकेमेवा (३ प्रकारके - सादा, तलवा, पगवा/चाशनीवाले): बादाम, काजू, पिस्ता, किसमिस, कोपराके टूक, मुनक्का (काली द्राक्ष), आलू-बुखारा, तज। लीलेमेवाकी २-४ छाब तथा नींबू-आदापाचरी (नित्यसू चौगुने)। **सखडी**: ५ भात (सादा, नींबू, दही, सिखरन, मेवा) - **कुल २५ किलो सखडी** (२१ किलोकौ कूट) ,८ तरहकी टोकरी। धोवादाल तथा कढीकी १-१ मथनी, मूंग, सिखरन वडी, केसरी पाटिया। फीके (सखडी): सेव, गाँठीया, मठिया, पापडी, पापड, भुजैना (४ प्रकार), तलवा दाल (मूंगकी पीली, उडद तथा चनाकी), दहीवडा, पत्तरवेलीया, खांडवी, खमण-ढोकला, कठोळ: चना, वाळ, मूंग, काबूली चना, मटर, सफेद चौळी (कममैं कम ४)। संभव होय तौ: **मथुरासू इलायची दाना तथा रेवडी भी मँगवाय लेनी**। गुलाब जामुन, दूधीकौ हलवा, खजूर रोल, काजूकौ मैसूरपाक आदि सामग्री भी धर सकैं। यहाँ लिखे प्रकारकेमैं सू जितनौ होय सिद्ध करनौ। इनके अलावा वल्लभकुलसू आज्ञा लेकै कोई नवीन सामग्री भी अंगीकार करवाय सकैं।

—❖—:सब सामग्री २-२ टोकरी/बटेरामैं धरनी, सजावट सुंदरके लिये। मथनीन् मैं भी ये बातकौ ध्यान रहै:—❖—

सेवाक्रम: **शंखनादसू पहले** सोहनी-मंदिरवस्त्र करि गादीजी तथा पादुकाजीकू जगाय उनकी सेवा करि लेनी। संभव होय तौ **अन्नकूटकी सखडी पधरायवेकी घासकी बाड**, अन्नकूटमैं पधरायवेके लिये **अधिक मात्रामैं तुलसीके पत्ता** तथा गुलाब-तुलसीजीकी अलग-अलग मालाजी (वाडके मापसू) भी मंगला पहले ही तैयार करवाय लेनै, राजभोग आरती पहलै ये सब वस्तु अवश्य तैयार चाहियैं सो जानोगे। **शंखनाद प्रातः ८ बजे** करि श्री...जी तथा अन्य सभी स्वरूपन्कू रात्रीकू बडे किये भये **सब श्रृंगार** तथा मोरपंखके **जोड पै बडे गोकर्ण** याद करकै अवश्य धरने। **वेणु-वेत्र** गादीजी पै पधराय श्री...जीकू चौकमैं पधराने। इतनौ क्रम करकै मंगलभोग धरने। मंगलभोग धरि हटडी भोगकी प्रसादी सराय पडघा आदि सब वस्तु यथास्थान पधराय देनी। समय भये मंगलभोग सराय, दर्शन खोलि, आरती करि टेरा लीजिये। अब, सभी स्वरूपन्कू भीतर पधराय नित्यवत् श्री...जीकू आरसी दिखाय, तुलासी समर्पण करि राजभोग धरिये। सब स्वरूप भीतर पधारैं वा पीछै बिगर अपरस वालेन्सू चौकमैं गोबरके **गोवर्धन सिद्ध करवाय** (गोवर्धन पै **छोटी-छोटी डाली** खौंस देनी एवं **थोडे-थोडे अबीर, गुलाल** छिडकवाय देने। थोडी-सी जगह छोड **गोबरकी एक बंद वाड अवश्य बनवानी** जासू पंचामृत बह न जावै। गोवर्धन पै नीचैके भागमैं श्री...जीकी तरफ श्रीगिरिराजजीके बिराजवेकि लिये **सिंहासनवत् बैठक** बनवाय तापै कौरौ **लाल वस्त्र** पधरवाय लेनौ) लेनौ। पूरे चौकमैं **अबीर, गुलाल तथा हल्दीके छापा** करवाने, सांगामाची जहाँ-की तहाँ ही रहै। सजावटकी गैया, गोपी-ग्वाल, चाँदीके गाय-हाथी आदि भी जमवाय लेने। इतनौ सब होय जाय फिर बिगर अपसर वालेन्कू चौकमैं सू निकाल गोवर्धन-पूजाकी तैयारी करनी।

गोवर्धन-पूजाकी तैयारी: ❖**पंचामृत**की पूरी तैयारी, अंगवस्त्र, पीताम्बर, तिलककी थाली, श्रीगिरिराजजीके लिये फूलमाला तथा २ बीडा ❖गोवर्धनके चारौं तरफ तेल भरे भये **माटीके बटेरा अथवा चाँदीके ४ छोटे दीवला**, दुहैरा बातीवाले ❖एक कौनेमैं **धूप-दीप तथा डाँडेकी आरती**की तैयारी (इनकू प्रकटायवेके लिये एक माटीकौ बटेरा भी तैयार राखनौ) ❖हाथ खासा करवेके लिये करुआ ❖एक बडे टोपलामैं धरि पातलसू ढाँकि कुनवाडा भोगके लिये ***पकवान*की ४ हाँडी** (एक हाँडीमैं २-२ सेवके लड्डू तथा २-२ मठडी, अनप्रसादी) ❖दूधघरियाकू उढायवेकी **एक धोती**। गोवर्धन-पूजाके समय गादी पै पीठिकाकी ओढनी नहीं धरैं, वाकै स्थान पै एक रेशम/साटीनकौ नारंगी/

केसरी वस्त्र पीठिका पै लंबौ घडी करकै धरायौ जाय (श्री...जीके वाम भाग तरफ)।

राजभोग आरती तथा श्री...जीकौ चौकमैं पधारनौ: राजभोगकी घडी आवै अथवा चौककी सब तैयारी होय जाय तब *जय-महाराज* करि भोग सराईये। **राजभोग आरतीमैं कोई साज नहीं लगै**, मात्र फूलमाला, झारीजी तथा २ बीडा आवैं। आरती पीछै माटीकी हाँडीमैं बासौंदी भोग धरनी (झारी-बीडा-माला वहीं रहैं)। तैयारी भये पै (गोवर्धनके आस-पासके सब दीवा प्रकटाय) वल्लभकुलकी आज्ञा ले बासौंदीकौ भोग सराय **राजभोग वाले झारीजी, बीडा** सीधे चौकमैं सांगामची पै पधारैं। अब, दंडवत् करि, शंख-घंटा-टकोरा बजत **राजभोगकी माला** सहित श्री...जी तथा अन्य स्वरूपन्कू चौकमैं पधराय गोवर्धन-पूजाके दर्शन खोलिये (शंखादि चालू रहैं)।

गोवर्धन-पूजा: दंडवत् करि दोनों गिरिराजजीकू (शालिग्रामजी बंटामैं ही बिराजे रहैं) गोवर्धन पै पधराय या क्रमसू गोवर्धन-पीजा करिये: ❖पंचामृतके **सब पात्रन्मैं तुलसीजी** पधराय, बची भई चंदनमैं डुबोय गिरिराजजी पै पधरानी ❖सर्वप्रथम, **३ बार शंखमैं जलसू गिरिराजजीकौ अभिषेक** करवाय पंचामृत कराईये, ध्यान राखनौ कि या समय जल ओसारवे तककौ क्रम ही होवै - स्वरूप स्वच्छ अभी नहीं होवैं (जानकारीके लिये: कामवनमैं प्राचीन समयमैं अभिषेकके लिये गोवर्धनसू मानसी गंगाकौ जल आवतौ) ❖**फूलकी माला धराय तिलक-अक्षत लगाय १ बीडा** गिरिराजजीके बगलमैं धरिये ❖**बासौंदीकी प्रसादी हाँडी तथा कुनवाडा भोग**कौ टोपला ढाँक्यौ भयौ सन्मुख पधराय थोडौ-सौ कौने पै सू खोलिये ❖**धूप-दीप** करि भोगके भावसू २ मिनिट ठाडे रहिये ❖जलकी लोटीसू **आचमन** करवाय (मुखवस्त्र भावनासू ही होवै) **१ बीडा** गिरिराजजीके बगलमैं पधराईये (पहले पधरायौ वासू दूसरी बाजू) ❖सब खंड जोड **डांडेकी आरती** करि शंख-घंटा आदि बंद करवाय देने ❖दंडवत् करि सब वल्लभकुल बालक तथा चरणस्पर्शवाले सेवक गोवर्धन-गिरिराजजीकी **३ परिक्रमा** करैं ❖अब, श्रीगिरिराजजीकु **चंदन-बूरौ लगाय जलसू स्नान** करवाय अंगवस्त्र करि बंटामैं निजस्थान पै पधराईये ❖**गईया** आई होय तो अब वाकू श्री...जी सन्मुख (चौकके बाहर) बुलवाय लेनी ❖कुनवाडा तथा बसौंदी आदिकौ **बाँट करनौ** (सर्वप्रथम दूधघरियाकू सन्मुख बैठाय अधरसू बासौंदीकी हाँडी, १ कुनवाडाकी डबूरी तथा १ धौती दीजिये। पाछैं, बाकीकी कुनवाडाकी तीन डबूरी कीर्तनिया, अधिकारी तथा ग्वालियाकू सन्मुखमैं देनी) ❖सबकू दर्शन होय जावैं तब गोवर्धन-पूजाके **दर्शन बन्द** करिये।

अन्नकूटकी पूर्व-तैयारी: गोवर्धन-पूजाके दर्शन खुले होवैं तब ही गादीजी, जन्माष्टमीकी पीठिका

सहित श्री...जीकौ **सिंहासन निजमंदिरके कोने पै सूकी हल्दीकौ चौक माँडि** पधराय देनौ। टेरा आये पै सब स्वरूप आदि अंदर पधराय **झारी-बंटा-फूलमाला सराय** लेने। सिंहासन पै श्री...जी सन्मुख चाँदीकी पडघी पधराय तापै **मिसरीके पना (शीतलजल) कौ डबरा** धरि देनौ, तामैं एक छोटी कटोरी तैराय देनी (अन्नकूट भोग की विज्ञप्ति करते समय जलसू डबरामैं ही आचमन करवाय ये डबरा सर जाय)। अब, गोवर्धन-पूजाकी पिछवाई चौकमैंसू बडी करि **अपरस बिनाके वैष्णवन् कू चौकमैं बुलवाय गोवर्धन, छापा, सांगामाची-गादी आदि हटवाय**, सोहनी करवाय चौक स्वच्छ करवानौ (कोई छिब जाय ऐसी वस्तु रह न जाय या बातकी झास चौकसाई राखनी)। चौककी सफाई होवै इतनमैं अपरसवाले **गोवर्धन-पूजावाली पिछवाई निजमंदिरमैं** बाँध लेवैं। यदि सब बालक सेवामैं पधार गये होवैं तो **दोनों झारीजी** भी भरिकै पधराय देनी। सब वैष्णव चौकमैं सू बाहर निकल जावैं पीछै अच्छी तरह चौकमैं मंदिरवस्त्र कर, दीनतापूर्वक दंडवत् करि **अन्नकूटकी अन्य सामग्री साजनी**।

अनसखडीकी सजावट: ❖चौकीन् पै सिंहासनके सन्मुख मध्यमैं एक थालीमैं **कमरखकी टोकरी**कौ कटोरा, ताके दोनों बगल **माखन तथा बूराके कटोरा** (माखन दक्षिण हस्त तरफ) सजैं ❖उनके दोनों तरफ एक-एक घारी तथा माँडा/पूरनपोलीकी थाली ❖इनके बगलसू अनसखडीकी सब सामग्री या क्रमसू (नियम नहीं है, परंपरासू ये क्रम है): बाबर-घेवर तथा नवीन या विशेष सामग्री उपर/प्रभुके निकट, नित्यकी नीचै/दूर - **सुंदरताकौ ध्यान राखि टोकरी पधरानी** ❖सुहारी, खरखरी आदि मिष्टान्नसू नीचै ❖नींबू-आदापाचरी, कच्चे-पक्के संधाणे, तरमेवा, सूकेमेवा, दूधघर, बासौंदी, खीर, सिखरन-वडी, बिलसारु, पना, आदि सबसू नीचैकी चौकी अथवा जमीन पै सजैं।

सखडीकी सजावट: ❖अनसखडीकी सजावट पूरी होवै वाके बाद ४-५ फीट रसता छोडिकै सखडीकी सजावट करनी ❖सावधानी-पूर्वक बीच देखि, श्री...जी सन्मुख सखडी पधरायवेके लिये सिद्ध करी **वाड धरि तामैं सूकी हल्दीसू अष्टदल मांडनौ**। फेरि, एक **मध्यम टोकरी** (गोल घाटकी, उठी भई) वाडले बीचौं-बीच **उल्टी धरि** एक **धोती उढाय** यह वाड-टोकरी ढाँक देने ❖कूटकी सब **सखडी पर्वत जैसे घाटसू पधराय** तामैं शिखर तथा **४ आयुध** (श्री...जीकी आडी मुख करिकै) या प्रकार माँडने: मध्यमैं **शिखर**, श्री...जीके वाम भागमैं आगै **शंख** पीछै

चक्र तथा दक्षिण भागमैं पीछै **गदा** आगै **पद्म** (कोई आयुध ढीलौ नहीं होवै याकी चौकसाई थोडौ-सौ हिलायकै करि लेनी)। ❖**शिखर-आयुधन् पै गाढौ घृत** अच्छे प्रकारसू चोपड देनौ ❖अब, **जलके हाथ** करि कूटकी सखडी पै फिराय वाकू व्यवस्थित करि लेनी ❖कूटके श्रृंगार करवेकी **तुलसी तथा गुलाबकी माला** धरनी (थाग कियौ होय तौ वो दर्शनीन्की तरफ) ❖कूटके आगै मध्यमैं जलकी हाँडी तथा घीकौ डबरा/हाँडी सजैं। न्इनके बाद **धोवा, तुवर दाल एवं कढीकी मथनी**याँ आमने-सामने साजनी (धोवादाल श्री...जीके दक्षिण तरफ) ❖मथनीके बगलसू सुघडता-पूर्वक, सुंदर दर्शन होवैं ऐसै **सब भोग साज लेने** (४ भात, पाटिया, कठोळ, टोकरी, भुजैना, पापड, पूडी - या क्रमसू) ❖अनसखडी तथा सखडीकी सामग्री सज जावै तब सामग्रीके फिरते बहुजी-बेटीजी **२ अलग-अलग मैंड करैं** (अंदर भीनी हल्दी, बाहर भीने कंकूकी), कोनेन् पै तथा मध्यमैं **कमल बनैं** (हल्दी-कंकू **सखडी भये पीछै अनसखडीमैं नहीं आवै** याकी खास सावचेती राखनी) ❖मैंड होती रहै इतनेमैं सब सामग्रीमैं छुट्टे हाथसू **पंचाक्षर बोलते भये तुलसीजी** पधराय लेनी ❖फेरि, सब बालक-बहुजी **सामग्रीमैं हाथ लगावैं**, चमचा पधरावैं (आज चाँदीके चमचा-कडछी मात्र दाल, कढी, घीके डबरामैं ही आवैं - अन्य कोई सामग्रीमैं नहीं, कौरमैं भी नहीं) ❖जनाने धोवादालसू कौर साजैं, **आज कौर सजे पीछै धूप-दीप होवै** ❖शंखोदक करि, **शीतल पनाकौ डबरा सराय अन्नकूट भोगकी घडी दीखाईये** (कमसू-कम १०० मिनिट)।

अन्नकूट दर्शनकी पूर्वतैयारी: अन्नकूट भोग सरायवेसू १० मिनिट पूर्व दर्शनकी इतनी तैयारी करि राखनी: ❖बीडीकी **२ जोड** (प्रत्येक जोडमैं १२-१२ बीडी) ❖बीडाकौ चाँदीकौ बँटा जामैं ४ बीडा तथा १ छोटी बरासकी कटोरी होवैं ❖फूलमाला।

अन्नकूट दर्शन: साँझकू ४:१५ बजे *जयमहाराज* करवाय आचमन-मुखवस्त्र करवाय बीडीकी १ जोड अरोगावनी। **सब स्वरूपन्की झारीजी बदली जावैं**, सिंहासन पै **एक झारीजी तथा बीडाकौ बंटा** साजि, **सब स्वरूपन्कू फूलमाला** धराय, गाय-ग्वाल-गोपीन्की व्यवस्थित सजावट करि अन्नकूटके **दर्शन खोलिये, अभी टकोरा नहीं**। दर्शन खुलते ही **बीडीकी दूसरी जोड** पत्ताकी ओट करि अरोगावनी, दर्शनमैं मोरछल होती रहै, साँझकू ७:१५ आसपास आरती होवै। **आरतीकौ समय होय तब टकोरा** करि चाँदीके दीवलाकी बडी **थालीकी आरती तथा न्यौछावर होवै**। हाथ खासा करि सब वल्लभकुल बालक तथा चरणस्पर्शवाले सेवक दंडवत् करि

निजमंदिरमैं सू निकसते भये श्री...जी तथा अन्नकूटकी **३ परिक्रमा** करि साष्टांग दंडवत् करैं। इतनौ करि, माखन-मिसरी तथा कमरखके शाककौ डबरा छोडि **अनसखडीकी सब सामग्री खुले दर्शनमैं सर जावैं**। कोई दर्शनमैं रह न जावै याकी चौकसाई करि अन्नकूटके दर्शन बन्द करिये, प्रसादकी व्यवस्थाके लिये कार्यकर्ता वैष्णवन्कू चौकके बाहर खडे करि देने।

उत्थापनसू शयन तककी सेवा: टेरा लै **राई-लौन कर** सब स्वरूपन्कू निज-स्थान पै पधरईये। फूलमाला बडी करि, सबनकी झारीजी बदल उत्थापन भोग धरिये। **नौंध**: उत्थापन भोगकी घडीमैं सर्वप्रथम अन्नकूटकी सखडीमैं सू चाँदीके पात्र, कडछा-कडछी आदि सावधानी-पूर्वक समेट लेने। वाके बाद कूटकौ शिखर, कच्चे संधाणे, घारी, वल्लभकुल तथा सेवकन् के लिये सखडी महाप्रसाद भीतर लेकै बाकीकौ **सखडी प्रसाद वैष्णवन्कू सौंप देनौ**। **बडी होयवे जैसे आयुध, सीरा, बासौंदी आदि अवश्य बाहर निकाल देने**। प्रसाद लिवायवेसू पहले कार्यकर्ता सब सामग्री अवश्य परख लैं जासू कोई बिगडी भई सामग्री वैष्णवन्कू न आय जावै। आज अनसखडी नहीं बँटै)। समय भये उत्थापनभोग सराय नित्यवत् मालाजी-वेत्र धराय संध्या-आरती, पादुकाजीकी सेवा, श्री...जीके श्रृंगार विजय तथा पौढायवेकौ क्रम नित्यवत्, शयनके अनवसरमैं **सामग्री तथा बीडाके बंटा दुगुने** भरे जावैं।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖आज शयनसू श्रीबडे रघुनाथजीके उत्सव तक नित्य मंगला-शयनमैं श्रीमस्तकसू खोल ओढैं ❖भाईदूजसू नित्यके साँझकी सेवा बेगि होवै, उत्थापनके दर्शन ४:१५ बजे तथा शयनके दर्शनकौ टेरा ६:३० बजे आय जावै।

कार्तिक सुद २: **भाई दूज**

श्रृंगार: **अभ्यंग**। वागा लाल दरियाई (रेशमके), चीरा हरौ। श्रृंगार इकहरा भारी - हीराके, तिलक-अलकावली दुहैरा। शयनमैं चीरा बडी करकै सादा हरी पाग। ओढनी: जन्माष्टमीकी।

सामग्री: **राजभोग**मैं अनसखडी: अन्नकूटकी राखी भई सामग्रीकौ १ खिचडाकौ थाल, मुरब्बाकी कटोरी तथा तरमेवा। **सखडी**: एक थालमैं खीचडी (यासू करमा भी कहैं) जामैं घीकी तथा संधाणाकी एक-एक कटोरी (अनसखडीसू भिन्न), पापड, कचरीया, भुजैना, दहीभात।

सेवा/तिलककौ क्रम: श्रृंगार होते रहैं तब ही भोगके समयके **तिलक-बीडाकी तैयारी और एक**

थालीमैं कंकूकौ साथिया करि ताके उपर चूनकौ १ तथा चांदीके ४ दीवला एवं ४ मुठिया धरि तैयारी करि लेनी। श्रृंगार भये पीछै **आरसी-तुलसी समर्पण करि दोनों झारीजी भरि** सिंहासन पै पधराय देनी। राजभोगकी सब सखडी-अनसखडी सामग्री साजे पीछै सखडीकौ थाल भी श्री...जीके सन्मुखमें पधरईये। ता पाछै, **शंख-टकोरा शुरु करवाय दंडवत् करि श्री...जीकू कंकूकौ तिलक** कर, अक्षत लगाय कंकूमैं डुबाय दो बीडा गादी पै पधरईये। पाछै अन्य सभी स्वरूपन्कू तिलक करि (भेट नहीं) मुठिया वार **आरती करिये**। शंख-टकोर रखाय धूप-दीप होवै (सालमैं मात्र आज के दिन ही थाल पधारे पीछै धूप-दीप)। अन्तमैं **कोर साजि**, शंखोदक करि घडी दिखाइये (नित्यवत्)। **राजभोगमैं थालीकी आरती**(आरतीघरमैं सू आई होय वो)।

विशेष: आज राजभोग सरे पै अन्नकूटकी अनसखडी एक थालमैं गादीजीकू भोग आवे। गादीजी अरोग लें पीछे ही वल्लभकुल, मंदिरके कर्मचारी/सेवक तथा अन्य वैष्णवन्में बँटै।

कार्तिक सुद ३: वागा तथा चीरा लाल तासके (शयनमैं सादा पाग), सब आभरण हीराके। ओढनी: खुलती।

कार्यालयके लिये: गोपाष्टमीसू देव-प्रबोधिनी तकके दर्शनकौ क्रम लिखवाय देनौ।

कार्तिक सुद ४: वागा तथा चीरा हरे तासके (शयनमैं सादा पाग), सब आभरण मीनाके। ओढनी: खुलती।

कार्तिक सुद ५: वागा तथा चीरा पीले तासके (शयनमैं सादा पाग), सब आभरण पिरोजाके। ओढनी: खुलती।

कार्तिक सुद ६: वागा तथा चीरा श्याम तासके (शयनमैं सादा पाग), सब आभरण पुखराज के (अगर न होय तो मोती)। ओढनी: खुलती। **सामग्री**: राजभोगमैं तुवर दालकौ वारा।

कार्तिक सुद ७: **श्रृंगार**: वागा तथा चीरा श्वेत तासके (शयनमैं सादा पाग), सब आभरण पन्ना के।

ओढनी: खुलती।

जानकारीके लिये: कामवनमैं सप्तमीसू मनोरकौ वारौ चलै, सूरतमैं नहीं।

कार्तिक सुद ८: **गोपाष्टमी।** थापा-तोरण (आसोपालव)।

श्रृंगार: **मुकुट वृन्दावनी**, मुकुटकी टोपी पै छोटे गोकर्ण धरैं। काछनी-पीताम्बर गुलैनार, सूथन दीवालीकी जोडकौ (सफेद जरी), कंठवस्त्र श्याम। अन्य स्वरूपन्के वस्त्र गुलैनार। सब आभरण

हीराके, **श्रृंगार भारी इकहरा**। शयनमैं खोल तथा कुलह कसूंबी। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: **मंगलभोग**मैं उक्कर-पिन्नीके लड्डू (मंगलभोगकी **घडी ३० मिनिट**)। **राजभोग**मैं गिजलीकौ मनोर (२० नग), मुरब्बाकी कटोरी, तरमेवा, गोरस तथा थूली (संपूर्ण थूली गौग्रासके साथ गैयान् कू जावै, नेगमें बटै नहीं)। **शयनके बंटामैं** १ लीटर दूधकी केसरी बासौंदी अधिकमैं आवै।

जानकारीके लिये: शयनकी बसौंदीकौ क्रम श्रीदेवकीनन्दनजीके बेटीजी (श्रीलक्ष्मी बेटीजी)के मनोरथसू प्रारंभ भयौ है।

सेवाक्रम: राजभोगमैं आरती थालीकी। **संध्या-आरतीके दर्शनमें वेणुजी धरैं**, वेत्र नित्यवत्।

विशेष: आज राजभोग पीछै फरगुल, रजाई आदि निकालकै उनकू तपा लेने।

कार्तिक सुद ९: **अक्षय नवमी।** तोरण (आसोपालव)

श्रृंगार: वागा दीवालीके (श्वेत जरी)। श्रीमस्तक पै गोकर्णकौ दुमालौ (दुमालेके दोनों तुर्रा छुपाके या काटकै, उनके स्थान पै गोकर्ण धर देने। वर्ष-भरमैं मात्र आजके दिन), सब आभरण पन्नाके। ओढनी: तासकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं बूंदीके लड्डू, मुरब्बाकी कटोरी, गोरस, तरमेवा। सखडीमैं **कोलाकी टोकरी अवश्य** आवै।

सेवाक्रम: राजभोग आरती, अनवसर पीछै वल्लभकुल तथा भीतरकी सेवावाले सभी सेवक चौकके बाहरसू दंडवत् करि निजमंदिरकी ३ परिक्रमा करैं, अन्तमैं साष्टांग दंडवत्।

विशेष; यदि ९/१० भेली होवैं तौ श्रृंगार तथा सब क्रम ९ कौ होवै, दोनों उत्सवकी सामग्री राजभोगमैं भेली अरोगैं।

कार्यालयके लिये: आज शयन पीछै कार्यालयमैं सूचना दे देवोत्थापनके लिये २४ आखे गन्ना तथा कच्चे फल/शाकभाजी मँगवाय लेने। रजाई, फरगुल, तह भी निकलवाय लेने।

जानकारीके लिए: यदि कभी दीपावलीके दिन ग्रहण पडै तो अन्नकूट अक्षय नवमी पै करवेकी प्राचीन परंपरा है।

कार्तिक सुद १०: **श्रीगोविन्दजी महाराजकौ** (वि. सं. १७८१) उत्सव तथा **गो. चि. श्रीजयदेव/राहुल बावाश्री** (वि.सं. २०५८) कौ जन्मदिन । थापा-तोरण (आसोपालव)।

श्रृंगार: वागा तथा चीरा लाल तासके (शयनमैं सादा पाग), सब आभरण हरे हीरा या पन्नाके।।

ओढनी: अभ्यंग या तासकी।

विशेष: यदि १०/११ भेली होवैं तौ श्रृंगार तथा सब क्रम देवोत्थापनकौ होवै, १०की सामग्री भी

राजभोगमैं अरोगैं।

सामग्री: जन्मदिन निमित्त **मंगला**मैं बूंदी (५०० ग्राम घीकी, मंगलाके दर्शनमैं वैष्णवन्मैं बँट जावै)।

राजभोगकी अनसखडीमैं: बूंदी, सकलपारे, गुलाब जामुन अथवा मुखविलास, मुरब्बाकी कटोरी,तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु। सखडीमैं: धोवादाल, पापड, भुजैना, पाटिया, रोटी।

जानकारीले लिए: श्रीगोविंदजी महाराजनै वि.सं. १८२५ के आसपास श्रीनवनीतप्रियाजीकू जयपुरसू सूरत पधराए हते। आपश्रीके नामसू ही *श्रीगोविन्दजीकी हवेली* नाम है। आपश्रीके मनोरथ-स्वरूप आज श्रीगोविन्दजीकी हवेलीमैं श्रीनवनीतप्रियाजी चीरा पै सहेरा धरैं, पंचम घरमैं और कोई स्थान पै यह क्रम नहीं है।

सेवाक्रम: राजभोगमैं आरती थालीकी। आज जन्मदिन होयवेसू **शयनमैं वस्त्र राखने**।

विशेष: आज राजभोग पीछै देवोत्थापनके लिये चंदन घिस लेनौ। यदि देवोत्थापन प्रात: होवै तौ आज ही शयन पीछै बहुजी तथा वैष्णव चौक माँड लैं।

कार्तिक सुद ११: **देव-प्रबोधिनी एकादशी।** आजसू द्वादशीके दिन तक **सब दर्शनमैं शहनाई बजै**।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। चाकदार वागा पीले दरियाई, कुलह केसरी। फरगुल लाल, केसरी अथवा पीलेमैं सू इच्छानुसार (मंगलासू ही आय जावै)। **श्रृंगार दुहैरा** - मुखारविन्दके आभरण माणिकके, श्रीअंग पै हीराके। तिलक-अलकावली दुहैरा। आज एक दिन मोजाजी धरैं (मार्ग.सु.७सू नित्यमैं शुरु होवेंगे), **आजसू डोल ताँईं सग्गी बंद**।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं: बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी, १ रायता, तरमेवा, बिलसारु, नींबू-आदापाचरी तथा एकादशीकौ सीधा। सखडीमैं: तीनकूडा, धोवादाल, केसरी पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, भुजैना। **उत्सवभोग**(देवोत्थापनके समय, राजभोग या शयनभोगके साथ): केशरी पेडा तथा दहरवडी/दहीवडा। **शयनभोग**: नित्यक्रम। **जागरणके चारौं भोग**: ४-६ जलेबी, बूंदी, गोरसकी कटोरी, संधाणा, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, मुरब्बा।

सामग्री-क्रममैं बदलाव: ❖देवोत्थापन पीछै बैंगन शुरु।

देवोत्थापन कब होवैं?: भद्रा न होय तब (नाथद्वाराकी टिप्पणी अनुसार) देवोत्थापन तथा तुलसी-विवाह होवैं - यदि **सवेरे होवैं तो श्रृंगार भये पै ग्वालके दूधकौ डबरा/अनसखडी अरोगिकै**, यदि **साँझकू होवैं तो संध्या आरती पीछै ग्वालके दूधकौ डबरा/अनसखडी अरोगिकै** (नौंध: यदि सवेरे बेगे अथवा साँझकू मौडे देवोत्थापनकौ समय होवै तो भी सेवामैं याही क्रममैं देवोत्थापन होवैं सो जानोगे, शंखनादकौ

समय तदनुसार राखनौ)। देवोत्थापन सवेरे होवैं तो श्रृंगार होतेमैं देवोत्थापनकी तैयारी करि लेनी, साँझकू होवैं तो उत्थापन भोग धरिकै करि लेनी।

देवोत्थापनकी तैयारी: **१६ आखे गन्नान्की *चौरी* बनै** (४-४ गन्ना साथ बाँधि, ऐसी ४ जोड बनाय इन चारौं जोडन्कू उपरसू बाँधि मंडप बन जावै), ये गन्ना तिबारीमैं बने मंडपके चारौं साथियान् पै संभालकै पधराय देने। ताके मध्यमैं चौपडकी गादीवाली एक चाँदीकी चौकी पधराय देनी, गादी पै शालिग्रामजीकौ किनारीवालौ एक केसरी वस्त्र तथा गुंजामाला साज देने। गन्नान्के चारौं तरफ **ताँबेके तथा ४ माटीके ४ दीवला दुहैरा बातीवाले** पधराय राखने। मंडपके बगलमैं मंढे भये *षोडशपद्म/अष्टदल* पै **पंचामृतकी सब तैयारी** पधराय पासमैं **अंगवस्त्र, एक फूलमाला, दो बीडा, माटीकी ४ तथा नित्यकी १ अंगीठी, धूप-दीप**की तैयारी भी राखनी। पातलसू ढँकी भई **कच्चे फल/शाकभाजीन्की ४ टोकरी**, प्रत्येकमैं गन्नाके ४ टूक, बैंगन, सिंहाडे, सकरकंदी, लाल बेर, हरे चनाकौ साग, हरी कचरीया इतनी वस्तु आवैं भी तिवारीमैं एक तरफ पधराय राखने।

तुलसी-विवाहकी तैयारी: देवोत्थापनकी तैयारी करकै तुलसी-विवाहकी तैयारी भी करि लेनी। **तुलसीकौ १ कूँडा** श्रृंगार करिकै (साडी, कंगन, फूलमाला) डोल-तिबारीमैं निजमंदिरकी तरफ मुख करिकै *चौरी*के बाहर पधराय देनौ, चौरीकी दूसरी बाजू स्वरूपके बिराजवेकी चौकी/छोटो सिंहासन पधराय राखनौ। **डोल-तिबारीमैं** बने तुलसी-विवाहके मंडप पै **४ आखे गन्नान्की *चौरी*** बनाय पधराय राखनी, तिनके चारौं तरफ चार माटीके दीवला तथा एक दीवला अधिकमैं (आरती आदि प्रकटायवेकू) पधराय राखने, प्रकटाने नहीं। शैय्या-मंदिरमैं बिराज रहे **ग्वालमंडलीके स्वरूपके श्रृंगार** तथा फूलमाला धराय अलग गादी पै बिराजमान करि तैयार राखने। तुलसी-विवाहके समय **कच्चे फल/शाकभाजीन् की १ टोकरी** (श्री...जीवाली ४ सू अलग), **सब खंडमैं बाती लगाय डांडेकी आरती, धूप-दीप, २ बीडा, संकल्पके लिये जलकी लोटी तथा अक्षत**की आवश्यकता रहेगी - इन सब वस्तून्की भी तैयारी राखनी। हाथ खासा करवेके लिये करुआ भी राखनौ। कार्यालयमैं सू तुलसी-विवाहकी भेट मँगवाय लेनी। तुलसीजी तथा स्वरूपके लिये **फूलमाला** भी सिद्ध करवाय लेनी।

देवोत्थापनकौ क्रम: श्री...जीकू मालाकी जोड धराय दर्शन खोलिये, साँझकू देवोत्थापन होवैं तो

भोग-संध्याके दर्शनकी मालाजी है रहैं। दंडवत् करि शंख-टकोरा-घंटा बजत **शालिग्रामजीकू मंडपमैं चौकी पै पधरईये**, मुखारविन्द दक्षिणकी ओर रहै ऐसै (जानकारीके लिये: कामवनमैं निजमंदिरमैं बिराजते श्रीबालकृष्णजी मंडपमैं पधारैं)। वस्त्र तथा गुंजामाल (पहलेसे ही स्थान पै तैयार राखने) धरि देने। फेरि, दो जने आमने-सामने खडे रहकै **चौकीकू तीन बेर उठावैं**, यह श्लोक तीनौं बार बुलै:

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते।

त्वया चोत्थायमानेन उत्थितं भुवनत्रयम्।।

आज्ञा लै शालिग्रामजीकू **पंचामृत**के थालमैं चौकी पै पधराने, **मुखारविन्द दक्षिणमैं ही रहै**। पंचामृत पीछै अंगवस्त्र करि पाछै मंडपमैं चौकी पै पधराय फूलमाला धरनी। अब, पातलसू ढँकी **फलन् की ४ टोकरी** शालिग्रामजीके सन्मुख दोनों तरफ २-२ पधराय सबन् पै सू थोडी-सी पातल खोल देनी। चारौं दीवलान् के बगलमैं माटीकी **४ अंगीठी** पधराय **धूप-दीप** करि **२ बीडा धरने**, मंडपमैं आचमन तथा तिलक नहीं होवैं। अब, श्री...जी तथा मंडपके बीचसू (शैय्या-मंदिरकी तरफ मुख रहै या प्रकार) चाँदीके दीवलावाली दुहैरा बातीकी **थालीकी आरती** करनी। फेरि, सब वल्लभकुल बालक तथा चरणस्पर्श वाले सेवक दंडवत् करि **मंडपकी तीन परिक्रमा** करैं। अन्तमैं, झारीजी-बीडा सराय, दौनौं झारीजी भरि पधराय दर्शन बन्द करिये। शालिग्रामजीकू यथास्थान पधराय राजभोग अथवा शयनभोग धरिये (आज **शालिग्रामजीकू पट्टा पै अलगसू** थोडी बूंदी, ५ जलेबी, दो केसरी पेडा तथा १ जलकी लोटी आवैं)।

तुलसी विवाह: राजभोग या शयनभोग धरिकै डोल-तिबारी मैं तुलसी विवाहकी वस्तुएँ पधराय, सब दीपक प्रकटाय ग्वालमंडलीके स्वरूपकू घंटा-टकोरा बजत चौरीमैं पधराय या क्रमसू तुलसी-विवाह करवानौ: ❖हाथमैं जल-अक्षत लै तुलसी-विवाहकौ संपल्प छोडि फलकी टोकरी सन्मुख करनी ❖धूप-दीप, आचमन, डाँडेकी आरती करि (सब खंड जुडैं) घंटा-टकोरा बंद करि देने ❖वल्लभकुल, सेवक, टहलवा दंडवत् करि ३ परिक्रमा करैं, भेट धरैं ❖अपरसवाले सेवक हट जावैं पीछै उपस्थित वैष्णव भी परिक्रमा-भेट करि सकैं। नौंध: सब वैष्णवन्कौ परिक्रमा आदिकौ क्रम भये पीछै ग्वालमंडलीके स्वरूप भीतर पधराय लेने।

तुलसी-विवाह पीछैकी सेवा: राजभोग या शयनके दर्शन खुलवेसू पहले ही श्री...जी सन्मुखसू

गन्नाकी चौरी सराय लेनी। आज **शयनके दर्शनमैं संध्या-आरतीकौ साज मँढै**, सन्मुखमैं **तृष्टि पधराई जाय**, *तह* बिछै, निजमंदिरमैं दीवी एवं चौकमैं दीपमालिका जुडैं। **शैय्याजीके पास नित्यके अनवसरवत् बंटा, २ बीडा, छोटी झारीजी रहैं** (श्री...जी पौढैं तब भी यही रहैं, मात्र शयनवत् जमाय दिये जावैं)। **शयन आरती पीछै तृष्टि सराय कीर्तन शुरू होवैं**, प्रथम *पद्म धर्यौ जन ताप निवारन* - यह कीर्तन बुलै।

यदि देवोत्थापन सुबह भये होवैं तौ: ❖**शामकू शंखनाद ६:३० पीछै**, शयन तककी सेवा नित्यवत् चलै, **रात्री ८ सू ८:३० शयनके दर्शन** खोलने ❖ **शयन आरती भये तक कीर्तन नहीं**।

जागरणके ४ भोग (भोग रात्री ९, १०, ११ तथा १२ पै धरने): शयनके दर्शन होते रहैं इतनेमैं जागरणके चार दर्शनकी तैयारी करि लेनी - भोगकी ४ थाली, ४ मालाकी जोड, ८ बीडा तथा चारौं दर्शनन्की ४ आरतीकी थाली (शंख, चक्र, गदा, पद्म - या क्रमसू अलग-अलग चारौं दर्शनन्मैं उतरैं)। रात्री ८:४५ पै शयनके दर्शनकौ टेरा डारि खंड-चौकीन्कू थोडौ दूर सरकाय (नित्यके उत्थापनभोग धरैं वैसै) **शयनकी माला-बीडा विजय करि प्रथम भोगकी मालाजी धराईये, झारीजी सराईये**। बडी झारीजी भरि पधराय प्रथम भोग धरिये (घडी २५ मिनिट)। समय भये आज्ञा लै भीतर जाय, २ बीडा पधराय, आचमन करवाय भोग सराईये। अब, खंड-चौकी निकट सरकाय जागरणके पहले दर्शन खोलिये, अभी टकोरा नहीं होवै। दर्शन कुल २५ मिनिट खुले रहैं, **दर्शन खुलवेके १५ मिनिट पीछै दर्शनकौ टकोरा करि थारीकी आरती** करि समय भये टेरा डारिये। प्रथम भोग/दर्शन वत् बादके तीनौं भोग/दर्शनकौ क्रम रहै। **जागरणके आखरी दर्शन रातकू १:०० बजे बंद होय जावैं**। ता पाछैं सब श्रृंगार विजय करि नित्यवत् **श्री...जी, अन्य स्वरूप तथा गादीजी पौढैं**। दोनों झारीजी, बंटा तथा बीडा नये आवैं, सब दर्शनकी फूलमाला बीडाके बंटामैं पधारैं।

जानकारीके लिये: कामवनमैं तथा श्रीगोविन्दजीकी हवेलीमैं जागरणके भोग तथा दर्शन की घडी ५०-५० मिनिटकी होयवेसू आखी रात जागरणके दर्शनकौ क्रम चलै, श्री...जी पौढैं नहीं - द्वादशीके दिन जल्दी अनवसर होय जावैं। वि.सं. २०७१सू पाल हवेलीमैं रात्रीकू शयन करायवेवालौ क्रम प्रारंभ भयौ, ता पहले प्राचीन क्रम हतौ।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖मंगलासू फर्गुल तथा रजाई शुरु ❖श्रीअंग पै वस्त्रके भीतर आतमसुख शुरु ❖पादुकाजीकू वस्त्रके अंदर आतमसुख तथा शयनमैं सफेद चादर पै रजाई शुरु

❖राजभोगमैं *पैंडा* की जगह *तह* शुरु ❖सग्गी/चोटी बंद, डोलोत्सव ताँईं ❖पीठिकाकी ओढनी बंद, वसंत पंचमी ताँईं ❖नित्यमैं रेशम या साटीनके वस्त्र शुरु ❖सुहाते गरम जलसू आचमन शुरु ❖माटीकी मथनीकी जगह चाँदी, तांबाकी मथनी शुरु ❖देवोत्थापन पीछै अंगीठी शुरु।

जानकारीके लिये: कामवनमैं आजसू रामनवमी ताँईं नित्यमैं चंदनके स्थान पै *अगर*की धूप शुरु।

कार्तिक सुद १२: **पंचमकुमार बडे श्रीरघुनाथजीकौ उत्सव** (वि.सं. १६११)। थापा-तोरण (आसो, गलगोटा)

श्रृंगार: **अभ्यंग**। वस्त्र, श्रृंगार, मोजाजी, ओढनी सब देव-प्रबोधनीके ही।

नौंध: यदि सेवक कम होवैं तौ थोडे हल्के दुहैरा श्रृंगार करने।

सामग्री: **मंगलभोग**मैं जलेबी।**राजभोग**की अनसखडीमैं: बूंदी, जलेबी (सकलपारा नहीं), मुरब्बाकी कटोरी, १ रायता, तरमेवा, केसरी बिलसारु, **४ कच्चे संधाने**, नींबू-आदापाचरी (दूध-खीर केसरी)। सखडीमैं: तीनकूडा, धोवादाल, केसरी पाटिया, छाछवडा, रोटी, पापड-कचरीया, पूडी, भुजैना।

सेवाक्रम: आज **शंखनाद प्रात: ८:०० बजे होवैं** (प्रबोधिनीके दिन पौढवैं विलंब होवेसू)। मंगलासू शयन तक सब आरती थालीकी, **आरसी अभ्यंगकी देखैं**। राजभोग आये पै तिलक, श्रीफल भेटकी तैयारी करि लेनी। राजभोग सरे पै माला धराय मात्र बगली-तकीया, सिंहासनके खिलौना तथा खिलौनाकी तपकडी साजि तिलकके दर्शन खोलिये (समय १२:३०)। **अभ्यंगकी तथा छोटी-बडी सब आरसी** दिखाय **शंख-टकोरा** शुरु करवाय प्रथम **श्री...जीकू तिलक** करिये, दो बीडा कंकूमैं कोर डुबाय गादी पर दोनौं तरफ पधराईये। पाछै, पादुकाजी सुध्धा अन्य **सब स्वरूपनकू तिलक** कर मुठिया वारि **चूनकी आरती, न्यौछावर** करिये। शंख-टकोरा बँद कराय टेरा डारिये। सुजनी आदि बिछाय, माला बडी करि, तृष्टि पधराय २-५ मिनिट दर्शन खोलि टेरा दै अनवसर करिये। साँझकू शंखनाद तथा सब क्रम नित्यवत्। **कीर्तन**: पूरे दिन जन्माष्टमीकी बधाई।

कार्तिक सुद १३: **श्रीगोविन्दलालजी महाराज** (वि.सं. १९८६) **कौ उत्सव**

श्रृंगार: वागा-कुलह केसरी। आज भी उत्सव होयवेसू जोड ही धरैं, घेरा नहीं।

सामग्री: (कुल १ किलो घी) **राजभोग**की अनसखडीमैं चूरमा, मुरब्बाकी कटोरी, तरमेवा। सखडीमैं बाटी, तुवेरके स्थान पै उडदकी दाल (सखडीमैं नींबूके ४-६ टकडा अवश्य धरने)।

जानकारीके लिये: गो. श्रीद्वारिकेशलालजीके मनोरथ स्वरूप आज दाल-बाटी-चूरमाकी सामग्री अरोगैं, अलगसू उत्सवकौ सीधा नहीं आवै।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖आजसू डोल ताँईं शयनमैं चाकदार वागा ही रहैं (पीठिकाकी ओढनीले अलावा सब क्रम कार्तिक वद ८ वालौ)।

कार्तिक सुद १४: **वैकुंठ चौदस**

श्रृंगार: वागा भाई दूजके, पाग कसूंबी। सब आभरण खुलते।

सामग्री: राजभोगमैं कोई भी एक सामग्री (संभव होय तो बेसनकौ मैसूर पाक), मुरब्बाकी कटोरी, गोरस, तरमेवा।

कार्तिक सुद १५: **गोपमास प्रारंभ**

श्रृंगार: कुंडलके। वागा आसमानी, सब आभरण खुलते।

सामग्री: तरमेवा। **सामग्री-क्रममैं बदलाव**: ❖ आजसू नित्य राजभोगमैं अनसखडीके थालमैं एक-एक कटोरी **माखन-मिसरीकी अधिक आवै**।

विशेष: आज शयन पीछै व्रतचर्याकी छोटी पिछवाई चढै। यह पूरे गोपमास चढी रहै, पीछैके साज क्रमवार बदलते रहैं।

❖❖❖

मार्गशीर्ष (अघैन)

❖❖❖

मार्गशीर्ष वद १: नित्यक्रम। पाग-वागा रेशमी।

मार्गशीर्ष वद २: नित्यक्रम। सामग्री: **राजभोग**की अनसखडी: मगद सखडी: तुवरदालकौ वारा, कौर तुवरसू।

मार्गशीर्ष वद ३: नित्यक्रम।

मार्गशीर्ष वद ४: नित्यक्रम।

मार्गशीर्ष वद ५ या ६: पहले दिन वार सुंदर होय (रवि या मंगल वार न होय) तौ **अभ्यंग**। वार सुंदर नहीं होय तौ दूसरे दिन अभ्यंग करनौ। जा दिन अभ्यंग करैं वा दिन **श्रृंगार**: कुंडलके, वागा तथा फरगुल भारी। विशेष: शीतकालके दिनन्मैं जडाऊ तथा जरीके टिपारा अधिक आवैं, वस्त्रके टिपारा कभी-कभी धरैं। (टिपारा पै सूथन-चाकदार आवै, मल्लकाछ नहीं)।

मार्गशीर्ष वद ७: नित्यक्रम। विशेष: शीतकालमैं नित्य पापड तथा गुड आवैं, उनकी व्यवस्था करवाय लेनी।

मार्गशीर्ष वद ८: नित्यक्रम।

मार्गशीर्ष वद ९: नित्यक्रम। **शयनभोग**: बाजरीके रोटला (८-१०), बैंगनकौ भरता, गुडकी गोली, छौंक्यौ दही।

मार्गशीर्ष वद १०: नित्यक्रम।

मार्गशीर्ष वद ११: उत्पत्ति एकादशी। **श्रृंगार**: कुंडलके।

सामग्री: राजभोगमैं एकादशीकौ सीधा तथा तरमेवा।

मार्गशीर्ष वद १२: नित्यक्रम। विशेष: फूलघरीयान्कू कलके लिये पादुकाजीकी एक फूलमालाकौ कह देनौ।

मार्गशीर्ष वद १३: **उत्सव श्रीकाका वल्लभजीकौ** (वि.सं. १७२९) **। तोरण** (आसोपालव-गलगोटाके)।

विशेष जानकारी: आजके दिन वि.सं. २०६५मैं गो. श्रीद्वारिकेशलालजी महाराजश्रीनै कामवनसू श्रीकाका वल्लभजीके भावनात्मक पादुकाजी सूरतकी पाल हवेलीमैं श्रीगोकुलचन्द्रमाजीकी सेवामैं श्री...जीके पास पधराये। तबसू यह उत्सव पाल हवेलीमैं श्रीगुसाँईजीके उत्सव तुल्य मनायौ जाय।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। कुलह केसरी, वस्त्र श्रीगुसाँईजीके उत्सवके। सब आभरण हीराके, इकहरा।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं: बूंदी, जलेबी (सकलपारा नहीं), मुरब्बाकी कटोरी, १ रायता, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी - खीर, दूध, बिलसारु केसरी। सखडीमैं: तीनकूडा, धोवादाल, केसरी पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, भुजैना। **आज पादुकाजीकू अलग भोग आवै**: सखडी, अनसखडी सब, कौर भी सजै (अलग पात्रन्मैं अथवा पातल-दौनामैं। पादुकाजीके भोगमैं तुलसीजी भी नहीं आवैं)।

सेवाक्रम: आज शंखनाद पहले पादुकाजीकू स्नान, श्रृंगार होवैं (१-२ हार अथवा जरीके पवित्रा धरने)। राजभोगकी घडी ड्यौढी (७५ मिनिट)। राजभोग धरकै पादुकाजीके तिलक-आरतीकी तैयारी कर लेनी (एक काँसेकी थालीमैं साथिया कर ताके उपर चूनकौ ४ बातीवालौ एक दीवला तथा ४ मुठिया कंकू लगायके पधराने। थोडेसे कंकू-अक्षत तथा २ बीडा भी थालीमैं एक तरफ पधराय राखने, **आज श्रीपादुकाजीके लिये एक फूल माला भी अवश्य सिद्ध करवानी**)। राजभोग सरे पै पादुकाजीकू अलगसू आचमन-मुखवस्त्र करवाय २ बीडा धरने, झारीजी बदलने। सब स्वरूपन्कू मालाजी धरि, बगली-तकीया, सिंहासनके खिलौना, खिलौनाकी तपकडी साजि, खंड लगाय (अभी सुजनी नहीं बिछै) ताके आगै **पादुकाजीकी पलंगडी सन्मुखमैं पधरानी** (मुखारविन्द पूर्वकी तरफ रहै)। **पादुकाजीके तिलक/आरती**: राजभोगके दर्शन खुलते ही प्रथम श्री...जीकू दोनों आरसी दिखाय, पादुकाजीकू भी पास/दूरसू दिखावनी। **राजभोग आरती थालीकी** चाँदीके दीवला वाली करि **घंटा-टकोरा चालू रहैं** (शंख नहीं बजै), **श्री...जीकी आरतीमैं सू एक बाती लेके वासू पादुकाजीकी आरती प्रगटावनी**। पादुकाजीकू तिलक करि, अक्षत लगाय दो बीडा कूंकूमैं कोर डुबाय पधराने। मुठिया वार **चूनकी आरती** कर टेरा लीजिये। पादुकाजीकू यथास्थान पधराय, सुजनी आदि बिछाय, सब स्वरूपन्की मालाजी बडी कर पुन: दर्शन खोलिये। २ मिनिट बाद टेरा ले अनवसर कराईये। **कीर्तन**: पूरे दिन श्रीगुसाँईजीकी बधाई।

मार्गशीर्ष वद १४: नित्यक्रम।

जानकारीके लिये: आज श्रीदेवकीनन्दनजीके छोटे भाई श्रीजयदेवजी (वि.सं.१९१९)कौ उत्सव है। आपश्री बहुत चमत्कारी हते। वीरमगाममैं आपश्रीके चरणारविन्दकी ठोकरसू मीठौ जल निकस्यौ सो १०० वर्ष ताँईं चल्यौ।

मार्गशीर्ष वद ३०: **श्रृंगार**: कुंडलके। **सामग्री**: राजभोगमैं तरमेवा।

कार्यालयके लिये: दर्शन समयकौ फेरफार तथा पाछली रातकी विगत लिखवाय देनी।

मार्गशीर्ष सुद १: नित्यक्रम।

मार्गशीर्ष सुद २: नित्यक्रम।

मार्गशीर्ष सुद ३: नित्यक्रम। सामग्री: **राजभोग**की अनसखडी: अडदीया पाक। सखडी: तुवर दालकौ वारा।

मार्गशीर्ष सुद ४: नित्यक्रम।

मार्गशीर्ष सुद ५: नित्यक्रम। **शयनभोग**: बाजरीके रोटला (८-१०), बैंगनकौ भरता, गुडकी गोली, छौंक्यौ दही।

मार्गशीर्ष सुद ६: नित्यक्रम।

मार्गशीर्ष सुद ७: **श्री बडे देवकीनन्दनजीकौ उत्सव** (वि.सं. १६३४)। **तोरण** (आसोपालव - गलगोटा)।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। कुलह-तनीया श्वेत, वागा-मोजाजी आसमानी (कामवनमैं मेघश्याम आसमानी लिखी है, रोयल ब्लू), पटका लाल किरणकौ। कुलह जडाऊ, सब आभरण हीराके। श्रृंगार इकहरा भारी, कंठा-हार-चंपकली-तोतापदक आदि।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं बूंदी, जलेबी, सिखरनवडी, मुरब्बाकी कटोरी, कोई भी १ रायता, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी। **दूध, खीर, बिलसारु केसरी**। सखडीमैं तीनकूडा, धोवादाल, केसरी पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, कचरिया, भुजैना, गाँठिया। **उत्थापन**: अलग-अलग छोटे डबरान्मैं गन्नाकौ रस, केला तथा नारंगीके बिलसारु।

सामग्रीक्रममैं बदलाव: ❖श्रृंगारके दर्शनकौ क्रम चलै उतने दिन **खीरकौ डबरा श्रृंगार-भोगमैं ही आय जावै** (घडी १० मिनिट), राजभोगमैं खीर नहीं ❖आजसू डोल ताँईं राजभोगमैं २-२ गुडकी

गोली तथा पापड शुरु ❖आजसू श्रीनाथजीके पाटोत्सव ताँईं उत्थापन भोगमैं गन्नाकौ रस भी शुरु। **सेवाक्रममैं बदलाव**: ❖दुहैरा फरगुल तथा मोजाजी शुरु ❖मंगलासू दीवालगिरी बँधै, शैय्याजीके उपर २ रजाई तथा शैय्याजीके नीचे एक गद्दल भी शुरु ❖मंगला-शयनमैं नित्य आरतीके सब खंड जुडैं ❖आजसू वसंत पंचमीके एक दिन पहले ताँईं **सुबहके शंखनाद ६:४५ बजे होवैं**। सुबहके दर्शन-समयमैं बदलाव होवै (मंगला भीतर, श्रृंगार ८:४५ सू ९, राजभोग १०:१५ सू १०:३०) ❖आजसू श्रृंगारके दर्शन ताँईं श्री...जीके चरणारविन्द तथा कटि तककौ श्रीअंग फरगुलसू ढके रहैं, श्रृंगारके मालाजी भी फरगुलके उपरसू ही आवैं। दर्शनकौ टेरा आये पीछै माला बडी करते समय फरगुल सरकाय चाकदारके पीछैसू आवै सो जानोगे ❖आज मंगलासू पादुकाजी मंगलासू शयन पर्यंत पूरे वस्त्र धरैं, शयनवत् तथा आतमसुखके उपर एक और रजाई भी शुरु (यदि गरमी अधिक होय तो खुले रख सकैं)। संध्या समय जब श्रीपादुकाजीकी सेवा होय तो आतमसुखके नीचे सफेद सूतराउ वस्त्र आय जाय। **कीर्तन**: पूरे दिन श्रीगुसाँईजीकी बधाई।

जानकारीके लिये: कामवनमैं इनके पादुकाजी बिराजैं यासू भोग, तिलक/आरतीकौ क्रम होवै।

——:श्रृंगार दर्शनकौ क्रम:——

श्रृंगार भये पै दोनों आरसी दिखाय सिंहासन पर ही बीडाकी तपकडीके पीछे पधराय राखनी । तुलसी समर्पण कर, झारीजी भर श्रृंगार भोग धरिये, यामैं तुलसी पत्र आवै (कामवनमैं या समय धूप-दीप होवैं, सूरतमें नहीं)। विज्ञप्ति कर १० मिनिट घडी दिखानी। समय भये आचमन करवाय, १ बीडा तथा मिठाईकी कटोरी छन्नासू ढाँकके बीडाकी तपकडीमैं पधराय फरगुलके उपरसू फूलकी माला धरानी। सिंहासनके खिलौना तथा खंड-चौपडकी चौकी (बगली तकीया, खिलौनाकी तपकडी नहीं)लगाय दर्शन खोलने, शीतकाल होयवेसू श्रृंगारके दर्शनमैं वेत्र नहीं धरैं। टकोरा कर छोटी आरसी पाससू दिखायके स्थान पर पधराय देनी, बडी आरसी पाससू दिखाय सिंहासन पर खोलकै (दर्शनीन्की तरफ मुख करके) पधराय देनी। डाँडेकी ८ बातीकी आरती कर पुन: बडी आरसी दूर तथा पाससू दिखाय स्थान पर पधराय देनी। ता पाछैं, झारीजी बडे कर लेने, मिठाई तथा बीडा सिंहासन ढँके ही राखने, तपकडीके बगलमैं पधराय देने। दोनों झारीजी भरैं इतनेमैं सेवक-परचारक चौकी-खंड-खिलौना सराय लेवैं। खुले दर्शनमैं दोनों झारीजी पधराय टेरा लेनो। मालाजी बडी कर, झारीजीन्के नालचा तथा मिठाईके ढकना हटाय, भोगवस्त्र लगाय राजभोग धरिये।

——❖——❖——❖——

मार्गशीर्ष सुद ८: **श्रृंगार**: कुलह-वस्त्र परचारगीके, जोडकी जगह जरीकौ घेरा। सब आभरण पुखराजके।

मार्गशीर्ष सुद ९: **पाछली रात - पहली।**

श्रृंगार: नित्यक्रम।

सामग्री: **राजभोग**: गुडकौ चूरमा, मुरब्बाकी कटोरी। **शयनभोग**: बाजरीके रोटला (८-१०), बैंगनकौ भरता, गुडकी गोली, छौंक्यौ दही।

सेवाक्रम: आज सुबहकौ सेवाक्रम जल्दी होवै - शंखनाद सुबह ४:४५ बजे, श्रृंगार आरती तारेकी छायामैं होवै (६:३० पहले), राजभोगके दर्शन ८-८:४५। साँझकी सेवा नित्यवत्। **३ पाछली रातमैं यही सेवाक्रम**।

भान-भावना: प्रभु बेगे जागके व्रजभक्तन् को चीर-हरण करवे पधारैं या भावसू पाछली रातकौ क्रम है सो जानोगे।

मार्गशीर्ष सुद १०: नित्यक्रम।

मार्गशीर्ष सुद ११: मोक्षदा एकादशी (गीता जयन्ती)। **पाछली रात - दूसरी।**

श्रृंगार: श्रृंगार कुंडलके - वागा फरगुल भारी।

सामग्री: राजभोगमैं खजूरके लड्डू अथवा बरफी, मुरब्बाकी कटोरी, एकादशीकौ सीधा, तरमेवा।

मार्गशीर्ष सुद १२: **संक्रांति लग गई होय तौ**: श्रृंगार कुंडलके, किरणकौ दुमाला, वस्त्रकौ नियम नहीं।

सामग्री: राजभोगमैं पहली छोटी चौकी(विगत पीछै वाँच लेनी)।

संक्रांति न लगी होय तौ: श्रृंगार-सामग्रीमैं नित्यक्रम।

मार्गशीर्ष सुद १३: **पाछली रात - तीसरी।**

श्रृंगार: नित्यक्रम।

सामग्री: राजभोगमैं अडदीया पाक, मुरब्बाकी कटोरी। यदि १२ कू चौकी आई होय तो आज राजभोगमैं खिचडी, घीकी कटोरी, पापड, अचार (खिचडीके थालमैं भी घीसू कौर सान्यौ जाय)।

मार्गशीर्ष सुद १४: संक्रांति लग गई होय तौ **श्रृंगार**: नित्यक्रम। **सामग्री**: उत्थापन/संध्या भोगसू पहली बडी चौकी (विगत पीछै वाँच लेनी)। संक्रांति न लगी होय तौ: सब नित्यक्रम।

मार्गशीर्ष सुद १५: **श्रृंगार**: जडाऊ टिपारा या कुलहके, वस्त्र मार्गशीर्ष सुद ७ (आसमानी)।

सामग्री: बूंदी, मुरब्बाकी कटोरी, तरमेवा। **राजभोगमैं दुहैरा माखन-मिसरी आवैं**, फिर बंद।

❖❖❖

पौष

❖❖❖

धनकी संक्रांति (धनुर्मास आरंभ): प्रतिवर्ष १३, १४ या १५ दिसम्बरकू धनकी संक्रांति आवै है, ता दिनसू धनुर्मास आरंभ होय। **धनकी संक्रांतिके दिन मंगलासू लेके मकर संक्रांति तक नित्य मंगलाके थालमैं अन्य सामग्रीके साथ सुहाग-सोंठकी २ चक्की भोग आवैं।**

नौंध: पंचम गृहकी प्राचीन रीति है कि जितनी सुहागसोंठ एक साथ सिद्ध होय उतनी सब जितने दिन तक भोग आवै उतने दिन कोई भी सेवककू बँटे नहीं परंतु स्वरूपन्की (वल्लभकुलके बालक) इच्छा होय तो आप वाकू अरोग सकैं।

पौष वद १ या २: पहले दिन वार सुंदर होय (रवि या मंगल वार न होय) तौ **अभ्यंग**। वार सुंदर नहीं होय तौ दूसरे दिन अभ्यंग करनौ। जा दिन अभ्यंग करैं वा दिन **श्रृंगार**: वस्त्र पीले छापाके, कुलह कसूंबी। **कीर्तन**: आजसू सब समय श्रीगुसाँईजीके उत्सवकी फीकी बधाई शुरु।

पौष वद ३: नित्यक्रम। **सामग्री**: रावि/मंगल वार न होवै तौ राजभोगमैं उडद दालकौ वारा।

पौष वद ४: नित्यक्रम। कार्यालयके लिये: श्रीगुसाँईजी उत्सवके दर्शनकौ समय लिखवाय देनौ।

पौष वद ५: नित्यक्रम। **शयनभोग**: बाजरीके रोटला (८-१०), बैंगनकौ भरता, गुडकी गोली, छौंक्यौ दही।

पौष वद ६: नित्यक्रम। नौंध: आजसू जलेबी उत्सव ताँई लाल, गुलाबी, केसरी, पीले आदि वस्त्र ही धरने, श्याम, कत्थई आदि नहीं। **कीर्तन**: आजसू झाँझ सहित बधाई शुरु।

पौष वद ७: नित्यक्रम।

पौष वद ८: **श्रृंगार**: पाग-वागा लाल, सब आभरण पिरोजाके। विशेष: जलेबी उत्सवके राजभोग दर्शनमैं सब स्वरूप फूलमाला धरैं यासू आज ही फूलघरीयान्कू सूचना दे देनी।

जानकारीके लिये (कीर्तन): कामवनमैं आज श्रृंगारभोग आयेसू राजभोग धरैं तकमैं ***मूलपुरुष*गायौ जाय**। बीचमैं श्रृंगार आरती भये पै, *मूलपुरुष*रोकके, एक कीर्तन पलनाकौ होवै। टेरा आये पुन: *मूलपरुष*को गान शुरु होवै। विशेष: संभव होय तौ यह क्रम सूरतमैं भी करवानौ।

पौष वद ९: **श्रीगुसाँईजीकौ उत्सव** - जलेबी उत्सव (वि.सं. १५७२)। **थापा-बंदनमाल** (आसो.-गल.)।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। वागा लाल दरियाई - सुनहरी छापाके (जरीके भी धर सकैं), फरगुल भारी। कुलह, तनीया, पटका केसरी। **श्रृंगार दुहैरा, तिलक-अलकावली दुहैरा**।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं: जलेबी, बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी, सिखरनवडी, मैदापूडी, १ रायता, तरमेवा, बिलसारु, नींबू-आदापाचरी। सखडीमैं: तीनकूडा, धोवादाल, केसरी पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, भुजैना। **दूध, खीर आदि सब केसरी**। **उत्थापन**: अलग-अलग छोटे डबरान्मैं गन्नाकौ रस, केला तथा नारंगीके बिलसारु।

विशेष: आज एक दिन **प्रात: शंखनाद ७:१५ बजे**, मंगलाके दर्शन खुलैं ८-८:४५, श्रृंगार भीतर, राजभोग/तिलक १२:३०। साँझकू सेवा नित्यवत्।

सेवाक्रम: राजभोग धरि तिलक, चूनकी आरती आदिकी तैयारी करि लेनी। राजभोगके दर्शनसू पहले माला धराय बगली-तकीया, खिलौनाकी तपकडी तथा सिंहासनके खिलौना माँढि दर्शन खोलिये - खँड तथा सुजनी अभी नहीं लगैं। सब आरसी पास-दूरसू दिखाय शंख-टकोरा शुरु करवाईये। दंडवत् करि श्री...जी तथा अन्य सभी स्वरूपन्कू तिलक (भेट नहीं) करि मुठिया वार चूनकी आरती थालीकी करिये। आरती पीछै टेरा ले खंड-सुजनी-चौगान आदि लगाय, माला बडी करि, तृष्टि पधराय पुन: दर्शन खोलिये, यदि कीर्तनिया होवै तो या समय आशीषको एक कीर्तन होवै। कीर्तनिया न होवै तौ २-५ मिनिट खोलि, टेरा लै अनवसर करिये। शामकू नित्यक्रम।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖नित्यकी थालीकी आरती बंद, राजभोगमैं भी डाँडेकी आरती होवै। लिख्यौ होवै तौ थालीकी आरती उतरै। **कीर्तन**: पूरे दिन झाँझसू **जन्माष्टमीकी बधाई**।

पौष वद १०: श्रृंगार परचारगीके - वस्त्र, कुलह अगले दिनके, तनीया नयौ। मोरपंखके जोडकी जगह जरीकौ घेरा धरनौ। सब आभरण पन्नाके। बाकी नित्यक्रम।

पौष वद ११: सफला एकादशी। **श्रृंगार**: कुंडलके। आज चाकदारके उपर **फतवी** (बिना बाँहकी बंडी) धरैं, पटका फतवीके उपरसू धरनौ। सूथन-फतवी एक रंगके - अन्य सब वस्त्र, तनीया तथा श्रीमस्तक पै दूसरे रंगके और पटका तीसरे रंगकौ।

सामग्री: राजभोगमैं एकादशीकौ सीधा तथा तरमेवा।

विशेष: खेलके दिनके लिये सफेदी तथा खिलायवेके वस्त्र (खंदक, मोहरा, लालनके तथा पादुकाजीके वस्त्र) की तैयारी करनी। पिछले सालके जितने वस्त्र सेवामैं लेवे लायक होवैं वो सब राखि, जो नये सिद्ध करायवे जैसे होवैं वे बनवे दे देने। नौंध: सिंहासन, खंड तथा खिलायवेके वस्त्रन्की ३-३ जोड बनवानी।

पौष वद १२: नित्यक्रम। **सामग्री**: धनकी संक्रान्ति लग गई होय तौ राजभोगमैं छोटी चौकी।

पौष वद १३: नित्यक्रम। **सामग्री**: यदि १२ कू चौकी आई होय तौ आज राजभोगमैं खिचडी, घीकी कटोरी, अचार, पापड (नित्यसू अलग)। खिचडीके थालमैं भी घीसू कौर सान्यौ जाय।

पौष वद १४: नित्यक्रम। **सामग्री**: यदि धनकी संक्रान्ति लगी होय तौ उत्थापन/संध्या-भोगसू बडी चौकी।

पौष वद ३०: **श्रृंगार**: टिपारा या कुलहके। **सामग्री**: राजभोगमैं तरमेवा।

पौष सुद १: नित्यक्रम।

पौष सुद २: नित्यक्रम। **शयनभोग**: बाजरीके रोटला (८-१०), बैंगनकौ भरता, गुडकी गोली, छौंक्यौ दही।

पौष सुद ३ या ४: पहले दिन वार सुंदर होय (रवि या मंगल वार न होय) तौ **अभ्यंग**। वार सुंदर नहीं होय तो दूसरे दिन अभ्यंग करनौ। जा दिन अभ्यंग होवै वा दिन **श्रृंगार**: कुंडलके, **फतवी धरैं**।

सामग्री: जा दिन अभ्यंग करैं ता दिन राजभोगमैं उडदकी दालकौ वारा।

पौष सुद ५: नित्यक्रम।

पौष सुद ६: नित्यक्रम।

पौष सुद ७: नित्यक्रम। **सामग्री**: राजभोगकी अनसखडी: गुडकौ चूरमा। सखडी: रतालूके भुजैना।

पौष सुद ८: नित्यक्रम।

पौष सुद ९: नित्यक्रम।

पौष सुद १०: नित्यक्रम।

पौष सुद ११: पुत्रदा एकादशी। **श्रीगिरिधरजी महाराजकौ उत्सव** (वि.सं.१७७८)।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। वागा-कुलह श्रीगुसाँईजीके उत्सवके(दरियाई या जरीके लाल - सुनहरी छापावाले, कुलह केसरी)। श्रृंगार इकहरा, सब आभरण हीराके।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं: बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी,तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु तथा **एकादशीकौ सीधा**। सखडीमैं पाटिया, रोटी।

कीर्तन: सब दिन झाँझसू श्रीगुसाँईजीकी बधाई।

पौष सुद १२: **श्रंगार**: किरणकौ दुमाला, वस्त्रकौ नियम नहीं। शयनमैं भी किरणकौ दुमालो ही रहै।

सामग्री: राजभोगमैं वाराभांत छोटी चौकी।

पौष सुद १३: नित्यक्रम। **सामग्री**: राजभोगमैं खिचडी, घीकी कटोरी, अचार, पापड (नित्यसू अलग)। खिचडीके थालमैं भी घीसू कौर सान्यौ जाय।

पौष सुद १४: नित्यक्रम। **सामग्री**: उत्थापन/संध्या भौगसू वाराभांत बडी चौकी।

पौष सुद १५: **श्रृंगार**: कुंडलके। **सामग्री**: राजभोगमैं तरमेवा।

विशेष: आज चाँदीके खिलौना, सिंहासनके पाया आदि स्वच्छ करवाय लेने।

❖❖❖ मकर संक्रान्ति ❖❖❖

(प्रति वर्ष तारीख **१३, १४ या १५ जनवरी** कू मकर संक्रान्ति आवै)

इन दिनन् मैं चाँदीके पतंग खंड पै सजैं। कागजके पतंग निजमंदिर तथा तिबारीके द्वार पै तोरणवत् बँधैं, सिंहासन-पिछावई पै नहीं।

भोगी संक्रान्ति (मकर संक्रांतिकौ अगलौ दिन): **श्रृंगार**: **अभ्यंग**। किरणकौ दुमाला शयनमैं भी), वस्त्र लाल। सब आभरण खुलते। विशेष: यदि भोगी या मकर संक्रान्तिके दिन कोई अन्य उत्सव भी आय जावै तो श्रृंगार संक्रान्तिके ही होवैं। सामग्रीमैं दोनों क्रम आवैं।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं गुडकी थूली, मुरब्बाकी कटोरी, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी। सखडीमैं रायता, उडकी दालके चीला (मद्रासी ढोसा), चीलान्के साथ घीकी कटोरी, संधाण, गुडकी गोली तथा नमककी कटोरी आवैं (अनसखडीसू अलग)।

मकर संक्रान्ति: **श्रृंगार**: वागा-वस्त्र श्रीगुसाँईजी उत्सवके (दरियाई या जरीके लाल - सुनहरी छापावाले), कुलह केसरी। सब आभरण हीराके, हल्के इकहरा।

सामग्री: **सुहागसौंठ आज मंगला ताँई** आवै, पीछे बंद (जितने बचे होवैं उतने सब साथमैं धर देने)। यदि पुण्यकाल सुबहमैं होवै तो राजभोगमैं और यदि साँझकू होवै तो शयनभोगमैं **संक्रान्तिके भोग**

अनसखडी: तिलके लड्डू (गुड तथा खांडके २०-२० नग), सात धानकौ मीठौ खिचडा (गेहुँ, जुवार, बाजरा, चावल, मूंग, तुवरदाल, चनादाल), बूंदी, माखनवडा अथवा बूराबुरकी (कामवनमैं माखनवडा और दहीथरा दोनों लिखे हैं), मुरब्बाकी कटोरी, गुडके पूआ (२० नग), केसरी खीर, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी।

सखडी: पाटिया, धोवादाल, तीनकूडा, पूडी-भुजैना आदि। **पुण्यकाल साँझ**कू होय तो राजभोगमैं: बूंदी, सकलपारे, तरमेवा, केसरी खीर (ता दिना शयनमैं भी खीर अरोगैं)। पण्यकालके समय भोगकी घडी नित्यवत्।

सेवाक्रम: जा समय पुण्यकाल होय ता समय आरती थालीकी। तिलवा भोग सरे पै गादीजीकू भोग आयकै ही बँटैं। भोग सरे पीछै सभी पूआ सेवकन्मैं बँटैं। **कीर्तन**: संक्रान्तिके कीर्तन।

जानकारीके लिये: आज पुण्यकालके समय कामवन तथा श्रीगोविन्दजीकी हवेलीमैं (श्रीमहाप्रभुजी तथा श्रीगुसाँईजीके सेव्य निधिस्वरूप होयवेसू) श्रीनाथजीके भावनाजी पधारैं। तिनकू सब भोग तथा सुहागसौंठ न्यारे भोग आवैं, घडी ड्यौढी रहै।

❖❖❖❖❖❖

महा

❖❖❖

महा वद १: नित्यक्रम। कार्यालयके लिये: पाटोत्सवके दर्शन समय लिखवाय देने।

महा वद २: नित्यक्रम। **शयनभोग**: बाजरीके रोटला (८-१०), बैंगनकौ भरता, गुडकी गोली, छौंक्यौ दही।

महा वद ३: **श्रृंगार**: पाटोत्सव ताँईं लाल, पीले, गुलाबी आदि वस्त्र आवैं। वार सुंदर होय (रवि या मंगल वार न होय) तौ **अभ्यंग**। जा दिन अभ्यंग होवै ता दिन **श्रृंगार**: कुंडलके, फरगुल भारी।

सामग्री: जा दिन अभ्यंग करैं ता दिन **राजभोग**की अनसखडी: सेवके लड्डू (केसर आदि गरम मेवा वाले)। सखडी: उडदकी दालकौ वारा। कौर उडदकी दालसू सान्यौ जावै। थालमैं २ नींबूके ४ टूक धरने। **कीर्तन**: आजसू पाटोत्सव निमित्त **जन्माष्टमीकी बधाई झाँझसू शुरु**।

नौंध: वस्त्र तथा कीर्तनकौ क्रम तौ आजसू ही प्रारंभ होवै। आजके दिन वार सुंदर नहीं होवै तौ अभ्यंग, कुंडलके श्रृंगार तथा सामग्रीकौ क्रम चतुर्थीकू करनौ। विशेष: शयन पीछै पाटोत्सव निमित्त **सिंहासन आदिके पाये स्वच्छ करवाय लेने**।

महा वद ४: अगले दिन वार सुंदर नहीं होय तौ अभ्यंग, कुंडलकौ क्रम आज करनौ।

महा वद ५: **श्रृंगार**: वस्त्र लाल, सब आभरण पिरोजाके। फरगुल भारी। विशेष:सेवा भये सोनेके झारीजी निकाल लेने।

महा वद ६: पाल हवेली, सूरतमै बिराजते **श्रीगोकुलचन्द्रमाजीकौ पाटोत्सव**। थापा-शहनाई-तोरण(गल. आसो)।

(वि.सं.२०६२, श्री शुभ मिति (व्रज) महा वद ६, शुक्रवार तदनुसार दिनांक २०/०१/२००६ (ई.स.) के दिन नवनिर्मित हवेलीमैं पू. पा. गो. श्री१०८श्रीद्वारिकेशलालजी महाराज (कामवन-सूरत)नै श्रीगोकुलचन्द्रमाजी प्रभुकू प्रथम वार पाट पधराय सेवाक्रम प्रारंभ कियौ सो **प्रथम पाटोत्सव**। वि.सं.२०६५ मैं कामवनसू पादुकाजी पधारे हते।)

श्रृंगार: **अभ्यंग**। वागा-कुलह केसरी नये अथवा जन्माष्टमीके (जामदानीके), तिलक-अलकावली दुहैरा तथा श्रृंगार दुहैरा (कंठा, तोतापदक, दुगदुगी आदि सब धरैं)। फरगुल भारी।

सामग्री: **राजभोगमैं** अनसखडी: बूंदी, जलेबी, सिखरन वडी, मुरब्बाकी कटोरी, १ रायता, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी - **दूध, खीर, बिलसारु केसरी**। सखडी: ४ भात,तीनकूडा, धोवादाल, केसरी पाटिया, छाछवडा, पापड, पूडी, कचरिया, भुजैना, गाँठिया, रोटी (संभव होय तौ)। विशेष: आज एक दिन **प्रात: शंखनाद ७:१५ बजे**, मंगलाके दर्शन खुलैं ८-८:४५, श्रृंगार भीतर, राजभोग/तिलक १२:३०। यदि **साँझकू मनोरथ होय तौ** शंखनाद, दर्शन समय तथा संध्या-आरती पीछै श्रृंगार कब और कितने बडे होवैं ताकी आज्ञा बिराजमान स्वरूपसू ले लेनी। **सेवाक्रम**: मंगलासू शयन तक सब आरती थालीकी होवैं - **राजभोगमैं चूनकी मुठिया वाली** तथा अन्य सब समय चाँदीके दीवला वाली। (तिलककी तैयारी: राजभोग धरिकै एक तपकडीमैं **कंकू, अक्षत, २ बीडा** तथा वल्लभकुल स्वरूपन्की गिनती करि **भेट**के सिक्का पधराय तैयारी कर लेनी। आरतीके लिये चूनकौ दीवला तथा चार मुठिया - कंकू लगाय तैयार कर लेने। न्यौछावरके रुपिया भी कार्यालयसू मंगवाय लेने।) राजभोग सरे पै आचमन कराय, बीरी अरोगाय सब स्वरूपन्कू फूलमाला धरिये। सिंहासन पै बगली-तकीया, खिलौना माँढ, दोनों खिलौनाकी तपकडी पधराईये, अभी खंड-सुजनी नहीं आवैं। दर्शन खोल छोटी-बडी सब आरसी यथाक्रम पास/दूरसू दिखाय दंडवत् करि **शंख-टकोरा-घंटा** शुरु करवाईये। सर्वप्रथम **श्री...जीकू कंकूकौ तिलक-अक्षत** करि दो बीडा कंकूमैं कोने डुबाय गादी पै दोनों तरफ पधराईये। अन्य **सभी स्वरूपन्कू तिलक** करि तिलककी थाली सिंहासन पै झारीजीके पीछै पधराईये। सब स्वरूपन्की ओरसू श्रीफल भेट होवै, दंडवत् कर मुठिया वारि **चूनकी आरती, न्यौछावर** करि शंख-टकोरा रखाय टेरा लीजिये। सभी श्रीफल सिंहासनके नीचे सरकाय (श्रीफलके उपुकी भेट उठाय, खासा कर तिलककी थालीमैं पधराय देनी) फूलमाला बडी करि, खंड-सुजनी आदि नित्यवत् लगाय २-५ मिनिट दर्शन खोल टेरा ले अनवसर कराईये। साँझकू सेवा नित्यवत्। **कीर्तन**: सब दिन झाँझसू जन्माष्टमीकी बधाई।

महा वद ७: **छप्पनभोगकौ उत्सव** (पाल हवेली, सूरत) । तोरण (अगले दिनके सुंदर होवैं तो वही रहवे देने)।

वि.सं. २०७२, रविवार तदनुसार दिनांक ३१/०१/२०१६ (ई.स.)में श्रीद्वारिकेशलालजीके मनोरथ-स्वरूप हवेलीके दस वर्ष पूर्ण होवेके अवसर पै गोविन्दजी हवेली, सूरतमैं बिराजते श्रीनवनीतप्रयाजीकू पाल हवेलीके बगलवाले मैदानमैं पधरायके दोनों स्वरूपन्कू साथमैं छप्पनभोग अरोगायो हतौ। या शुभ प्रसंग पै पंचम गृहके कामवन, भावनगर आदिसू सभी बालक तथा अन्य घरन्के अनेक वल्लभकुल बालक एवं बीकानेर, जयपुर, सूरत मुंबईसू सजातीय वर्ग उपस्थित रहे हते।

श्रृंगार: वस्त्र, कुलह केसरी - श्रृंगार इकहरा, भारी (आज भी उत्सव होयवेसू परचारगी नहीं)। श्रीमस्तक पै मोरपंखकौ जोड।

सामग्री: **राजभोग**मैं अनसखडी: बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी, १ रायता, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु। सखडी: तीनकूडा, धोवादाल, केसरी पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, कचरिया, भुजैना, गाँठिया। धोवादालसू ही कौर सान्यौ जाय।

सेवाक्रम: राजभोगमैं आरती थालीकी। **कीर्तन**: सब दिन झाँझसू जन्माष्टमीकी बधाई।

महा वद ८: **छप्पनभोगकौ उत्सव** (पाल हवेली, सूरत)। थापा-तोरण (आसोपालव)।

वि.सं. २०६२रविवार, तदनुसार दिनांक २२/०१/२००६ (ई.स.)के शुभ दिन श्रीद्वारिकेशलालजीके मनोरथ-स्वरूप नवनिर्मित हवेली पै गोविन्दजी हवेली, सूरतमैं बिराजते श्रीनवनीतप्रयाजीकू पाल हवेली पधरायके दोनों स्वरूपन्कू साथमैं छप्पनभोग अरोगायो ताकौ।

श्रृंगार: वस्त्र, कुलह केसरी - श्रृंगार इकहरा, भारी। श्रीमस्तक पै मोरपंखकौ जोड।

सामग्री: **राजभोग**मैं अनसखडी: बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी, १ रायता, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु। सखडी: तीनकूडा, धोवादाल, केसरी पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, कचरिया, भुजैना, गाँठिया। धोवादालसू ही कौर सान्यौ जाय।

सेवाक्रम: राजभोगमैं **आरती थालीकी**। **कीर्तन**: जन्माष्टमीके।

महा वद ९: **श्रृंगार**: नित्यक्रम। पाग-वागा गुलाबी, लाल या पीले आदि। विशेष: आज मंगलासू नित्यके झारीजी।

महा वद १०: नित्यक्रम।

कार्यालयके लिये: अभीसू ही खेलके दिनन् के लिये चंदनकी लकडी, चोवा तथा अबीर-गुलालकी व्यवस्था करि मंगवाय लेने। खेलके दिनन्की सफेदी, साज आदिकी तपास कर लेनी।

महा वद ११: षट्तिला एकादशी

श्रृंगार: श्रृंगार कुंडलके। **सामग्री**: राजभोगमैं एकादशीकौ सीधा तथा तरमेवा, **तिलकी चिकी**।

महा वद १२: **श्रीगोकुलचन्द्रमाजी** (कामवन)**कौ पाटोत्सव।**

श्रीयमुना बहुजीने वि.सं.१८७८मैं सिंहाडसू अन्नकूट अरोगाय पाछे पधराये ताकौ, सातौं स्वरूप सिंहाड पधारे हते।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। वस्त्र, कुलह केसरी - श्रृंगार इकहरा, भारी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडी: बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी,तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु। सखडी: पाटिया, रोटी। छोटी चौकी रही होय तौ वो भी राजभोगमैं ही आवै।

सेवाक्रम: राजभोगमैं आरती थालीकी। **कीर्तन**: सब दिन झाँझसू जन्माष्टमीकी बधाई।

महा वद १३: नित्यक्रम।

सामग्री: १२ कू चौकी अरोगे होवैं तौ राजभोगमैं खिचडी, पापड, घीकी कटोरी। खिचडीमैं कौर।

महा वद १४: नित्यक्रम। **सामग्री**: उत्थापन/संध्या भोगसू बडी चौकी शुरु।

महा वद ३०: **श्रृंगार**: टिपाराके, वस्त्र श्याम।

सामग्री: राजभोगकी अनसखी: गूंजा, तरमेवा। सखडी: आलूके भुजैना।

महा सुद १: नित्यक्रम। **सेवाक्रममैं बदलाव**: **❖आजसू ४ दिन वागा-फरगुल भारी धरने ❖आजसू श्रृंगारके दर्शनमैं फरगुल खुले रहेवैं, वेत्र धरैं** (आरती पीछै आरसी आडी राखि वेत्र विजय होय जावै)।

महा सुद २: नित्यक्रम। **शयनभोग**: बाजरीके रोटला (८-१०), बैंगनकौ भरता, गुडकी गोली, छौंक्यौ दही।

महा सुद ३: नित्यक्रम।

सामग्री: (मंगल-रवि न होय तौ) राजभोगमैं उडदकी दालकौ वारा (तुवरकी जगह उडदकी दाल आवै)। कौर उडदकी दालसू सनै - थालमैं २ नींबूके ४ टूक। विशेष: फागुनके रंगमेवा तैयार करि लेने।

महा सुद ४: **श्रृंगार**: वस्त्र श्रीगुसाँईजीके उत्सवके (लाल दरियाई अथवा रेशमी - सुनहरी छापावाले), किरणकौ दुमाला लाल, सब आभरण हीराके। फरगुल भारी।

विशेष: **वसंतके कलशकी सभी सामग्री भेली करवा लेनी**। आज शयन पीछै **वसंतकौ सब साज चढै, खंडके सब खिलौना भीतर धर देने**, सिंहासनके बगलकी तपकडीन्मैं सू मोतीके खिलौना भी भीतर पधराय देने, **दोनों तपकडीन्मैं लकडीके खिलौना**न्कू दो भागमैं बाँटके पधराय देने। मखमलकी तथा भारी रजाई, भारी फरगुल और जरदोशी/मखमलकी आरसी भीतर

धरि देने। गादीजीकी गौमुखी भी साटीनकी ले लेनी।

महा सुद ५: **वसंत पंचमी।** थापा-तोरण (आसोपालव)।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। वागा श्वेत पाटके लाल मगजीवाले (वस्त्रमैं साटीनकी किनारी होय वो *मगजी* कहेवाय)। कुलह तथा तनीया श्वेत मलमलके, पटका लाल। सब आभरण माणिकके, तिलक-अलकावली दुहैरा। **आजसू डोल तांईं चिबुक बन्द**, अबीर-गुलालसू खेलके दर्शनमैं मँढै। ओढनी: सफेद साटीनकौ चोखटा,२ लाल मगजीकी पाटवालौ।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडी: बूंदी, सकलपारे, बूंदीके लड्डू, मुरब्बाकी कटोरी, कोई भी १ रायता, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु। सखडी: तीनकूडा, धोवादाल, केसरी पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, कचरिया, भुजैना, गाँठिया। धोवादालसू ही कौर साज्यो जाय।

उत्सवभोग: सेवके लड्डू, गूंजा, बडी मठडी (सबके८-१० नग), मुरब्बाकी कटोरी, जीरा पूडी, संधाणा, १ रायता अथवा दहीकी कटोरी, बिलसारु। **खेल**: आजसू नित्य खेलके दर्शनमैं ढकनासू ढांक रंगमेवा बीडाके साथ पधरावने। रंगमेवा: कोपराकी छीनी करके वामैं झीनी मिसरी, बदाम, काजू आदि सूके मेवा मिले रहैं - मेवान्कू चाशनी वाले भी कर सकैं)। थोडे-थोडे दिनके रंगमेवा एक साथ तैयार करि लेने।

अधिवासन तथा वसंतकी तैयारी: राजभोग आये पहले, तिबारीमैं मंदिरवस्त्र करि वसंतकौ कलश तथा अधिवासनकी तैयारी करि लेनी। वसंतके कलशकी तैयारी: एक चौकी पै चाँदी अथवा अन्य कोई धातुकौ घडा पधराय तामैं (१)गेहुँ (२)सरसौं (३)आम (४)खजूरकी डाली - पत्ता सहित (जो कलशमैं सू अंदाजित १ फुट उपर निकली होवैं) सू घडाकौ मुख भरि देनो, खजूरके पत्तान् पै लाल बेर खौंस देने। घडाके दर्शन न होवैं या प्रकारसू वापै सफेद सूतराउ वस्त्र लपेटनौ, पत्तान्के दर्शन होते रहैं ऐसे। चौकीके बगलमैं खेलकी थाली (छोटी कटोरीन्मैं चंदन, चोवा, अबीर, गुलाल तथा खिलायवेकी चाँदीकी सली), अबीर-गुलालके चांदीके कटोरा तथा खेलकी चंदनसू भरी शीशी पधराय राखने। मिसरीकौ दोना, जलकी लोटी तथा अक्षत भी वहीं पधराय देने। अधिवासन: राजभोग धरि तिबारीमैं जाय थोडौ जल-अक्षत हथेलीमैं ले यह संकल्प करिये : *ॐ विष्णो, विष्णो, विष्णो! श्रीमद् भागवत् पुरुषोत्तमस्य वसंतोत्सव कर्तु वसंताधिवासनं अहं करिष्ये*। इतनो बोल संकल्प छोडि मिसरीकौ दोना सन्मुख करि धूप-दीप करिये। कलश तथा खेलकी सामग्री पै

चंदनकी टिपकियाँ लगाय अधिवासनकौ क्रम समाप्त करिये।

सेवाक्रम: राजभोग सरे पीछै खेलके दर्शन खोलिये (खेलको क्रम नीचै लिख्यो है)। **चंदन-चोबा-अबीर-गुलाल** या क्रमसू श्री...जीकू खिलाईये - खेल शीशीकौ। सिंहासन आदि सब खेल लैं तब वसंतकू मात्र अबीर-गुलालसू खिलावनौ, दर्शनीन् पै रंग उडावनो। फेरि, टेरा डारि उत्सवभोग धरिये - उत्सवभोगमैं एक झारीजी पधारैं (समय १५ मिनिट)। भोग सरे पै राजभोगकी तैयारी करि दर्शन खोलिये (राजभोगको क्रम पीछै लिख्यौ है)। राजभोगमैं छोटी-बडी सब आरसी देखैं, आरती थालीकी। अनवसरके समय वसंत तिबारीमैं ही बिराजै, साँझकू उत्थापनके दर्शन पहले बडौ होवै।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖नित्य मंगलाके दर्शन खुलैं - श्रृंगारके दर्शन बन्द, शंखनाद ७:१५ बजे शुरु ❖ डोल ताँई चिबुक बंद ❖ रुईके लाल आतमसुख (श्रीअंगके वस्त्र) के स्थान पै गुलाबी आतमसुख शुरु, चरणचौकी वस्त्र तथा कंदरा वस्त्र भी गुलाबी ❖ राजभोगमैं खिलौनाके पडघा पै दोनों तरफ तपकडीन्मैं लकडीके खिलौना ही आवैं, मोतीके बन्द ❖यदि गरमी होय तौ मंगला तथा शयनमैं मात्र एक फरगुल ही धरनौ ❖जरीकी चंद्रिका तथा कतरा डोल ताँईं बंद।

: खिलायवेकौ क्रम तथा खेलके प्रकार :

खिलायवेकौ क्रम: खेलके दिनन्मैं राजभोग सरे पीछै **बडी झारीजी** भरिके पधराय, बीडाकी तपकडीमैं **रंगमेवा तथा एक बीडा** ढकनासू ढांकि पधराईये। **खेलके वस्त्र** (पीठक तथा गादीजी पै खंदक, कटि तककौ आडवस्त्र, लालन आदि सब स्वरूपन्के वस्त्र)धराय, खेलकी तपकडी, हाथ पौंछवेकू पुराने वस्त्रकौ टूक तथा अबीर-गुलालके कटोरा तैयार करि **सब स्वरूपन्कू फूलमाला धराय** खेलके दर्शन खोलि या **क्रमसू खिलाइये**: ❖सर्वप्रथम दंडवत् करि सिरपेचके पास आडौ वस्त्र राखि (गुलाल आदि मुखारविन्द या नेत्र पै नहीं पडे या प्रकारसू) **चंदन**के छींटा चंद्रिका, सिरपेच आदि पै लगाय श्रीअंग तथा फूलकी मालाजी पर खिलाईये ❖सलीसू **चोबा** भी वाही प्रकार लगावनौ ❖थोडौसौ **अबीर** तीसरी अंगुली तथा अंगुष्ठमैं ले सावधानी पूर्वक श्री...जीके दोनों कपोल तथा चिबुक मांडने। बादमैं श्रीमस्तक, श्रीअंग तथा मालाजी या क्रमसू खिलाने ❖**गुलाल**सू अबीरवत् ही खिलाईये ❖पीठिका पै **चंदनकी शीशीसू** पहले मध्यमैं ता पाछैं श्री...जीकी वाम तरफ तथा अन्तमैं दक्षिण तरफ **सकलपारे बनाईये**, मोहरा पर भी याही प्रकार सकलपारे बनैं ❖चोबा, अबीर तथा गुलालसू क्रमवार पीठिका तथा गादीजीके मोहरा खेलैं ❖अन्य वल्लभकुल बालक तथा सेवकगण यदि खिलावैं तो एकदम सूक्ष्मतासू थोडौ-थोडौ श्रीमस्तक तथा मालाजी पर ही, **जो प्रथम खिलावै वो ही कपोल मंडन करै**, अन्य कोई न करै ❖शालिग्रामजी, लालन भी ताही थालीमैं सू खेलैं ❖**पादुकाजीकी खेलकी थाली अलग राखनी** (पादुकाजी कभी भी चोबासू नहीं खेलैं, अन्य तीनों वस्तु एक-एक कटोरीमैं राखनी) ❖पादुकाजी खेल लैं पाछै हाथ खासा करि **सिंहासन, खंड तथा पिछवाई खिलावने** ❖अबीर तथा गुलालके कटोरान्मैं सू आधी-आधी उडाय (कामवनमैं पतंगी रंगकी गुलाल उडै) टेरा ले सफाई करि राजभोगकी तैयारी करनी। **नौंध**: बहु-बेटी अपरसमैं भीतर ही खिलावैं ऐसौ प्राचीन क्रम है परंतु यहाँ टेरा आये पीछै,

सेवकीमैं (मात्र अबीर तथा गुलालसू) भी खिलावैं हैं सो जानोगे। खेलके दर्शनकौ टेरा ले पीठिकाकौ खंदक वैसे ही रहें, अन्य सभी खेलके वस्त्र बडे करि पीठिकाके उपर (फूलमाला पधरावें वहाँ) घडी करिके पधराय देने, लालन, शालिग्रामजी तथा पादुकाजीके खेलके आडवस्त्र थोडेसे घडी कर देने जासू रंगीन वस्त्रन्के दर्शन हो सकैं।

नित्यकौ खेल: नित्यके खेल होय ता दिन सिंहासन, खंड पुराने ही रहैं (शीशीके खेल वाले)। खेलके सब वस्त्र तथा मोहरा बदले जावैं। पीठिका तथा मोहरा पै खेलकी थालीके चंदनसू छींटा लगाय सकलपारे मंढैं। सिंहासन, खंड अबीर तथा गुलालसू क्रमवार खेलैं। अंतमैं पिछ़वाई पै अबीर (कुल ८-१०) तथा गुलाल (कुल १५-२०)की *चिडिया* बनैं, पहले मध्य, बादमैं वाम, अन्तमैं दक्षिण तरफ। ता पाछें दर्शनीन् पै थोडो-थोडो अबीर-गुलाल उडाय दर्शनको टेरा लेनो।

जानकारीके लिये: कामवनकी श्रीबृजवल्लभजीवाली प्रणालिकामैं ऐसो उल्लेख मिले है कि प्राचीनकालमैं पिछवाई तथा चंदुआ भी चंदन-चोवा-अबीर-गुलाल चारौंसू खेलते, परंतु बहुत पहले ही यह क्रम बदल गयो हतो।

शीशीकौ खेल: जा दिन शीशीकौ खेल होवै ताके अगले दिन शयन पीछै सिंहासन, खंड बदल दिये जावैं। खेलके सब वस्त्र तथा मोहरा बदले जावैं। पीठिका तथा मोहरा भी शीशीसू खेलैं एवं सिंहासन, खंड भी चारौं वस्तुन् सू क्रमवार खेलैं। खंडकू शीशीसू खिलाते समय खंडकौ वस्त्र सन्मुखमैं पधराय दो जन आमने-सामने पकडके सकलपारे मांढैं, बादमैं यह वस्त्र खंड पै धर दियौ जाय जहाँ चोबा, अबीर तथा गुलालसू भी खिलायौ जाय। अंतमैं नित्यवत् पिछ़वाई अबीर-गुलालसू *चिडिया* बनैं। ता पाछैं दर्शनीन् पै थोडे-थोडे अबीर-गुलाल उडाय दर्शनकौ टेरा लेनौ।

राजभोगजके दर्शन: डोल ताँईं राजभोगके दर्शनमैं फूलमाला तथा झारीजी खेलके ही रहैं, रंगमेवा-बीडा बडे करके उनके स्थान पै नित्यवत् बीडा पधराय देने। राजभोगमैं खंड सन्मुख पधराय अबीर-गुलालके कटोरा श्री...जी सन्मुख सिंहासनके पैंडा पै साज देने (गुलालकौ कटोरा शैय्या मंदिरकी तरफ पधरानौ)। **राजभोगमैं सुजनी नहीं बिछै**, पैंडा ही खंडके कोने तक बिछके ताके उपर चौकी, गद्दीके साथ ही गैंद-चौगान भी बिराजैं। राजभोगमैं दोनों आरसी देखैं। खेलके दिनन्मैं अनवसरके समय खेलकी तपकडी शैय्याजीके पास झारीजी आदिके साथ बिराजै।

गादीजीकू खिलायवेको क्रम: अनवसर भये पीछे गादीजीमैं आडवस्त्र बिछाय प्रसादी अबीर तथा गुलालसू मात्र मालाजी तथा आडवस्त्र पै खिलानौ - पाग पै नहीं, पिछवाई पै थोडी *चिडिया* मांडनी। वस्त्र घडी करके अबीर-गुलालके दोना सिंहासन पै पधराय गादीजीके अनवसर करने।

श्रृंगार विजय होवैं तब: आजसू डोल तांईं नित्यमैं श्रृंगार विजय (बडे) होवैं तब सभी खेले भये आभरणन्कू एक वस्त्रमैं पधराय **जलसू हल्के हाथसू साफ करिके ही आभरणकी पेटीमैं पधराने**। श्री...जीके श्रीअंग पै खेलकी कोई भी वस्तु तनिक भी न रह ऐसे सावधानीसू पाग आदि सभी बडी करि बराबर अंगवस्त्र (सूको तथा हल्को भीनो - दोनों) बाद अत्तर समर्पण करि शयनके आभरण धरने।

विशेष नौंध: नित्य शयन पीछै सब जगहसू गुलाल झड जावै(दूसरे दिन शीशीके खेल होवैं तो सिंहासन, खंडके वस्त्र बदल लेने), नित्य मोहरा तथा खेलके वस्त्र शयन पीछै बदलैं। या वजहसू पादुकाजी भी शैय्या मंदिरमैं ही पौढैं। ❖❖❖

महा सुद ६: वागाकी जोड भाई दूजकी (लाल दरियाई या रेशमके), पाग कसूंबी। सब आभरण नीलमके।

नौंध: इन दिनन्मैं जब कोई उत्सवके वस्त्र लिखे होवैं तो पुरानी जोड लेनी, जासू नई खेलवाली न होवै।

महा सुद ७: **श्रृंगार**: वागाकी जोड आसमानी (श्रीबडे देवकीनन्दनजीके उत्सव - महा वद ७ की), श्रृंगार कुंडलके।

सेवाक्रममैं बदलाव: आजसू नित्यमैं सोनाके आभरण शुरु, डोल ताँईं।

सामग्री: राजभोगमैं एक सामग्री इच्छानुसार, मुरब्बाकी कटोरी।

कीर्तन: पूरे दिन झाँझसू श्रीगुसांईजीकी बधाई।

महा सुद ८: पाग लाल, वागा देव-प्रबोधिनीके (पीले दरियाइ)।

सामग्री: रवि अथवा मंगल वार न हो तौ राजभोगमैं उडदकी दालकौ वारा (तुवरकी जगह उडदकी दाल आवै)। कौर उडदकी दालसू सान्यौ जावै। थालमैं २ नींबूके ४ टूक करि धरने।

महा सुद ९: वागा रेशमी, बाकी नित्यक्रम। विशेष: शयन पीछै सिंहासन तथा खंड बदले जावैं।

महा सुद १०: **श्रीदेवकीनन्दनजी चारभुजावाले कौ उत्सव** (श्रीयमुना बहुजीके पति) वि.सं.१७९९। थापा-तोरण।

श्रृंगार: वागा, कुलह केसरी। सब आभरण माणिकके, तिलक-अलकावली दुहैरा।

सामग्री: **राजभोग**मैं अनसखडी: मीठी कचौरी, बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु। सखडी: मेवाभात।

सेवाक्रम: राजभोगमैं आरती थालीकी। खेल शीशीकौ। **कीर्तन**: झाँझसू श्रीगुसांईजीकी बधाई।

महा सुद ११: जया **एकादशी**।

श्रृंगार: श्रृंगार कुंडलके। **सामग्री**: राजभोगमैं एकादशीकौ सीधा तथा तरमेवा।

महा सुद १२: नित्यक्रम। विशेष: शयन पीछै सिंहासन तथा खंड बदले जावैं।

महा सुद १३: **श्रीगोकुलचन्द्रमाजी (कामवन) कौ पाटोत्सव** (श्रीगोविन्द प्रभुने बीकानेरसे कामवन पधारे वि.सं. १९२८ में वाकौ)। थापा-तोरण।

श्रृंगार: वागा, कुलह केसरी। मुखारविन्दके आभरण माणिकके, तिलक-अलकावली दुहैरा।

सामग्री: **राजभोगमैं** अनसखडी: बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी, १ रायता, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु। सखडी: तीनकूडा, धोवादाल, केसरी पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, कचरिया, भुजैना, गाँठिया। या दिन धोवादालसू ही कौर साजै। राजभोगमैं खिचडीकौ थाल, घी की कटोरी तूथा २ पापड अलगसू आवैं। घीसू कौर सन्यौ जाय।

सेवाक्रम: राजभोगमैं आरती थालीकी। खेल शीशीकौ।

विशेष: शयन पीछै सिंहासन तथा खंड बदले जावैं। **कीर्तन**: पूरे दिन झाँझसू जन्माष्टमीकी बधाई।

महा सुद १४: **श्रीवल्लभजी महाराजकौ उत्सव** (वि.सं. १८६१)।

नोंध: इन्हीं श्रीवल्लभजीके लिये एक दिन श्रीनाथजीनै श्रीगोकुलचन्द्रमाजी (कामवन) कौ स्वरूप धारण कियो हतौ। अन्तकालमैं मजबूरीसू आपश्रीकू सूरत बिराजनौ पड्यौ, आपश्री नै सूरतमैं ही लीलाप्रवेश कियौ। श्रीगोकुलचन्द्रमाजी (कामवन)कौ स्मरण करकै आपश्रीनै श्रीगोविन्दजी हवेलीमैं बिराजते श्रीनवनीतप्रियाजीके आभरण श्रीगोकुलचन्द्रमाजी जैसे सिद्ध करवाये हते या वजहसू इन दोनों स्वरूपन् के कई आभरण समान हैं। गोविन्दजी हवेलीमैं सिंहासनकौ हाथी तथा क्षारदूल पंचमकुमार श्रीरघुनाथजीके समयके खिलौनाके घाटवाले हैं)।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। वागा-कुलह केसरी।

सामग्री: **राजभोगमैं** अनसखडी: अमृतरसावली, केसरी बासौंदी (१ लीटर दूध - कस्तूरी, जावंत्री, जायफल वाली), बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी,तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु। सखडी: कांजी वडा। नौंध: यदि अमृत रसावली न बन पावै तौ चन्द्रकला धरनी। यदि पहले ३ चौकी होय गई होवैं तौ आज १४ की बडी चौकी नहीं आवै।

सेवाक्रम: राजभोगमैं आरती थालीकी। खेल शीशीकौ।

कीर्तन: आज पूरे दिन झाँझसू श्रीगुसाँईजीकी बधाई गवै।

विशेष: शयन पीछै सिंहासन तथा खंड बदले जावैं।

महा सुद १५: **होरी डंडा रोपण।**

श्रृंगार: **अभ्यंग**। वागा श्वेत कसीदाके (सफेद सूतराउ वागा पै लाल रंगकी कढाईवाले), पाग श्वेत। तिलक-अलकावली दुहैरा, मुखारविन्दके आभरण माणिकके, अन्य सोनाके।

नौंध: आजसू नित्यमैं सूतराउ वागा, फागुनकी छींट आदि शुरु - रेशमी/साटीनके वागा बंद।

सामग्री: राजभोगमैं सेवके लड्डू, मुरब्बाकी कटोरी, तरमेवा, कोई १ प्रकारकौ रायता (सखडी)।

सेवाक्रम: खेल शीशीकौ। आजसू शयन दर्शनमैं एक दिन ***श्रीगोवर्धनराय लाला*** तथा एक दिन ***खेलत फाग गोवर्धनधारी*** - ये कीर्तन वारासू गवैं। आजसू शयन आरती पीछै तुरंत टेरा नहीं आवै, कीर्तनिया तथा वैष्णव पीछै जावैं, जब छाप (आखरी तुक) आवै तब कीर्तनिया दण्डवत् करैं, पाछैं टेरा लेनौ। जानकारीके लिये: कामवनमें आज सँध्या-आरती पीछै *होरी-डांडा* रुपै।

कीर्तन: आजसू धमारके अन्य रागमैं कीर्तन शुरु, **डफ भी बजवे लगै**।

❖❖❖

फागुन

❖❖❖

फागुन वद १: **श्रृंगार**: कुंडलके, वागाकी जोड लाल तोईकी।

फागुन वद २: वागा जन्माष्टमीके (कोई भी पिछले सालके - नएवाले नहीं), पाग खुलती।

फागुन वद ३: वागा रामनवमीके, पाग खुलती।

सामग्री: रवि अथवा मंगल वार न हो तौ राजभोगमैं उडदकी दालकौ वारा (तुवरकी जगह उडदकी दाल आवै)। कौर उडदकी दालसू सान्यौ जावै। थालमैं २ नींबूके ४ टूक धरने।

फागुन वद ४: वागा छापाके (फागुनके दिन वाले), पाग खुलती।

फागुन वद ५: वागा छापा या छींटके, पाग खुलती।

सामग्री: **शयनभोग**मैं बाजरीके रोटला (८-१०), बैंगनकौ भरता, गुडकी गोली, छौंक्यौ दही।

फागुन वद ६: वागा तुई, छापा या छींटके, पाग खुलती। विशेष: शयन पीछै सिंहासन, खंड भी बदले जावैं। मोजाजी आज ताँईं धरैं। आज अनवसरसू पहले छडी-गैंदवाली चाँदीकी सली निकाल लेनी।

फागुन वद ७: **श्रीनाथजीकौ पाटोत्सव** **(सतघरामैं बालकन् सौं खेलवे पधारे सो)**। तोरण।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। वागा केसरी डोरीयाके हरे चास (पाई) वाले (जरीकी किनारी सुनहरी), तनीया तथा पटका भी केसरी। श्रीमस्तक पै चीरा हरौ (आज शयनमैं भी चीरा ही रहै)। सब आभरण माणिकके, श्रृंगार इकहरा, तिलक-अलकावली दुहैरा। ओढनी: केसरी, पतंगी पाटकी (पट्टी लगी)।

सामग्री: मंगलभोग: खरमंडा। **राजभोग**की अनसखडीमैं: बूंदी तथा जलेबी (कामवनमैं जलेबी नहीं,

खरमंडा लिखे हैं), माँडा, मुरब्बाकी कटोरी, सिखरनवडी, खीरवडा, १ रायता, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी। सखडी: तीनकूडा, धोवादाल, छाछवडा, पूडी, पापड, चुखली (चकरी), कचरिया, भुजैना, गाँठिया। **दूध, खीर, पाटिया आदि केसरी**।

सामग्रीक्रममैं बदलाव: उत्थापनमैं गन्ना (पौंडा)कौ रस दुगुनो आवै, पाछै बंद।

सेवाक्रम: खेल शीशीकौ। राजभोगमैं आरती थालीकी। आजसू होली ताँईं नित्य राजभोगके दर्शनमैं फूलके २-२ छडी, गैंद आवैं जो शयनके दर्शन तक सिंहासन पै ही बिराजैं।

विशेष: शयन पीछै चित्रकी पिछवाई: **वसंत**। नौंध: यदि चित्रकी पिछवाईके दिनन्मैं एक तिथि घटी होवै तो ता तिथिकौ चित्र नहीं आवै, जो तिथि बढी होवै तौ ता तिथि पै चित्र: **कुंज**।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖उत्थापनसू दीवालगिरी, शैय्याजीके नीचेकी बिछात बन्द ❖एक फरगुल शुरु (ठंडी कम होय तौ मात्र मंगला-शयनमैं ही फरगुल)❖आजसू मोजाजी बंद, आज नहीं धरैं ❖गरमी होय तौ शीतलजलसू आचमन बन्द कर सकैं, नियम नहीं ❖आजसू खेलके दर्शनमैं *अष्टपदी* बंद।

जानकारीके लिए: कामवन तथा श्रीगोविन्दजीकी हवेलीमैं आज राजभोगके समय श्रीनाथजीके भावनाजी पधारैं। उनकू अलग भोग तथा खेलकौ क्रम होवै। पाल हवेलीमैं श्रीमहाप्रभुजी, श्रीगुसाँईजीके निधि नहीं होयवेसू यह क्रम नहीं है।

कीर्तन: पूरे दिन झाँझसू *जन्माष्टमीकी बधाई*।

फागुन वद ८: वागा श्वेत जामदानीके, पाईदार। विशेष: शयन पीछै चित्रकी पिछवाई: **आम**।

फागुन वद ९: नित्यक्रम। विशेष: शयन पीछै चित्रकी पिछवाई: **सरौं**।

फागुन वद १०: नित्यक्रम। विशेष: शयन पीछै चित्रकी पिछवाई: **गिरिराजजी**।

फागुन वद ११: विजया एकादशी। **श्रृंगार**: कुंडलके।

सामग्री: राजभोगमैं एकादशीकौ सीधा तथा तरमेवा।

विशेष: शयन पीछै चित्रकी पिछवाई: **सूरजमुखी**।

फागुन वद १२: नित्यक्रम। विशेष: शयन पीछै चित्रकी पिछवाई: **कदम्ब**।

फागुन वद १३: नित्यक्रम। विशेष: शयन पीछै चित्रकी पिछवाई: **वड**। सिंहासन, खंड भी बदले जावैं।

सामग्री: **शयनभोग**मैं बाजरीके रोटला (८-१०), बैंगनकौ भरता, गुडकी गोली, छौंक्यौ दही।

फागुन वद १४: **शिवरात्री** (शिव चौदस)। **तोरण** (आसोपालव)।

श्रृंगार: कुंडलके, **वाघंबर** (वाघके जैसे छापावाले वस्त्र) धरैं।

सामग्री: गुडपापडी, मुरब्बाकी कटोरी। उत्थापनभोगसू अंतिम चौकी।

सेवाक्रम: राजभोगमैं थालीकी आरती। विशेष: शयन पीछे चित्रकी पिछवाई: **इमली**।

फागुन वद ३०: **श्रृंगार**: कुंडलके। **सामग्री**: राजभोगमैं तरमेवा।

विशेष: शयन पीछै सिंहासन, खंड भी बदले जावैं।

फागुन सुद १: **श्रृंगार**: **अभ्यंग**, आभरण लाल (लाल मोती तथा सोनाके अमुक हार-माला आवैं), तिलक-अलकावली दुहैरा। वागा श्वेत जामदानीके, जरीकी किनारीवाले। विशेष नौंध: जितने दिन **बालकन्के खेल** होवैं उतने दिन **जरीकी किनारीवाले सफेद वस्त्र ही आवैं** (सब दिन पाई अलग-अलग रंगकी)। बहु-बेटीके खेलमैं जरीकी किनारीवाले रंगीन वस्त्र धरैं।

सामग्री: राजभोगमैं केसरी घेवर, मुरब्बाकी कटोरी।

सेवाक्रम: **आजसू वल्लभकुलके खेल शुरु** - आजसू फा.सु.७ ताँई बालक तथा बहु-बेटीन्के खेल शुरु, उतने दिन नित्य खेल शीशीकौ। शयन पीछै नित्य सिंहासन, खंड भी बदले जावैं।

फागुन सुद २: **श्रीवल्लभलालजी** महाराज (वि.सं.२०३०)को **जन्मदिन**। वल्लभकुलके खेल।

श्रृंगार: वागा, पाग केसरी। **सामग्री**: पपची, मुरब्बाकी कटोरी।

कीर्तन: श्रीगुसाँईजीकी बधाई।

फागुन सुद ३: **श्रीअनिरुद्धलालजी** बावा (वि.सं. २०३२) को **जन्मदिन**। वल्लभकुलके खेल।

श्रृंगार: वागा, पाग केसरी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडी: गूंजा, मुरब्बाकी कटोरी। सखडी: मेथीके भुजैना, खजूरकी मीठी चटनी, हरी चटनी।

कीर्तन: श्रीगुसाँईजीकी बधाई।

फागुन सुद ४: नित्यक्रम। वल्लभकुलके खेल। **सामग्री**: राजभोगमैं चूरी, मुरब्बाकी कटोरी।

फागुन सुद ५: नित्यक्रम। वल्लभकुलके खेल। **सामग्री**: राजभोगमैं दहीथरा, मुरब्बाकी कटोरी।

फागुन सुद ६: नित्यक्रम। वल्लभकुलके खेल। **सामग्री**: **राजभोग**मैं मगद, मुरब्बाकी कटोरी। **शयनभोग**मैं बाजरीके रोटला (८-१०), बैंगनकौ भरता, गुडकी गोली, छौंक्यौ दही।

फागुन सुद ७: नित्यक्रम। वल्लभकुलके खेल। **सामग्री**: राजभोगमैं दुधलामृत, मुरब्बाकी कटोरी (फा.सु. २ सू ७ सामग्रीकौ नियम नहीं है यासू इनमैं फेरफार होय सकै है)। विशेष: शयन पीछै सिंहासन, खंड बदलैं।

फागुन सुद ८: **श्रृंगार**: **अभ्यंग**। वागा पतंगी तोईके, श्रीमस्तक पै तीन चंद्रिकाकौ टिपारा, कुंडल।

सामग्री: रवि अथवा मंगल वार न हो तौ राजभोगमैं उडदकी दालकौ वारा (तुवरकी जगह उडदकी दाल आवै)। कौर उडदकी दालसू सान्यौ जावै। थालमैं २ नींबूके ४ टूक धरने।

सेवाक्रम: *फीके खेल* शुरु (सब स्वरूप, पीठिका, मोहरा ही चारौं वस्तुन्सू खेलैं। सिंहासन-खंड मात्र अबीर-गुलालसू ही खेलैं)।

फागुन सुद ९: नित्यक्रम। खेल फीके। **सामग्री**: रवि/मंगल न होय तौ राजभोगमैं उडदकी दालकौ वारा।

फागुन सुद १०: नित्यक्रम। खेल फीके। विशेष: शयन पीछै सिंहासन, खंड बदलैं - **कुंजकी पिछवाई चढै**।

कार्यालयके लिये: आज दोपहरकू कुँजकी तैयारी करवाय लेनी, माटीकी ३ मथनी मँगवाय लेनी।

फागुन सुद ११: **कुँज (आमलकी) एकादशी।** थापा-तोरण।

श्रृंगार: मुकुट सोनेकौ। कंठवस्त्र पतंगी, सूथन तथा तनीया श्रीनाथजीके पाटोत्सवके (केसरी डोरीया), काछनी तथा पीताम्बर लाल, पीले, गुलाबी या केसरी। तिलक-अलकावली दुहैरा। सब आभरण लाल (लाल मोती तथा सोनाके अमुक हार-माला आवैं) या सोनाके। **अन्य स्वरूपन् के वस्त्र श्रीनाथजीके पाटोत्सवके**। विशेष: श्रंगार बडे होवैं तब **कटिमेखला, काछनी, कंठवस्त्र, सूथन रहैं**, शयनके आभरण धरैं, श्रीमस्तक पै **पतंगी ग्वालपगा**। पीठिका वालौ पटका दक्षिण (दाएँ) श्रीहस्तके नीचै तथा वाम (बाएँ) स्कंधके उपरसू होतौ भयो पीठिका पै आवै।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडी: एकादशीकी सामग्री, बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी, तिलवडी अथवा तिलकी चिकी, १ रायता, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी आवैं। सखडी: तीनकूडा, धोवादाल, केसरी पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, कचरिया, भुजैना, गाँठिया। **उत्सवभोग**: सेवके लड्डू, फेनी (चंद्रकला), केसरी पेडा (८ नग - १ लीटर दूध), तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, मेदापूरी, संधाणा, दहीकी कटोरी, कचनारकौ अथवा कोई भी एक रायता, गुलाबकौ सीरा, बिलसारु।

कुंजकी तैयारी: श्रृंगार होते रहैं तब अथवा राजभोग धरिकै कुंजके चारौं चौखटा साथमैं बाँधि (फूलकी सैरवालौ चौखटा आगैकी तरफ आवेगौ यह ध्यान रहै) तिबारीमैं पधरानी, कुंजकी छत निजमंदिरमैं पधरायकै बँधै। सिंहासनके ३ कलशके लिये पत्तावाली डाली भी संभाल लेनी।

सेवाक्रम: आजसू डोल ताँई नित्य श्रृंगार भये पै (आरसी दिखायवेसू पहले) २ गुलालकी पोटरी श्री...जीकू कटि पै फेंटमैं बाँधी जाँय सो श्रृंगार बडे होते समय बडी होवैं (जानकारीके लिये: यह क्रम सूरतकौ है। कामवनमैं तौ खिलाते समय (खुले दर्शनमैं) श्री...जीके पटकामैं थोडी गुलाल भरी जाय, पोटरी नहीं आवै)। राजभोग सरे पै आचमन/बीडीकी सेवा करि श्री...जीकू श्रंगार चौकी पै पधराय **कुँज निजमंदिरमैं लेनी। छत उपर धरि, सिंहासनके तीनौं कलश पै आमकी छोटी-छोटी डाली बाँधि** श्री...जीकू सिंहासन पै पधराईये। खेलकी तैयारी करि फूलकी मालाजी धराय दर्शन खोलिये, खेल शीशीकौ। सब स्वरूप, सिंहासन-खंड तथा कुँज चारौं वस्तून्सू खेलैं - पिछवाई मात्र अबीर-गुलालसू (कुँज भारी खेलै)। श्री...जी सन्मुख चौकी पै एक चाँदीकौ थाल पधराय तामैं पहले अच्छी मात्रामैं गुलाल पधराय उडावनी, पाछैं अबीर (**आज क्रम उलटौ रहै**)। रंग उडे पीछै थाल साफ करि तामैं अबीर तथा गुलाल (गुलाल शैय्यामंदिर तरफ) सफाईसू माँढि झारीजी बडी करि, एक झारीजी पधराय टेरा ले उत्सवभोग धरिये (१५ मिनिट)। समय भये भोग सराय झारीजी-बीडा नये, **फूलमाला खेलकी ही रहै**, राजभोगके दर्शनकी तैयारी करि टेरा खोलिये - आरती थालीकी।

उत्थापनसू शयन: उत्थापनके दर्शनकौ टेरा लै सोनाके मुकुटकौ पान बडौ होवै, फूलकौ आवै (मुकुटकी टोपी सोनेकी ही रहै) - फूलकी सग्गी तथा कतरा भी धरैं (जानकारीके लिये: कामवनमैं कतरा नहीं और आज वहाँ भोग-संध्या अलग होवैं यासू मुकुट उत्थापन भोग सरे पै धरैं)। संध्या-आरतीके दर्शनमैं **वेणुजी धरैं**, वेत्र नित्यवत्। श्रृंगार बडे करते समय सोनाकौ मुकुट खेल्यौ भयो ही अंदर पधरानौ (दूसरे वर्ष जब बाहर निकलै तब ही साफ होवै)। पौढाते समय फूलके मुकुट आदि मालाजीके बंटामैं पधराने।

आजसू होली ताँईं शयनके दर्शनकौ क्रम: चाँदीके २ बडे **दीवला जुडैं**। दर्शन खुलते ही प्रथम एक कटोरामैं गलाल लै (अबीर नहीं) **श्री...जीके कपोलमंडन** (चिबुक नहीं) करैं। ता पाछै, मुखियाजी थोडी गुलाल हाथमैं ले उपस्थित **वल्लभकुल बालकन् के गाल पै लगावैं**, फेरि बालक मुखियाजीकू वैसे ही लगावैं। अंतमैं वैष्णवन् पै बची **गुलाल उडाय शयनके दर्शनकौ टकोरा करनौ**। विशेष: शयन पीछै डोलके चित्रवाली पिछवाई चढै सो डोल तांईं रहै। डोलके ५ रंग (पीलौ, हरौ, नीलौ, गुलाबी, केसरी, आसमानी, जामली) ३-३ किलो तथा केसूडाके फूल मंगवाय लेने।

जानकारीके लिये: प्राचीन कालमैं श्रीगोकुलचन्द्रमाजीके घरमैं कुँज नहीं बँधती, मात्र सिंहासनके कलश पै आमके पत्ता बाँधि कुँजकौ भाव होतौ। श्रीयमुना बहुजीके मनोरथ स्वरूप श्रीगोकुलचन्द्रमाजीकी आज्ञासू कुँजकौ बृहद् स्वरूप तथा भारी खेल प्रारंभ भये। कामवनमैं आजसू होली ताँईं शयनके दर्शनमैं मशाल तथा चौपई, आरती पीछै कीर्तनियाजी *पांडे* (श्री...जीके सखा)कौ स्वांग (रूप) धरि सन्मुखमैं नाचैं।

फागुन सुद १२: **श्रृंगार**: कुंडलके। वागाकी जोड चोवाकी, सुनहरी किनारीकी। नौंध: गुलालकी नई २ पोटरी। **सामग्री**: एक इच्छानुसार सामग्री तथा मुरब्बाकी कटोरी (श्रीगोविन्दजी हवेलीकौ प्राचीन पाटोत्सव होयवेसू यह क्रम राख्यौ है)। **कीर्तन**: कुंज एकादशीसू डोलके कीर्तन।

फागुन सुद १३ तथा १४: नित्यक्रम। नौंध: श्रृंगार भये पै गुलालकी नई २ पोटरी।

फागुन सुद १५: **होली।**

श्रृंगार: **अभ्यंग**। पाग-वागा श्वेत, लाल पाईदार (वसंत पंचमी जैसे), पटका लाल। श्रृंगार माणिक या सोनाके। तिलक-अलकावली दुहैरा। नौंध: श्रृंगार भये पै गुलालकी नई २ पोटरी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडी: बूंदी, सकलपारे, गुडके पूवा, मुरब्बाकी कटोरी, १ रायता, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु। सखडी: तीनकूडा, धोवादाल, केसरी पाटिया, पापड, रोटी, पूडी, कचरिया, भुजैना, गाँठिया, **छाछवडाके स्थान पै कांजीवडा**।

सेवाक्रम: खेल शीशीकौ। राजभोगमैं आरती थालीकी। फूलके छडी-गैंद आज ताईं आवैं। शयन आरतीमैं सब खंड जुडैं। **शयन आरती पीछे तुरंत दर्शन बंद नहीं होवैकौ क्रम आज ताँईं होवै,** डोलसू बंद। **शयन पीछै आज सिंहासन, खंड, पिछवाई नहीं झडैं**।

विशेष नौंध: यदि होली तथा डोलोत्सवके बीचमैं एक दिनकौ अंतर होवै तो फूलकी छडी तथा शयनमैं कपोल-मंडनकौ क्रम एक दिन बढ जावै। ऐसौ होवै तब होलीके दिन पिछवाई साफ होय जाय, डोलके अगले दिन नहीं होवै। ❖❖❖

चैत्र

❖❖❖

:**डोलकी पूर्व-तैयारी**:

डोलसू एक दिन पहले साँझकू अथवा शयन पीछै वैष्णव होवैं तौ वे, न होय तो हवेलीके सेवकन्सू ही चोकके सभी चित्रजी उतरवाय लेने अथवा रंग न लगे ऐसे ढँकवाय लेने। तिबारीकौ टेरा तथा किंवाड भी बराबर बन्द करि लेने जासू रंग मंदिरमैं कम-सू कम आवै। आज ही डोलतिबारीमैं डोल खडौ होवै (नोंध: यदि डोलके अगले दिन रवि या मंगल वार होवै तो एक दिन पहले ही डोल ठाडौ कर लेनौ)। तापै आम तथा आसोपालवके पत्ता एकदम भरचक रीतिसू बाँधे जाँय (पत्ता झुलायवेमैं बाधा न करैं ये सावधानी अवश्य राखनी), डोलमैं चँवर (फौंदना) अनिवार्य नहीं है। **डोलकी मजबूती झुलायके, वजन देके अच्छेसू परख लेनी, यामैं थोडी-सी भी चूक नहीं राखनी**। पाछैं गादी पधराय, झूल लगाय, बिछाना बिछाय डोलकी बडी पिछवाई पीछै बाँध लेनी। चौककौ बंदोबस्त भीतरसू करि (जासू कोई अनजानेमैं अपरस छुवाय न दे) सेवाके बाहर निकलनौ।

केसूडा तथा रंगन्की तैयारी: आज ही एक बडौ तपेला केसूडाकौ भी तैयार करि ढाँकके राख लेनौ (केसूडाके फूल जलमैं पधराय अच्छेसे खदकाय लेने जासू जल केसूडाके रंगको होय जाय)। चंदन भी अधिक मात्रामैं घिसवाय लेनौ (४ खेलकी तपकडी तथा डोल, पिछवाई सब खेल लैं इतनौ)। संभव होय तौ आज ही बंदोबस्तसू पहले अबीर-गुलाल (कम-सू कम ११ किलो) तथा बाकी सब रंगकी थेली भी निजतिबारीमैं तैयार करके राख लेनी, कोई जीव-जन्तु उनकू बिगाड न दे या प्रकार ढाँक देने।

चैत्र वद १ अथवा जा दिन **उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र** *उदयात्* (सूर्य उदयके समय) होय ता दिन **डोलोत्सव**।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। वागा श्वेत पाटके (वसंत पंचमी जैसे), कुलह श्वेत। **श्रृंगार भारी इकहरा**, तिलक-अलकावली दुहैरा। ओढनी: डोलमैं श्वेत पाटकी, लाल दरियाई पट्टीवाली। नौंध: श्रृंगार पीछै गुलालकी २ पोटरी।

सामग्री: **डोल**के पहले २ भोग: गूंजा, मठडी (नित्यसू बडी), बूंदी, सकलापरे, सेवके लड्डू, चन्द्रकला, इंदरसा (इन सबके २-२ नग), मुरब्बाकी कटोरी। **डोल**के बडे भोग: उपर लिखी सब सामग्री उपरान्त बाबर (२ अथवा ४ नग), तरमेवा तथा नींबू-आदापाचरी, केसरी बासौंदी तथा पेडा (३ लीटर दूधके)। उत्सवभोगकौ थाल जामैं जीरा पूडी, संधाणा, दही, कोई १ रायता (कामवनमैं कचनारकौ लिखौ है), गुलाबकौ सीरा (मुरब्बा नहीं आवे), शीतलजल, बिलसारु। नौंध: बाबरके अलावा डोलकी सभी सामग्रीन्के २०-२० नग बनाने, जामैंसू १६ डोलमैं, २ डोलके दिन राजभोगमैं तथा २ द्वितीया पाटके दिन राजभोगमैं अरोगैं। **राजभोग**की अनसखडी: डोलकी सामग्रीके २-२ नग (याकू खिचडाकौ थाल भी कहैं), मुरब्बाकी कटोरा। तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, १ रायता, बिलसारु,। सखडी: तीनकूडा, धोवादाल, केसरी पाटिया, छाछवडा, पापड, पूडी, कचरिया, भुजैना, कचरीया, गाँठिया, काँजी वडा तथा बाटी। **सामग्रीक्रममैं बदलाव**: गुड तथा पापड आज राजभोग तक। पापड उत्सवक्रममैं आवैंगे।

सेवाक्रम: आज **शंखनाद** बेगि होवैं - **प्रात: ५ बजे**, मंगलाके दर्शन नहीं होवैं। श्रृंगार भये पै आरसी-तुलसी समर्पण करि, झारीजी भरि दूधकौ डबरा अथवा अनसखडीके ४ नग भोग धरि डोलतिबारीमैं डोलकौ अधिवासन करिये। ***ॐ विष्णो: विष्णो: विष्णो: ! श्रीमद्भागवत् पुरुषोत्तमस्य डोलोत्सव कर्तुम् डोलाधिवासनं अहं करिष्ये।।*** - बोलि संकल्प छोडनौ (अधिवासनकौ क्रम पीछै दियौ है सो वहाँ देख लेनौ)। नौंध: श्रृंगार होतेमैं ही खेलकी तैयारी करि लेनी।

खेलकी तैयारी: चारौं **खेलकी चार तपकडी** (नित्यकी १ तथा खंड पै पधरायवेकी लमचौरस तपकडी ३) तैयार होवैं, इनमैं भिन्न-भिन्न चंदनकी कटोरी, अबीर तथा गुलालकी कटोरी सजैं, चोवाकौ बाँसला एक ही रहै। ये सब तपकडी क्रमसू जमाय लेनी जासू खेलके समय दुविधा न होवै, एक हाथ पौंछवेकौ वस्त्र भी राख लेनौ। तदुपरान्त एक चांदीकौ बडौ डबरा, चांदीके गुलालवाले कटोरा, एक तपेला (पिचकारी होय तौ वो भी) केसूडाके लिये। रंग उडायवेके लिये एक चौकी तथा चांदीकौ एक बडौ थाल, फैंटके लिये खेले भये वस्त्रन्के ५-७ टूक भी संभाल लेने। तिबारीमैं केसूडा-जलके तपेला धरि, अगले दिन ढाँके भये सब रंग भी खोलके तैयार करि लेने। **फूलमालाकी ४ दर्शनकी जोड** तथा डोलके दर्शनकी सब **आरतीकी थाली** भी तैयार करि लेनी। **२ पंखा भी उतार लाने**, छेले दर्शनमैं होवैं।

डोलमैं पधरायवेकौ क्रम: अधिवासन भये पीछे आचमनकी तैयारी तथा एक बीडाके साथ आज्ञा लै भीतर जाय, आचमन करवाईये। झारीजी पुन: भरिके सीधे डोलमैं पधारैं (झारीजी डोलमैं पधरायवेसू पहले डोलके दोनों आडी एक-एक चांदीकौ पडघा पधराय - झारीजी वाले पडघा पै तपकडी पधराय तैयारी करि लेनी। मुखवस्त्र भी पधराय देनो।)। शंख-घंटा-टकोरा शुरु करवाय, दण्डवत् करि सावधानी पूर्वक श्री...जीकू डोलमैं पधराईये। शालिग्रामजीकौ बंटा गादीजीके बगलमैं अलगसू (श्रावणवत्) तथा लालन

श्री...जीकी गादी पर ही प्रभुन्के दक्षिण भागमैं (पलनावत्) बिराजैं। पादुकाजी निजमंदिरमैं ही बिराजैं, छेले भोग धरिके खेलके वस्त्र उढाय पादुकाजी तथा गादीजीकू खिलाय लेनौ। खेलकौ क्रम शुरु करिये (आज खंदक आदि वस्त्र नहीं लगैं, पीठिका तथा वस्त्र पर ही खेलैं)।

पहले ३ खेल तथा बडे भोग तकको क्रम: श्री...जी तथा अन्य स्वरूपन्कू फूलमाला धराय पहली तपकडीमैं सू नित्यवत् नैक-नैक खिलाईये , कपोल-चिबुक भरिये। नौंध: सभी बालकन्कू कपोल मांडवेकी सेवा मिलै या प्रकार अलग-अलग बालक भिन्न-भिन्न खेलमैं कपोल मंडन करैं ऐसौ आग्रह राखनौ। बहुजी-बेटीजी आज छेले दर्शनसू पहले ही खिला लेवैं क्योंकि छेले खेलकी आरती भये पीछै प्रभु खेलैं नहीं। पीठिका-मोहरा भी शीशीके खेलवत् खिलावने। पहले भोग धरिये (१५ मिनिट)। समय भये आज्ञा लै भीतर जाय २ बीडा झारीजीके पडघा पै पधराय आचमन-मुखवस्त्र करवाय दर्शन खोलिये। टेरा खुलते ही एक चोकी पै चांदीकौ थाल श्री...जी सन्मुख पधराय हथेलीमैं **गुलाल** लै श्री...जीकी दृष्टि करवाय **दर्शनीन् पै उडैये**। **श्री...जी धीमैं-धीमैं झूलैं** इतनेमैं दर्शनवत् टकोरा करनौ। झुलानौ रोककै आरती थालीकी (चांदीके दीवालावाली) करि झारीजी सराय नये भरि टेरा लीजिये। **दूसरे खेल**: फूलमाला तथा बीडा विजय कर शालिग्रामजीके बागलमैं पधराय देने। फेरि, प्रथम खेलवत् दूसरी फूलमाला, दूसरी खेलकी तपकडीसू खेल, भोगसू आरती तक सब क्रम वैसे ही करनो। **तीसरे खेल**: फूलमाला तथा झारीजी बदल, तीसरी तपकडीसू खेलकौ सब क्रम करिये। यह क्रम होय जाय तब झारीजी बडी करि (फूलमाला बडी नहीं होवै), दोनों झारीजी भरि बडे भोग धरिये (५० मिनिट)। भावना: छेले दो भोग साथमैं अरोगवेकौ भाव है। कुल ४ खेल ३ भोग कौ क्रम है।

नौंध: बडे भोग आये पै १२-१२ बीडीकी ३ जोड तैयार करि लेनी (खेलकी २ तथा राजभोगकी १)।

चौथौ (बडौ) खेल: समय भये *जयमहाराज* करि, आचमन-मुखवस्त्र करवाय भोग तथा दोनों झारीजी सराईये, एक पडघा पै बडी झारीजी तथा दूसरे पडघा पै बीडाकौ बंटा (जामैं ४ बीडा तथा १ बरासकी कटोरी रहें) पधराईये। अब तीसरी माला बडी करि चौथी मालाजी धरिये, बीडीकी १ जोड अभी अरोगैं (दर्शन खोलवेसू पहले चांदीके एक कटोरामैं बीडीकी दूसरी जोड, तृष्टि तथा आडकौ एक पत्ता भी तैयार करि राखने)। दर्शन खुलते ही बीडी आदि तीनों वस्तु सन्मुखमैं पधराय (अथवा कोई वल्लभकुल या सेवककू आडे खडे करके), तृष्टि परचारककू झिलाय अथवा जमीन पै पधराय बीडीकी दूसरी जोड अरोगावनी (प्रत्येक **बीडी अरोगाते समय पत्ताकी आड राखनी** जासू दर्शनीन् कू बीडीके दर्शन न होवैं, एक पल

आँख बन्द करि बीडी अरोगवेकी भावना करनी। प्रसादी बीडी उपरसू तृष्टिमैं छोडते जानी)। **अब, श्री...जीकू क्रमवार ४ तपकडीन् सू खिलाईये** (पहले चौथी तपकडीसू खेलैं, पाछैं अन्य तीनौंसू दर्शनके क्रमवार - इन तीनौंसू कपोल नहीं माँडने), **डोल-पिछवाई-चंदुआ भी भारी खेलैं**।

डोल आदिकू खिलायवेको क्रम: सर्वप्रथम चंदनकी शीशसू झूल पै सकलपारे बनाने। पाछैं पूरे डोल पै अच्छी तरह शीशीसू खिलाय पिछवाई पै सकलपारा बनाने। फेरि, ये सभी जगह चोवा, अबीर, गुलालसू खेलैं। अन्तमैं अन्य सभी रंगन्सू मोहरा, झूल, डोल, पिछवाई-चंदुआ खेलैं (श्री...जी नहीं)। सेवामैं विलंब न होय या लिये उपस्थित सभी वल्लभकुल अलग-अलग रंगन् सू खिलाते जावैं (गुलाल आदिसू आज *चिडिया* बनानो अनिवार्य नहीं है, थोडी बनानी)।

दर्शनीन् पै रंग, आरती तथा भीतर पधारनौ: पिछवाई आदिकू खिलायवेकौ क्रम भये पै श्री...जी सन्मुख एक चोकी पै चांदीकौ बडौ डबरा पधराय तामैं केसूडाकौ जल भरनौ। या जलमैं थोडी गुलाल पधराय बराबर घोलकै, श्री...जीकी दृष्टि कराय केसूडा दर्शनीन् पै उडावनौ। **केसूडाकौ जल तथा सभी रंग दर्शनीन् पै उडैं** (केसूडाकौ एक डबरा तथा सभी ७ रंग थोडे-थोडे बचाय राखने)। रंग उड चुकै तब चांदीकौ थाल स्वच्छ करि श्री...जी सन्मुख चोकी पै पधरावनौ। यामैं **अबीर-गुलाल तथा ५ रंगन् कू सुंदरतासू साजने**। अब **श्री...जी झुलैं**, अन्य **बालक पंखा करैं** (रंगकी गरमीके श्रम निवारणार्थ)। टकोरा करि आरती थालीकी (चांदीके दीवलावाली) तथा न्यौछावर होवैं। फेरि, सब बालक तथा चरणस्पर्शवाले सेवक ३ परिक्रमा करि साष्टांग दंडवत् करैं । अब, घरके बडे दंडवत् करि सन्मुखमैं बिराजैं - मुखियाजी केसूडाकौ डबरा हाथमैं लै थोडौ-थोडौ आपश्री पै पधरावैं तथा **गुलालसू कपोल माँडैं, थोडी उपर छाँटें**। फेरि, घरके बडे बालक यही क्रमसू अन्य सभी बालक तथा सेवकन् कू खिलावैं। अंतमैं अधिकारी आदि पै बचौ भयौ केसूडा तथा रंग उडाय, झारीजी-बीडा सराय (श्रृंगार चोकीके पास, सीधे प्रसादीमैं नहीं) टेरा लीजिये। **माला सहित सब स्वरूपन्कू श्रृंगार चोकी पै पधराय राई-नोन करिये**। (सभी दर्शनन् की माला-बीडा भी साथ ही पधारैं)। नौंध: श्री...जीके भीतर पधारते ही परचारकन् सू मुखवस्त्र, पडघा, तपकडी आदि अंदर लिवाय डोल तथा चोककी सफाईके लिये वैष्णवन्कू बुलाय लेने। निजमंदिरमैं छिबौ जल नहीं आवै यह सूचना वैष्णवन्कू अवश्य दे देनी।

शयन तककी सेवा: शीतलजलकौ एक डबरा श्रृंगार चोकीके बगलमैं धरि सब स्वरूपन्के श्रीअंगकी गुलाल अच्छी तरह पौंछि (कपोल, नेत्र आदिकी आले वस्त्रसू सेवा करनी) पाछे सिंहासन पै पधराईये, शीतलजलकौ डबरा भी सिंहासन पै पधारै। अब दोनों झारीजी बदलकै राजभोग धरिये

(घडी दिखाते समय शीतलजल सराय लेनौ)। समय भये भोग सराय, राजभोगकौ साज माँडि, आरती करि अनवसर करिये। **साँझकू शंखनाद सायं ५ बजे**(पाल हवेलीमैं चालू सेवाकौ क्रम नहीं है)। नौंध: संभव होय तौ श्रृंगार बडे होते समय ही शैय्या-मंदरि खासा करि लेनौ। जनाने बिराजैं तौ आभरण विजय करके स्वच्छ होवै उपर पधरावने अन्यथा सेवक-परिचारक ही सब आभरण व्यवस्थित कर लैं। श्री...जी पौढैं पीछे पूरौ मंदिर खासा करि द्वितीया पाटको साज चढै।

सेवाक्रममैं बदलाव:❖यदि गरमी होय तौ आज शयन पीछै चाँदीकी गागर बंद, माटीकी मथनी शरु ❖शीतलजलसू आचमन ऋतु अनुसार गरमी होय तो बन्द कर सकैं ❖शयनसू खोल शुरु, मंगला-शयनमैं श्रीमस्तकसू आवै (गरमी होय तौ एक स्कंधसू)।

चैत्र वद २: **द्वतीया पाट** (हमेश डोलके दूसरे दिन ये क्रम करनौ, तिथिकौ आग्रह नहीं)

श्रृंगार: आज मंगलासू फरगुल बंद। **अभ्यंग**। वागाकी जोड लाल तासकी, कुलह जडाउ। सब आभरण हीराके, श्रृंगार भारी इकहरा। **आजसू चिबुक तथा सग्गी शुरु**। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडी: डोलकी रखी भई सामग्रीके अलावा बूंदीके लड्डू तथा गुलकंद। सखडी: कांजीवडा विशेष: आज राजभोग सरे पै आज तथा डोलके दिनकौ १(कुल २) अनसखडीवालौ थाल गादीजीमैं भोग आवे, पीछै डोलकी सामग्री बँटै।

सेवाक्रम: आज मंगला आरती पीछै श्री...जीके स्नान होवैं (श्रीअंगके सभी आभरण-अलंकार आदि बडे करके अच्छी तरह गुलाबकौ अत्तर/फुलेल समर्पिये - **चंदन/आँवलासू श्री...जीके अभ्यंग नहीं करावने**। श्री...जीकू स्नानकी चौकी पै चौगुन घडी करे भये मलमलके सफेद वस्त्र पै पधराय ४ लोटी सुहाते जलसू स्नान करवाईये। आखरी लोटीमैं थोडौ जल रहै तब लोटीकू ३ बार श्रीमस्तकके उपर ओसारिके जल थालमैं पधराईये)। श्रृंगार होते ही तुरंत गुलाबके फूलकी दो गैंद गादी पै पधराय दर्शन खोलिये (फूलमाला नहीं), **दर्शनकौ टकोरा नहीं होवै**। सब आरसी पास तथा दूरसू दिखाय मोरछल करिये। एक कीर्तन भये बाद झारीजी तथा बीडा बडे कर दोनों झारीजी खुले दर्शनमैं पधराय **टेरा डारि तुलसी-समर्पण** करि राजभोग धरिये (फूलकी गैंद संध्या-आरती बाद विजय होवैं)। राजभोगमैं आरसी नहीं देखैं, आरती थालीकी। मात्र आज राजभोगके दर्शनसू संध्या-आरती तक फूलमंडली (आजकी मंडली सूरतमैं ही आवै, संवत्सरसू नियम है)।

सेवाक्रममें बदलाव: ❖श्रीअंग पै रुईकौ आतमसुख तथा फरगुल बन्द, खासाकौ शुरु ❖शैय्याजी पै रजाई बंद - दोनों समय सफेद चादरके उपर खोल शुरु (ठंड होय तौ एक रजाई) ❖गादी पै लाल

साज रामनवमी तांई रहै ❖चिबुक, सग्गी तथा मोरछल शुरु ❖नित्यमैं पीठिकाकी ओढनी शुरु ❖सोनेका आभरण बन्द, नित्यके तथा अन्य सभी रंगके शुरु ❖राजभोगमैं सुजनी तथा खंडके चाँदीके खिलौना एवं सिंहासनके दोनों बगलकी तपकडीन्मैं एक-एक बाजू मोती-लकडीके खिलौना शुरु ❖चरण चौकी वस्त्र तथा कंदरा वस्त्र लाल रंगके शुरु ❖उष्णकालके अत्तर शुरु।

विशेष: आज चाँदीके खिलौना, सिंहासनके पाया आदि स्वच्छ करवाय लेने।

जानकारीके लिये: कामवनमैं आज मंदिरमैं सू सब गुलाल निकसै, अच्छी तरह मंदिरकी सफाई होवै। श्रृंगार पाछैं श्री...जी तथा अन्य स्वरूप तिबारीमैं पधारैं, श्री...जी सांगामाची पै बिराजैं। कामवनमैं फूलमंडलीकौ क्रम सम्वत्सरसू प्रारंभ होवै।

कीर्तन: नित्यमैं उष्णकालके (कुंज भानवावाले) कीर्तन शुरु।

चैत्र वद ३: **श्रृंगार**: वागीकी जोड दिवालीकी (श्वेत तासकी), सब आभरण पन्नाके, चीरा श्वेत, चंद्रिका जरीकी (नौंध: श्रृंगार बडे होवैं तब **चीरा बडौ होवै, सादी पाग आवै**। जरीकी चंद्रिका रामनवमी तक इच्छा होय तौ धर सकैं)।

ओढनी: तासकी, वस्त्रसू खुलती आवै (आजसू चैत्र वद ७ तक नित्य)।

चैत्र वद ४: **श्रृंगार**: वागाकी जोड हरी तासकी, चीरा हरौ। सब आभरण मीनाके।

चैत्र वद ५: **श्रृंगार**: वागाकी जोड पीरे तासकी, चीरा पीरौ। सब आभरण पिरोजाके।

कार्यालयके लिये: माटीकी मथनी मंगवाय लेनी।

चैत्र वद ६: **श्रृंगार**: वागाकी जोड श्याम तासकी, चीरा श्याम। सब आभरण पुखराजके।

चैत्र वद ७: **श्रृंगार**: वागाकी जोड दशहराकी (सफेद जरी), चीरा श्वेत। सब आभरण हरे हीरा (पन्ना) के।

विशेष: डोल पै न भई होय तौ आज शयन पीछै माटीकी मथनी भरकै सेवामैंसू निकलनौ।

चैत्र वद ८: शीतला अष्टमी। **श्रृंगार**: **अभ्यंग**। कुलह श्वेत, वागाकी जोड रथयात्राकी। सब आभरण माणिकके।

ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडी: कोई १ सामग्री, मुरब्बा। सखडी: चना दालकौ वारा।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖अंगीठी तथा खासाकौ वागा आज मंगलासू बंद ❖मंगलासू माटीकी मथनी शरु ❖शीतलजलसू आचमन शुरु (पहले न भये होवैं तौ)।

चैत्र वद ९: **श्रृंगार**: वागाकी जोड श्याम कारचोबाकी, चीरा श्याम। आभरण पुखराजके। ओढनी: पाटकी।

चैत्र वद १०: **श्रृंगार**: वागाकी जोड छींटकी, लपेटा (पाग) आभरण तथा ओढनी खुलते।

चैत्र वद ११: पाप मोचनी एकादशी।

श्रृंगार: काछनी-कंठवस्त्र तथा तनीया श्याम, सूथन-पीताम्बर पीले, मुकुट मोतीकौ - आभरणकौ नियम नहीं। अन्य स्वरूपन्के वागाकी जोड **श्याम छापा**की। ओढनी: चित्रकी।

सामग्री: राजभोगमैं एकादशीकौ सीधा तथा तरमेवा।

कार्यालयके लिये: आज ही संवत्सर पै पत्रा वाँचवेके लिये पंडितजीकू खबर करवाय देनी।

चैत्र वद १२: **श्रृंगार**: वागाकी जोड छापाके - लपेटा (पाग), आभरण तथा ओढनी खुलते।

चैत्र वद १३: **श्रृंगार**: वागाकी जोड छापा या तोईके - लपेटा, आभरण तथा ओढनी खुलते।

चैत्र वद १४: **श्रृंगार**: वागाकी जोड तोईकी - लपेटा, आभरण तथा ओढनी खुलते।

चैत्र वद ३०: **श्रृंगार**: मुकुट पन्नाकौ, काछनी तथा तनीया लाल, सूथन-पीताम्बर पीले अथवा केसरी, कंठवस्त्र श्याम। अन्य स्वरूपन्के वागाकी जोड लाल। ओढनी: चित्रकी।

चैत्र सुदि १: **संवत्सर उत्सव।** थापा-तोरण (आसोपालव-गलगोटा)।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। चाकदार वागा लाल छींटके, कुलह जडाउ, श्रृंगार भारी इकहरा। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडी: बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी, १ रायता, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी। सखडी: तीनकूडा, धोवादाल, पाटिया, छाछवडा, पापड, पूडी, भुजैना।

सेवाक्रम: आज राजभोग धरके निज-मंदिरकी देहरी पै नीम और पिसी मिसरी (दळेली खांड)के १-१ दोना पधराने , शैय्या मंदिरकी बाजू मिसरीकौ दोना आवै। राजभोगके दर्शनमैं फूलमंडली, आरती थारीकी। **राजभोग आरती पीछे** श्री...जी सन्मुख पंडितजी *बर्हापीडं नटवरवपु:* बोलि

पंचांग बाँचैं (संक्रान्ति, कौन-सी वस्तु महंगी या सस्ती होय तथा ग्रहणकी विगत, आवक-जावककौ कोठा, विगेरे

श्री...जी सन्मुख बैठि शांतिसू सुनने)। पंचांग बचे पीछै टेरा डारि माला बडी करनी, अनोसरसू पहले नीम-मिसरी सराय लेने। ये दोनों वस्तु श्रीवल्लभकुलके लिये जूदी काढि मंदरिके सेवक तथा वैष्णवन्मैं बँट जाय। जानकारीके लिये: सूरतमैं वर्षमैं मात्र आज तथा कामवनमैं नित्य राजभोग आरती पीछै पंचांग वाँच्यौ जाय।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖शैय्याजी पै सब समय दो सूतराउ या मलमलकी चादर शुरु ❖आज शयनसू १ पिछौरा - स्कन्ध तथा कटिसू धर्यो जाय ❖लालनकू आज साँझसू मंगला-शयनमैं श्रीअंगकौ वागा नहीं ❖पादुकाजीकू दिनमैं एक रंगीन वस्त्र तथा शयनमैं एक सफेद चादर शुरु ❖राजभोगकी फूलमंडली शुरु।

चैत्र सुदि २: **श्रीद्वारिकेशजी भाव-भावनावालेन्कौ उत्सव** (वि.सं.१७५१)

श्रृंगार: वागा खुले-बंदके केसरी, कुलह केसरी। सब आभरण माणिकके, श्रृंगार चौंसरके - हल्के। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री:**राजभोग**की अनसखडी: बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी,तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु। सखडी: पाटिया, रोटी।

सेवाक्रम: राजभोगमैं आरती थालीकी। **कीर्तन**: झाँझसू श्रीगुसाँईजीकी बधाई।

विशेष: शयन पीछै गादीजीमैं वस्त्र-साज केसरी आवैं, देवकीनंदनजीकी प्रसादी बंडी संभाल लेनी।

चैत्र सुदि ३: **श्रीदेवकीनन्दनाचार्यजी-बापाश्री-(सं.१९१५) कौ उत्सव** (गणगौर)। बंदनमाल (आसो.)।

श्रृंगार: कुलह केसरी, वागा खुले-बंदके श्याम छापाके। सब आभरण हीराके, श्रृंगार हल्के। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: **राजभोगमै**: बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी,तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु, **चन्द्रकला, बदामकी बरफी**। सखडी: पाटिया, रोटी।

सेवाक्रम: मंगला पहले ही श्रीदेवकीनन्दनजीकी प्रसादी बंडी (स्वयं नै धरी भई, याके मात्र आज ही दर्शन होवैं) गादीजीकी गोदमैं (घडी करी भई) बिराजमान करनी। राजभोग धरकै गादीजीके तिलक-आरतीकी तैयारी करि लेनी (एक **कांसेकी थाली**में कंकूसू अष्टदल बनाय चूनके **४ मुठिया** तथा दुहैरा बातीवालो **चूनको दीवला** बनाय राखनो तथा **भेट एवं न्यौछावरके २-२ रुपिया** भी तैयार करि लेने। या थालीमें ही **एक तरफ तिलकके लिये थोडेसे कंकू-अक्षत तथा २ बीडा** धरि राखने)। राजभोगमैं फूलमंडली, आरती थालीकी।

गादीजीके तिलककौ क्रम: राजभोग आरती पीछै श्री...जीकी माला बडी करि, दर्शन खोलि **सब बालक गादीजीमैं** पधारैं, कीर्तनिया गादीजी सन्मुख श्रीगुसाँईजीकी बधाई गावैं। घंटा-टकोरा बजत **गादीजीकू तिलक** करि २ बीडा धरिये। भेट धरि, मुठिया वारि थालीकी आरती-न्यौछावर होवैं। टेरा लै उत्सव-भोग धरिये। श्री...जीके अनवसर करिये। **कीर्तन**: श्रीगुसाँईजीकी बधाई।

चैत्र सुदि ४: आजसू चैत्र सुद ८ तांई एक दिन धोती-फैंटा एक दिन मल्लकाछ-टिपारौ आवै। वागा खुले-बंदके, श्रीमस्तक पै वस्त्रसू खुलतो रंग। ओढनी: तीसरे रंगकी।

चैत्र सुदि ५: वागा खुले-बंदके, श्रीमस्तक पै वस्त्रसू खुलतो रंग। ओढनी: तीसरे रंगकी।
सामग्री: राजभोगमैं चना दालकौ वारा (तुवरकी जगह आवै), कौर चनाकी दालसू सनै। थालमैं २ नींबूके ४ टूक।

चैत्र सुदि ६: वागा खुले-बंदके, श्रीमस्तक पै वस्त्रसू खुलतो रंग। ओढनी: तीसरे रंगकी।

चैत्र सुदि ७: वागा खुले-बंदके, श्रीमस्तक पै वस्त्रसू खुलतो रंग। ओढनी: तीसरे रंगकी।
सामग्री: राजभोगमैं चना दालकौ वारा।

चैत्र सुदि ८: वागा खुले-बंदके, श्रीमस्तक पै वस्त्रसू खुलतो रंग। ओढनी: तीसरे रंगकी।
विशेष: शयन पीछै *आधी सफेदी* (मोहरा, गादीके थोडे दर्शन होवैं ऐसी सफेदी) चढै

चैत्र सुदि ९: **रामनवमी।** तोरण (आसोपालव-गलगोटा)।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। चाकदार वागा कुलह केसरी डोरियाके - जरीकी किनारीवाले, पटका लाल। श्रृंगार भारी इकहरा, तिलक-अलकावली दुहैरा । शयनमैं पिछौरा केसरी। ओढनी: जन्मष्टामीकी।
सामग्री: **राजभोग**की अनसखडी: बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी, रायता, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी। बिलसारु, खीर, दूध तथा सिखरन केसरी। सखडी: तीनकूडा, धोवादाल, छाछवडा, केसरी पाटिया, पापड, रोटी, पूडी, कचरिया, भुजैना। **उत्सवभोग**की अनसखडी: शीतलजल, मेदापूडी, रायता, गुलाबकौ सीरा, नींबू-आदापाचरी, मुरब्बा, संधाणा, फलाहार (एकादशीवत्), सैंधा नमकको दोना। सखडी: दहीभात, संधाणा।
सेवाक्रम: राजभोग धरके पंचामृत, पीताम्बर, तिलक आदि की सब तैयारी करि लेनी। राजभोग

सरे पै एक झारीजी, २ बीडा पधराय फूलमाला धराईये। फूलमंडली चढाय, पंचामृतकी तैयारी सन्मुख धरि थालमैं चंदनको साथिया करि चोकी पधराय दर्शन खोलिये। शंख-घंटा-टकोरा शुरु करवाय शालिग्रामजीकू थालमैं चोकी पै पधराय पंचामृत कराईये। पंचामृत भये पै, अंगवस्त्र करि शालिग्रामजीकू पाछे सिंहासन पै अलग रेशमी पीताम्बर (आधौ उढाय-आधौ बिछाय) पै पधराय, फूलकी नई छोटी माला धराईये। श्री...जीकू तिलक करि गादी पै कंकूमैं डुबाय २ बीडा धरिये, श्रीपादुकाजीके अलावा अन्य स्वरूपनकू तिलक करिए। १ झारीजी भरि, टेरा लीजिये। फूलमाला बडी करि उत्सवभोग धरिये (१५ मिनिट)। उत्सवभोग सराय श्रीशालिग्रामजीकू नित्यके स्थान पै पधराय, झारीजी बदल, २ बीडा, **फूलमाला नई** (उत्सवभोगमैं सखडी अरोगैं यासू), खंड आदि लागाय नित्यवत् दर्शन खोलिये। आरसी दिखाय थालीकी आरती, माला विजय करि अनवसर करिये। आज शयनसू पिछौडा कटिसू आवै।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖राजभोगके अनवसरमैं हिंडोला-खाट शुरु ❖शयनमैं मोतीके आभरण ❖शयनसू चाकदार वागा बंद ❖शयनसू नित्य मंगला तथा शयनके दर्शन तिबारीमैं ❖झारीजीके नेवरा गीले होवैं ❖झारीजीमैं गुलाबजल पधरायौ जावै ❖शयनके दर्शनमैं दोनों झारीजी शुरु ❖शैय्याजीके पास २-४ पंखी धरी जावैं (करनी नहीं) ❖आरतीमैं बाती कम होवैं ❖राजभोगके अनवसरसू सब समय शैय्याजी पै एक सफेद चादर शूरु ❖चरण चौकी वस्त्र तथा कंदरा वस्त्र सफेद शुरु। **कीर्तन**: रामनवमीके।

चैत्र सुदि १०: **श्रृंगार**: पिछौरा-कुलह परचारगीके (वस्त्र अगले दिनके, जोडकी जगह घेरा धरैं), केसरी तनीया बदलै। सब आभरण हरे हीरा (पन्ना)के। ओढनी: नियम नहीं।

चैत्र सुदि ११: कामदा एकादशी।

श्रृंगार: मुकुट पिरोजाकौ। कंठवस्त्र श्याम, काछनी-पीताम्बर खुलते (पीले या गुलाबी)। अन्य स्वरूपन्के वस्त्र काछनीके रंगके। शयनमैं कुलह आसमानी। ओढनी: चित्रकी।

सामग्री: राजभोगमैं एकादशीकौ सीधा तथा तरमेवा। **कीर्तन**: रासके।

चैत्र सुदि १२: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छा अनुसार। **सामग्री**: राजभोगमैं सिखरनभात।

चैत्र सुदि १३: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छा अनुसार।

चैत्र सुदि १४: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छा अनुसार।

चैत्र सुदि १५: **श्रृंगार**: मुकुट तथा आभरण हीराके। कंठवस्त्र श्याम, काछनी-पीताम्बर, तनीया तथा अन्य स्वरूपन्के वस्त्र लाल। शयनमैं कुलह सफेद। ओढनी: चित्रकी।

सामग्री: **राजभोग**मैं तरमेवा। राजभोगको टेरा आये पीछे **सिंहासनके दोनों तरफ** सूकेमेवा, पगवा (चाशनीवाले) मेवा तथा तलवा मेवा। **अनवसरमैं** बासौंदी (२ लीटर दूध)।

सेवाक्रम: राजभोगमैं २ खंडवाली फूलमंडली अवश्य, आरती पीछे न्यौछावर होवै।

जानकारीके लिये: आजकी फूलमंडली घरके तिलकायत की तरफसू होवे यासू न्यौछावर तथा सामग्रीको क्रम है।

❖❖❖

❖❖❖उष्णकालके विशेष क्रम❖❖❖

❖**फूलमंडली**: श्री...जीकू नियमकी अथवा मनोरथी मंडली आवै तब १ इच्छानुसार सामग्री धरनी

राजभोग (संवत्सरसू नृसिंह जयन्ती): राजभोग दर्शनसू संध्या-आरती तक, सामग्री राजभोगमैं।

शयन (नृसिंह जयन्तीसू रथयात्रा): शयन दर्शनसू दूसरे दिन मंगला तक, सामग्री शयनभोगमैं।

❖**आँवलाकौ मुरब्बा तथा अडबंगा**: रामनवमीसू रथयात्रा आँवलाकौ मुरब्बा तथा अडबंगा (कच्ची केरीकौ बाफला) भी इच्छानुसार अथवा उत्सवन् पै धरि सकैं।

❖**सिखरन भात**: रामनवमीसू आषाढ सुद १२ ताँई प्रत्येक द्वादशीके दिन राजभोगमैं सिखरन भातकौ एक मध्यम डबरा आवै।

❖**शैय्या मंडली**: रामनवमीसू नृसिंह जयन्तीके बीचमैं ३ शैय्या मंडली होवैं।

❖**आमके ओसरा**: रामनवमीसू रथयात्राके बीचमैं आमके साडे तीन *ओसरा* (वारा) होवैं (तीन पूरे, एक आधौ)।

नौंध: शैय्या मंडली तथा ओसरान्मैं **तिथिकौ नियम नहीं है**। पाल हवेलीमैं तिथि निश्चित कर दई हैं, परिस्थित अनुसार आगै-पीछै कर सकैं।

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

❖❖❖

: मेष संक्रान्ति :

(प्रति वर्ष तारीख १३-१४-१५ अप्रैल मैं एक दिन मेष संक्रान्ति पडै है)

श्रृंगार: कुलह-पिछौरा केसरी (यदि खुल बंदके वागाके दिन होवैं तो वो भी केसरी), आभरण हीराके। ओढनी: अभ्यंगकी। विशेष: यदि संक्रान्ति साँझकू होवै तौ श्रृंगार शयन पीछै बडे होवैं। आजके दिन कोई साधारण उत्सव भी पड जावै तो श्रृंगार संक्रांतिके, यदि बडौ उत्सव (तिलक-आरती अथवा कोई विशेष सेवाक्रम आदि वालौ) होवै तो श्रृंगार उत्सवके होवैं। सामग्रीमैं दोनोंको क्रम आवैं।

सामग्री: जा समय संक्रान्तिकौ पुण्यकाल होवै (राजभोग अथवा शयनभोग) तब अनसखडी: **सतुवाके लड्डू**, बूंदी, मुरब्बाकी कटोरी, गोरस, केसरी खीर, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी। सखडी: **घुलमा सतुआ**, सिखरनभात, इमलीकी कढी, दहीभात। पुण्यकाल होय तब भी भोगकी घडी नित्यवत् ही राखनी। **पुण्यकाल साँझकू होय तो राजभोगमैं**: बूंदी, मुरब्बाकी कटोरी, तरमेवा।

घुलमा सतुआ: मेष संक्रान्तिसू अक्षय तृतीया (वै.सु. ३) तक नित्य राजभोगमैं घुलमा सतुआ अरोगैं।

विशेष: जा समय पुण्यकाल होय ता समय फूलमंडली, आरती थालीकी।

जानकारीके लिये: मेष संक्रांतिके दिन पुण्यकालके समय कामवन तथा श्रीगोविन्दजीकी हवेलीमें (श्रीमहाप्रभुजी तथा श्रीगुसाँईजीके सेव्य निधिस्वरूप होयवेसू) श्रीनाथजीके भावनाजी पधारैं। तिनकू सब भोग न्यारे भोग आवैं, भोगकी घडी ड्यौढी।

❖❖❖

वैशाख

❖❖❖

वैशाख वद १ : नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छा अनुसार।

कीर्तन: आजसू श्रीमहाप्रभुजीके उत्सवकी *फीकी* बधाई बैठे।

वैशाख वद २ : पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छा अनुसार। **पहली शैय्या मंडली**। **सामग्री**: अनवसरमैं १ सामग्री।

वैशाख वद ३ : नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छा अनुसार।

वैशाख वद ४: **उत्सव छप्पनभोगकौ**। (श्रीजमुना बहुजीके समयमैं श्रीबडे दाऊजीके मनोरथसू सातौं स्वरूप नाथद्वारामैं छप्पनभोग अरोगे ताकौ)

श्रृंगार: **अभ्यंग**। कुलह-पिछौरा केसरी। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री:**राजभोग**की अनसखडी: बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी,तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु। सखडी: पाटिया, रोटी।

सेवाक्रम: राजभोगमैं आरती थालीकी, फूलमंडली (संभव होय तौ)। **कीर्तन**: झाँझसू *जन्माष्टमीके*।

वैशाख वद ५ : नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छा अनुसार।

वैशाख वद ६ : आमकौ **आधौ ओसरा**। **कीर्तन**: झाँझसू *श्रीमहाप्रभुजीकी बधाई* शुरु।

श्रृंगार: पाग-पिछौरा केसरी (ओसरा होय तौ ही)। ओढनी: इच्छानुसार। नौंध: झाँझसू बधाई बैठी यासू अब लाल, गुलाबी आदि शुभ रंगके वस्त्र ही लेने, ओढनी इच्छानुसार।

सामग्री: **शयनभोगकी** सखडीमैं आमके भुजैना,फजीता (रायता), कढी, अमरस भात, रसदार टोकरी। जानकारीके लिये: कामवनमैं आखे ओसरामैं ६००, आधेमैं ३०० आम अरोगैं। सूरतमैं संख्याकौ नियम नहीं।

वैशाख वद ७: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छा अनुसार।

वैशाख वद ८: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छा अनुसार।

कार्यालयके लिये: श्रीमहाप्रभुजीके उत्सवके **दर्शनकौ समय लिखवाय देनौ**। अक्षय तृतीयाके लिये माटीके २-२ **कुँजा तथा करुआ मँगवाय लेने, चंदनकी लकडी** भी मँगवाय लेनी।

वैशाख वद ९: नित्यक्रम। **सामग्री**: राजभोगमैं चना दालकौ वारा (तुवरकी जगह आवै), कौर चनाकी दालसू सनै। थालमैं २ नींबूके ४ टूक। विशेष: अक्षय तृतीया, तथा स्नानयात्राके सफेद वस्त्र सिलवावे दे देने।

वैशाख वद १०: **श्रृंगार**: पाग-पिछौरा कसूंबी, आभरण पिरोजाके।

कीर्तन: राजभोग आये पै *मूल-पुरुष* गवै (कामवनमैं श्रृंगार भोग)।

विशेष: शयन पीछै गादीकी सफेदी उतरै (मात्र १ दिनके लिये)।

वैशाख वद ११: **श्रीमहाप्रभुजीकौ उत्सव** (वि.सं. १५३५) **।** वरूथिनी एकादशी। **थापा-तोरण**।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। कुलह-पिछौरा केसरी। श्रृंगार तथा तिलक-अलकावली दुहैरा।

ओढनी: जन्माष्टमीकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडी: बूंदी, जलेबी (सकलपारे नहीं), मुरब्बाकी कटोरी, रायता, तरमेवा, बिलसारु, नींबू-आदापाचरी, एकादशीकी सामग्री। सखडी: तीनकूडा, धोवादाल, पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, भुजैना। **पाटिया, दूध, खीर, बिलसारु केसरी**।

सेवाक्रम: राजभोग धरिकै तिलक-आरतीकी तैयरी करि लेनी (तिलककी थाली, न्यौछावर, २ बीडा तथा आरतीके लिये चूनकौ दीवला एवं ४ मुठिया)। राजभोग सरे पै माला धराय, फूलमंडली पधराय देनी। राजभोगके दर्शनमैं **पहले खंड नहीं लगै**, सिंहासन तथा पडघाके खलौना ही मढैं। दर्शन खोलि सब आरसी पास-दूरसू दिखाय शंख-घंटा-टकोरा बजत श्री...जीकू तिलक करि अक्षत लगाय कंकूमैं चौंच डुबाय २ बीडा गादी पै धरिये। फेरि, **सभी स्वरुपन्कू तिलक** होवै, श्रीफल भेट होवै (सब स्वरूपन्की आडीसू १-१ तथा २ श्रीफल गादीकी आडीसू)। अंतमैं, मुठिया वारि चूनके दीवलावाली दुहैरा बातकी आरती थालीकी, **न्यौछावर** करि शंख आदि रुकवाय टेरा लीजिये। माला बडी

करि, खंड-सुजनी लगाय दर्शन खोलिये, अनवसर करिये। साँझकू नित्यक्रम।

विशेष: शयन पीछै गादी पै आधी सफेदी चढै। **कीर्तन**: पूरे दिन **जन्माष्टमीकी बधाई** झाँझसू।

वैशाख वद १२: **श्रृंगार**: परचारगीके (वस्त्र-कुलह उत्सववाले, घेरा धरैं) - तनीया बदले। ओढनी: चित्रकी।

सामग्री: राजभोगमैं सिखरनभात (११/१२ भेली होवैं तो दोनों क्रम होवैं)।

कीर्तन: वैशाख वद १४ तांईं *बाललीला*।

वैशाख वद १३: पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छा अनुसार। **दूसरी शैय्या मंडली**। **सामग्री**: अनवसरमैं १ सामग्री।

वैशाख वद १४: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छा अनुसार।

कार्यालयके लिये: अक्षय तृतीया तथा नृसिंह जयंतीके **दर्शनकौ समय लिखवाय देनौ**।

वैशाख वद ३०: **श्रृंगार**: मुकुट-काछनी-पीताम्बर बाकी रहे होय सो, कंठवस्त्र श्याम। तनीया तथा अन्य स्वरूपन्के वस्त्र काछनीके रंगके। शयनमैं कुलह मुकुटके रंगकी, वस्त्र काछनीके रंगके।

ओढनी: चित्रकी।

सामग्री: राजभोगमैं तरमेवा।

कीर्तन: पूरे दिन रासके।

वैशाख सुद १: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छा अनुसार।

अक्षय तृतीयाकी तैयारी: ❖अक्षय तृतीयासू नित्य चंदनकी आवश्यकता होवे यासू आजसू ही **चंदन घिसवेकी सेवा शुरु करि लेनी** ❖पंखा-पंखी, चंदनकी कटोरी आदि निकाल लेने ❖कुंजा-करुआ चिनवेके सूतराऊ वस्त्र मंगवाय लेने ❖संभव होय तौ प्रतिवर्ष अक्षत तृतीया तथा स्नान-यात्राकी जोड नई सिद्ध करवानी, पिछले वर्षकी अक्षय तृतीयाकी जोडमैं चोवाके छापा लगाय वाकू नृसिंहजीकी करि लेनी (**संभव होय तौ वस्त्र छापवेकी सेवा बालक-बहु-बेटी करैं**)।

वैशाख सुद २: **श्रृंगार**: वागा-कुलह कसूंबा छठ्ठके, सब आभरण हीराके। ओढनी: अभ्यंगकी।

विशेष: शयन पीछै गादी-तकियान् पै पूरी सफेदी चढै, खंड पै लकडीके खिलोना जम जावैं।

वैशाख सुद ३: **अक्षय तृतीया।** तोरण।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। पाग-पिछौरा सफेद चंदन-छापेके। श्रृंगार हलके, आभरण मोती तथा चंदनके। ओढनी: कमल अथवा चंदनके छापाकी। विशेष: आजसू नित्यमैं ***चौंसरके श्रृंगार*** (मात्र ४ ही मालाके, एकदम हल्के) शुरु। नित्यमैं कटिकी बत्ती बंद, बगनखा धरनौ आजसू अनिवार्य नहीं (उत्सव या भारी श्रृंगार पै आवैं)।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडी:बूंदी, मुरब्बाकी कटोरी, गोरस, तरमेवा, केसरी बिलसारु। सखडी: इमलीकी कढी तथा नित्यवत् घुलमा सतुआ। **उत्सवभोग**की अनसखडी: सतुआके लड्डू, गुलाबकौ सीरा, शीतलजल, तरमेवा, बिलसारु। सखडी: घुलमा सतुआ, दहीभात, संधाणा।

सामग्री-क्रममैं बदलाव: ❖घुलमा सतुआ आज ताँईं ❖राजभोगमैं नित्य बिलसारु शुरु (उत्सव होय तौ केसरी) ❖**उत्थापन**मैं नित्य शीतलजल शुरु।

अधिवासनकी तैयारी तथा क्रम: श्रृंगार होवैं तबतक तिबारीमैं चौकी लगाय तापै घुले भये चंदनकी कटोरी, केसर तथा अत्तर मिली भई चंदनकी गोली (५ बडी एवं १० छोटी), पंखी, कुंजा-करुआ, गुलाबदानी आदि पधराय अधिवासनकी तैयारी करि लेनी। राजभोग धरि इन सब वस्तून्कौ अधिवासन होवै। हाथेलीमैं थोडौ-सौ जल तथा अक्षत ले - ***ॐ विष्णो:, विष्णो:, विष्णो:! श्रीमद्भागवत पुरुषोत्तमस्य चन्दनोत्सव कर्तुं चन्दन अधिवासनं अहं करिष्ये*** - ये संकल्प बोलि जल छोडिये। चंदनकी कटोरी, पंखी आदि पै चंदनके टपका लगाय, मिसरी सन्मुख धरि धूप-दीप करिये। राजभोग सरे पहले ये सब वस्तु सराय कुंजा-करुआ भरि तैयार करि लेने।

चंदन धरायवेकौ क्रम: ❖समय भये राजभोग सराय, १ झारीजी तथा १ बीडा पधराय, सब स्वरूपन्कू माला धरिये, चंदन-पंखीकी तैयारी करि दर्शन खोलिये - अभी टकोरा नहीं ❖दंडवत् करि, शंख-घंटा-टकोरा बजत **श्री...जीकू ५**(पहले १ गोली वक्षस्थल, पाछैं १-१ गोली दोनों श्रीहस्त तथा दोनों चरणारविन्दमैं) **शालिग्रामजीकू ३, लालनकू ५** (श्री...जी वत्)तथा **पादुकाजीकू २** - या क्रमसू **चंदनकी गोली धरनी** ❖श्री...जीकू चार जोडी पंखा करिके सिंहासन पै दोनों तरफ धरिये (उपस्थित अन्य बालक तथा मुखियाजी भी एक-एक जोडी पंखा करकै पधरावैं) ❖माटीकौ कुंजा सिंहासन पै धरिये ❖शंख आदि बंद करवाय, झारीजी विजय करि पुन: १ झारीजी पधराय टेरा लीजिये ❖फूलमाला,पंखा तथा कुंजा बडे करिये ❖उत्सवभोग धरिये (१५ मिनिट)।

राजभोगसू शयन तककी सेवा: उत्सवभोग सराय सिंहासन पै झारीजी, २बीडा, १ चंदनकी कटोरी (सफेद वस्त्र लपेटी भई), पडघी पै बगली तकीयाके पास (बीडावाली तरफ) माटीकौ कुंजा तथा पीठिकाके पीछै २ पंखा खौंस देने (**अब नित्य राजभोगमैं सिंहासन पै इतनी वस्तु रहैं**)। फूलमंडली अथवा **खसकौ बंगला** (चंदन धरवेमैं अवरोध करे यासू उत्सव भोग सरे पै धरनौ),फूलमाला धराय, खंडके आगे **चोपडकी ३ चोकी** लगाय दर्शन खोलिये। राजभोगमैं आरती थालीकी। राजभोग आरती पीछै **मालाजी बडे करते समय श्रीअंगसू चंदनकी सब गोली विजय करि सिंहासन पै एक कटोरीमैं पधराय देनी, सब स्वरूपन् की गोली बडी हो जावैं**। साँझकू सब क्रम नित्यवत्। शयनके दर्शनमैं **बडी झारीजी तथा माटीकौ कुंजा आवैं**। सफेद वस्त्रसू ढांकि चंदनकी कटोरी भी आवै, पोढवेमैं यही शैय्याजी पै जाय। जानकारीके लिये: कामवनमैं शयनके चंदनमैं केसर भी मिलै।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖मंगलासू गादी-तकीयान् पै पूरी सफेदी चढै ❖नित्यमैं आरसी मोती, काष्ठ (लकडी) आदिकी लेनी - जरदोशी आदिकी भारी बन्द ❖पीठिकाकी ओढनी सूतराउ पाईदार शुरु (कामवनमैं आजसू पीठिकाकी ओढनी बन्द होय जावै परंतु सूरतमैं सूतराउ ओढनीकौ क्रम है) ❖राजभोगमैं पैंडाके नीचे लकडीके पट्टा शुरु ❖राजभोगसू संध्या-आरती सिंहासनकी पंखी शरु ❖राजभोगमैं सुजनी तथा गेंद-चौगान बंद, चोपडकी ३ चौकी शुरु ❖खंड पै लकडीके खिलौना शुरु, चौपड-पाँसे लकडी अथवा मोतीके ❖अनवसरमैं शैय्याजीके पास छोटे झारीजी, माटीकौ करुआ, बीडाकी तपकडीमैं ही एक चंदनकी कटोरी (सिंहासनसू अलग) भी शुरु ❖शयनके दर्शनमैं कुंजा तथा चंदनकी कटोरी शुरु ❖शयनमैं छोटी झारीजी बंद, शैय्याजी पर भी नहीं ❖ नित्यमैं जरीकी किनारीवाले वस्त्र बन्द, पाईदार (सूतराउ किनारीके) वस्त्र शुरु (उत्सव या नियम होय तौ धरैं)।

वैशाख सुद ४: **श्रृंगार**: परचारगीके (पाग-वस्त्र पिछले दिनके - तनीया बदलो जाय)।

वैशाख सुद ५: पाग-पिछौरा नृसिंह जयंतिके - पिछले वर्षके (नौंध: कोई **उत्सवके आये पहले वा उत्सवके वस्त्र लिखे होवैं तो पिछले वर्षके लेने**। नये वस्त्र तो प्रथम वार वा उत्सव पै ही आवैं, उत्सव निकल गये पीछै कोई भी ले सकैं)।

वैशाख सुद ६: **श्रृंगार**: वस्त्र स्नानयात्राके, तीन चौंचकौ फैंटा - शयनमैं भी (तीन कलगीवालौ फैंटा - शीषफूल तथा फैंटा पै १-१ कतरा आवैं)। **सामग्री**: राजभोगमैं चना दालकौ वारा (थालमैं २ नींबूके ४ टूक)।

वैशाख सुद ७: कुलह-पिछौरा रथयात्राके (सफैद कारचोबा), श्रृंगार हल्के।

वैशाख सुद ८: वस्त्र गुलाबी, बाकी नित्यक्रम। **तीसरी शैय्या मंडली**। **सामग्री**: अनवसरमैं १ सामग्री।

वैशाख सुद ९: **आमकौ आखौ ओसरा** (पहलौ)। नौंध: ये क्रम ओसराके दिनकौ है, **ओसरा नहीं होवै तौ नित्यक्रम**।

श्रृंगार: पाग तथा जरीकी किनारीवाले केसरी वस्त्र-पिछौरा। **पादुकाजीकू वस्त्र, शैय्याजी पै अनवसरमैं सफेद चादर भी धरैं**। ओढनी: इच्छानुसार। **सामग्री**: **राजभोगकी** अनसखडीमैं अमरस, आमकौ बिलसारु, आमके टूक, आमकी बूंदी-मोहनथाल अथवा कोई भी एक सामग्री। सखडीमैं आमके भुजैना,फजीता (रायता), कढी, अमरस भात, रसदार टोकरी आदि सब रहैं।

वैशाख सुद १०: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार। विशेष: खसके टेरा, जलके खिलौना, फव्वारा देख लेने।

वैशाख सुद ११: मोहिनी एकादशी।

श्रृंगार: श्रृंगार कुंडलके, ओढनी इच्छानुसार। **सामग्री**: राजभोगमैं एकादशीकौ सीधा तथा तरमेवा।

वैशाख सुद १२: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार। **सामग्री**: राजभोगमैं सिखरन भात।

वैशाख सुद १३: पाग-पिछौरा अक्षय तृतीयाके (चंदन छापेके), ओढनी: इच्छानुसार। संभव होय तौ **राजभोगमैं फूलमंडली** (नौंध: नियमकी नहीं है, आज राजभोगकी मंडलीकौ छेलौ दिन है यासू आग्रह राखनौ)।

वैशाख सुद १४: **नृसिंह जयंति।** तोरण (आसोपालव, गलगोटा)।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। पाग-पिछौरा चंदन-चोवाके छापेवाले - आज पादुकाजीकू भी वस्त्र आवैं। सब आभरण माणिकके, श्रृंगार **भारी इकहरा** - चंपकली, गजमुक्ता आदि हरे। ओढनी: जन्माष्टमीकी। **सामग्री**: **राजभोग**की अनसखडी: बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी, रायता, तरमेवा, बिलसारु, नींबू-आदापाचरी। सखडी: तीनकूडा, धोवादाल, पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, भुजैना। **शयनभोग** अनसखडी: सतुआके लड्डू, मुरब्बाकी कटोरी, १ सामग्री (आधी अभी, अधी शयनके बंटामैं आवै)। सखडी: घुलमा सतुआ, दहीभात, संधाणा, मिर्चको शाग, अडबंगा, कढी, बैंगनकौ रायता।

सामग्री-क्रममैं बदलाव: ❖**उत्थापन-भोग**मैं एक दिन चना, एक दिन पीले मूंगकी **भीजी दाल**

शुरु (काली मिर्च-नमक-अजमान-नींबू छिडकी भई), एकादशीकौ व्रत होय ता दिन दाल नहीं आवै।

अनवसर तक सेवाक्रम: राजभोग धरवे तक सब क्रम नित्यवत्। आजसू रथयात्राके एक दिन पहले तक **राजभोग दर्शनमैं श्रीयमुनाजी भरी जावैं** (एक थालमैं यमुनाजीके भावसू जल भरिके तामैं फूलकी पंखुडी, चांदी या लकडीके तैरवेवाले खिलौना पधराने), आरती पीछे मंदिरमैं **जलकौ छिडकाव**, **खसके टेरा बँधैं**, सिंहासन पै अनवसरमैं गुलाबदानी (माला बडी करि यासू शैय्याजी तथा पैंडा पै गुलाबजल छिडक्यौ जाय, श्रीयमुनाजीमैं थोडौ-सौ पधरानौ), तथा **फव्वारे** (राजभोग, संध्या-आरती तथा शयनके दर्शनमैं) शुरु। दोपहरकू शैय्याजी खुली रहैं, रात्रीकू एक चादर ओढैं (अभ्यंग अथवा उत्सव होय तौ दोपहरकू चादर आवै)।

पंचामृत/नृसिंह जन्म: साँझकू उत्थापन भोग धरिके पंचामृतकौ थाल, तिलक, पीताम्बर, फूलमाला, श्रीफल भेटकी तैयार करि लेनी। संध्या-आरतीकौ टेरा लै (पंचामृतमैं **फूलमाला संध्या-आरतीकी ही रहे**), दूधको डबरा अथवा ४ नग अनसखडीके भोग धारि, पंचामृतकी तैयारी करि, नृसिंह जन्मके दर्शन खोलिये। दंडवत् करि शंख-घंटा-टकोरा बजत श्रीशालिग्रामजीकू चोकी पै पधराय **पंचामृत करिये**। पंचामृत करि उनकू सिंहासन पै अलग वस्त्र (आधौ बिछाय, आधौ उढायकै) पै पधराय फूलमाला धरिये। **श्री...जीकू तिलक** करि दो बीडा कंकूमैं डुबाय गादी पै दोनों तरफ पधराय **अन्य स्वरुपन्कू तिलक** करिये, **पादुकाजीकू नहीं**। शंख-टकोरा बंद कराय झारीजी बडी करि **दोनों झारीजी** भरि पधराय टेरा लीजिये। आज श्री...जीके श्रृंगार विजय तथा पादुकाजीकी सेवा **शयनके दर्शन पीछे** होवैं। फूलमाला बडी करि एक डबरामैं शीतलजल श्री...जी सन्मुख पधराय (तामैं कटोरी तैराय) शयनभोगकी तैयारी करिये। शयनभोगकी विज्ञप्ति करते समय शीतलजलके डबरामैं ही जलसू आचमन करवाय शीतलजल सराय घडी दिखाईये, ड्यौढी (३० मिनिट)। समय भये भोग सराय श्रीशालिग्रामजीकू निजस्थान पधराय तिबारीमैं शयनके दर्शन खोलिये। आज शयनमैं पीठक निजमंदिर वाली ही पधारे, ओढनी सहित। **शयनके दर्शनमैं फूलमंडली**। आजसू रथयात्राके एक दिन पहले तक **शयनके दर्शनमैं फव्वारे चलैं**। शयनमैं आरती थालीकी।

वैशाख सुद १५: **श्रृंगार**: परचारगीके (वस्त्र-पाग नृसिंहजीके, तनीया बदले) हलके - मोती अथवा मीनाके आभरण।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖आजसू पादुकाजीके वस्त्र बंद, शामकू सेवा होवै तब एक सफेद वस्त्र आवै। अभ्यंग, कुंडलके श्रृंगार या ओसरा होय ता दिन सुबहसू वस्त्र आवै।❖❖❖

जेठ (ज्येष्ठ)

❖❖❖

जेठ वद १ : नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

जेठ वद २ : नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

जेठ वद ३ : **आमकौ आखौ ओसरा** (दूसरौ)

श्रृंगार: पाग तथा जरीकी किनारीवाले केसरी वस्त्र-पिछौरा। ओढनी: इच्छानुसार। **पादुकाजीकू वस्त्र, शैय्याजी पै अनवसरमैं सफेद चादर भी धरैं**।

सामग्री: **राजभोगकी** अनसखडीमैं अमरस, आमकौ बिलसारु, आमके टूक, आमकी बूंदी/ मोहनथाल (अथवा कोई भी एक आमकी सामग्री)। सखडीमैं आमके भुजैना,फजीता (रायता), कढी, अमरस भात, रसदार टोकरी आदि सब रहैं।

जेठ वद ४ : नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

जेठ वद ५ : नित्यक्रम। **सामग्री**: राजभोगमैं चना दालकौ वारा (तुवरकी जगह आवै), कौर चनाकी दालसू सनै। थालमैं २ नींबूके ४ टूक।

जेठ वद ६ : नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

जेठ वद ७ नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

जेठ वद ८ अथवा ९ : पहले दिन वार सुंदर होय (रवि या मंगल वार न होय) तौ **अभ्यंग**। वार सुंदर नहीं होय तौ दूसरे दिन अभ्यंग करनौ। जा दिन अभ्यंग करैं वा दिन **श्रृंगार**: कुंडलके। **पादुकाजीकू वस्त्र, शैय्याजी पै अनवसरमैं सफेद चादर भी धरैं**। ओढनी: अभ्यंगकी।

जा दिन अभ्यंग न होय ता दिन: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

जेठ वद १०: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

जेठ वद ११: अपरा एकादशी।

श्रृंगार: कुंडलके, ओढनी इच्छानुसार। **सामग्री**: राजभोगमैं एकादशीकौ सीधा तथा तरमेवा।

जेठ वद १२: नित्यक्रम। **सामग्री**: राजभोगमैं सिखरन भात।

जेठ वद १३: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

जेठ वद १४: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

जेठ वद ३०: **वड अमावस्या।**

श्रृंगार: **अभ्यंग**। कुलह मोतीकी-जडाउ, वस्त्र रथयात्राके (सफेद कारचोबाके)। **पादुकाजीकू वस्त्र, शैय्याजी पै अनवसरमैं सफेद चादर भी धरैं**। ओढनी: जन्माष्टमीकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं बूंदी, मुरब्बाकी कटोरी, पीली सुहारी, गोरस, तरमेवा। सखडीमैं दहीभात, इमलीकी कढी, संधाणा (नित्यसू अलग)। **सेवाक्रम**: राजभोगमैं आरती थालीकी।

जेठ सुद १: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

जेठ सुद २: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

जेठ सुद ३: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

जेठ सुद ४: **आमकौ आखौ ओसरा** (तीसरौ)।

श्रृंगार: पाग तथा जरीकी किनारीवाले केसरी वस्त्र-पिछौरा। ओढनी: इच्छानुसार। **पादुकाजीकू वस्त्र, शैय्याजी पै अनवसरमैं सफेद चादर भी धरैं**।

सामग्री: **राजभोगकी** अनसखडीमैं अमरस, आमकौ बिलसारु, आमके टूक, आमकी बूंदी/ मोहनथाल (अथवा कोई भी एक आमकी सामग्री)। सखडीमैं आमके भुजैना,फजीता (रायता), कढी, अमरस भात, रसदार टोकरी आदि सब रहैं।

जेठ सुद ५: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

जेठ सुद ६: नित्यक्रम। **सामग्री**: राजभोगमैं चना दालकौ वारा (कौर चनाकी दालसू), थालमैं नींबूके ४ टूक।

जेठ सुद ७: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

जेठ सुद ८ अथवा ९: पहले दिन वार सुंदर होय (रवि या मंगल वार न होय) तौ **अभ्यंग**। वार सुंदर नहीं होय तो दूसरे दिन अभ्यंग करनो। जा दिन अभ्यंग करें वा दिन **श्रृंगार**: कुंडलके। **पादुकाजीकू वस्त्र, शैय्याजी पै अनवसरमैं सफेद चादर भी धरैं**। ओढनी: अभ्यंगकी।

जा दिन अभ्यंग न होय ता दिन: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

जेठ सुद १०: **गंगा दशहरा।** तोरण (आसो.)

श्रृंगार: वस्त्र-कुलह केसरी (जरीकी किनारीवाले), सब आभरण मोतीके। **पादुकाजीकू वस्त्र, शैय्याजी पै अनवसरमैं सफेद चादर भी धरैं**। ओढनी: जन्माष्टमीकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं बूंदी, गूंजा, सेवके लड्डू, मुरब्बाकी कटोरी, सुहारी, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी। सखडीमैं इमलीकी कढी, दहीभात, फीके खाजा, बूंदी अथवा ककडीकौ रायता।

सेवाक्रम: राजभोगमैं **आरती थालीकी**। **शयनमैं फूलमंडली** (संभव होय तौ कमलकी)।

जानकारीके लिये: कामवन तथा गोविन्दजीकी हवेलीमैं आज राजभोग अरोगते समय श्रीयमुनाजीके भावनाजी पधारैं जो राजभोगके दर्शनसू पहले विजय होय जावैं।

कार्यालयके लिये: स्नानयात्राके दर्शनकौ समय लिखवाय देनौ।

जेठ सुद ११: निर्जला एकादशी।

श्रृंगार: कुंडलके, वस्त्र तथा ओढनी: इच्छानुसार। **सामग्री**: राजभोगमैं एकादशीकौ सीधा,तरमेवा।

जेठ सुद १२: नित्यक्रम। **सामग्री**: राजभोगमैं सिखरनभात।

जेठ सुद १३: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

जेठ सुद १४: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

सेवाक्रम (ये क्रम स्नानयात्राके अगले दिनकौ है, तिथिकौ नियम नहीं): शयनभोग आये स्नानकी दोनों गागर खासा करि, अधिवासनके लिये चंदन, अक्षत, जलकी लोटी, मिसरीकौ दौना तैयार करि राखने, धूपके लिये कोलसा भी प्रकटाय लेने। शयन आरती पीछै टेरा लेत ही (पौढवेसू पहले) गागरन्कू श्री...जी सन्मुख पधराय स्नानयात्राके जलको अधिवासन करिये।

स्नानके जलको अधिवासन: जलकी गागर - २ (१ बडी, १ छोटी), सफेद वस्त्रसू लिपटी भई (अभी मुख खुले राखने) श्री...जी सन्मुख पधरावनी। सर्वप्रथम हाथमैं जल तथा अक्षत लै - *ॐ विष्णो: विष्णो: विष्णो: श्रीमद्भागवत् पुरुषोत्तमस्य प्रात: स्नानार्थं जलाधिवासनं अहं करिष्ये* - यह संकल्प बोलि जल छोडिये। अब, मिसरीको दोना सन्मुख पधराय धूप-दीप करिये। फेरि, इन पै चंदनके टपका करिये। अन्तमैं, इन गागरन्मैं चंदन, खसके इत्रकी १ शीशी, मोगराकी कली या फूल (गुलाबके पत्ता नहीं पधराने), खस तथा तुलसीजी एक अलग पोटलीमैं बाँधिकै पधराने, गुलाबजल तथा घुली भई केसर पधराय हांडान्के मुख बांधि इनकू सिंहासनके सन्मुख ही पधराय राखने , रात्री भर यहीं बिराजैं। या पीछै श्री...जीकू पोढाईये।

जेठ सुद १५ अथवा ज्येष्ठा नक्षत्र *उदयात्* होय ता दिन **स्नानयात्रा।** तोरण (असोपालव, गलगोटा)।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। श्रृंगार मणिकके, भारी (बडे उत्सववत् चंपकली आदि सब धरैं)। **धोती-उपरणा सफेद**, चंदन-छापाकी किनारीवाले (आजके वसत्रन् मैं पतली केसरी चंदनकी किनारी बनै, अथवा सफेद वस्त्रन् मैं केसरी सूतराऊ किनारीके भी धरैं हैं)। **पाग** सफेद, केसरी छापावाली (धोती पै पाग आज ही आवै)। **आज उपरणा पीठिका पै** (मुकुटवत्) धरैं। **पादुकाजीकू वस्त्र, शैय्याजी पै अनवसरमैं सफेद चादर भी धरैं**। ओढनी: जन्माष्टमीकी।

यदि स्नानयात्राकी तिथि आगै/पीछै होय जावै तो.... यदि १४मैं स्नानयात्रा पड जावै तो आज आषाढ वद १ के श्रृंगार, यदि आषाढ वद १ मैं स्नानयात्रा होवै तो आज श्रृंगार कुंडलके।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं नाका किये भये आम (५१), अंकूरी (उपर थोडे कोपराके लंबे टूक करि सजाय देने), बीज-चिरौंजीके लड्डू (२०-२० नग), बूंदी, मुरब्बाकी कटोरी, शीतलजलके २ डबरा (मिसरी तथा शक्करके १-१) गोरस, तरमेवा, अमरस (बिलसारुके स्थान पै)। सखडीमैं इमलीकी कढी, दहीभात तथा संधाणा आवैं । **अनवसर**: नित्यके बँटाके उपरान्त एक थालमैं थोडेसे

आम,अंकूरी तथा शीतलजलकौ कटोरा शैय्याजीके पास (भीने वस्त्रसू ढाँकि) आवैं। **उत्थापन भोग**: छुंकी हुई अंकूरी (आज भींजी दाल नहीं)।

सेवाक्रम: शंखनाद प्रात: ५:३० बजे, मंगला आरती भीतर होय। मंगलभोग धरि स्नानके लिये स्नानकी सब तैयारी करि लेनी। मंगला आरती भये पै श्री...जीकू श्रृंगार चौकी पै पधराय सब आभरण बडे करि अच्छे प्रकारसू श्रीअंगकौ मौम बडौ करि फुलेल समर्पित करिये। गये वर्षके स्नानयात्राके धोती-उपरणा धरने (उपरणा जनेऊकी तरह वाम स्कंधके उपरसू, दक्षिण श्रीहस्तके नीचेसू निकाल दोनों छोर मिलाय गाँठ लगाय देनी)। अब, **फागुनके स्वर्णवाले शयनके आभरण** (जानकारीके लिये: स्नानके समय कामवनमैं श्रीनारायणदासजी ब्रह्मचारीवाले प्राचीन आभरण धरैं, तिनके भावसू यहाँ फागुनके आभरण धरैं हैं), **कटिमेखला तथा नकवेसर भी स्वर्णके ही धरैं** (आज स्नानके समय मुखारविन्द पै तिलक-बाँक नहीं रहैं)। निजमंदिरके मध्यमैं मंदिर-वस्त्र करि स्नानकी तैयारी करिये(जानकारीके लिये: कामवन तथा श्रीगोविन्दजीकी हवेलीमैं स्नानके दर्शन तिबारीमैं होवैं)।

स्नानकी तैयारी: स्नानकौ बडौ **थाल** पधराय वामैं चन्दनसू साथिया करि **स्नानकी चौकी** (दुहैरा वस्त्र बिछाय) धरिये। थालके पास **स्नानकी दोनों गागर**, चाँदीकी लोटी, अलग-अलग कटोरीन्मैं **सफेद तथा केसरी चन्दन** और **पंचामृतकौ शंख** तथा **तुलसीदल** , **तिलककी थाली** जामैं २ बीडा पधराईये ।

स्नानके दर्शन: शंख-घंटा-टकोरा बजत श्री...जीकू स्नानके पाट पै पधराय दर्शन खोलिये (जानकारीके लिये: पंचम गृहमैं स्नानकौ संकल्प नहीं होवै, अन्य घरन् मैं होवै)। तुलसीदलकू सफेद तथा केसरी चंदनमैं डुबाय दोनों चरणमैं समर्पिये, दो बीडा थालमैं चौकीके दोनों बगल धरिये (आज तिलक नहीं होवैं)। पंडितजी ***सुवर्ण धर्मसूक्त*** **पढैं तहाँ तांईं स्नान होवैं**। मंत्रोच्चार समाप्त होवै तब शंखकू तीन बार श्रीमस्तकके उपरसू ओसार घंटा-टकोरा बंद करवाय टेरा डारिये।

शयन तककी सेवा: अब, धोती-उपरणा तथा सब आभरण बडे करि श्री...जीकू एक अलग थालमैं पधराय सुहाते ४ लोटी सादा जलसू स्नान करवाईये (श्री...जीकू संपूर्ण श्रीअंग पै चंदनसू अभ्यंग नहीं होवै, अन्य स्वरूपन् कू ही होवै)। अंगवस्त्र करि श्रृंगार चौकी पै पधराय अत्तर (खस या गुलाबकौ) समर्पण करि श्रृंगार करिये। श्री...जीके श्रृंगार होवैं इतनेमैं **अन्य सभी स्वरूपन्कू (पादुकाजी भी)** दोनों प्रकारके चन्दनसू अभ्यंग कराय, स्नान करवाय देने। या पीछै शयन तक सब सेवा नित्यक्रम प्रमाणे चलै। राजभोगमैं खसकौ बंगला, आरती थालीकी। **शयनमैं फूलमंडली**। ❖ ❖ ❖

आषाढ

❖❖❖

आषाढ वद १: **श्रृंगार**: धोती-उपरणा स्नानयात्राके, तीन चौंचकौ फैंटा। ओढनी: इच्छानुसार।

नौंध: ये श्रृंगार स्नान-यात्राके दूसरे दिनके हैं, स्नान आगै/पीछै होय जावै तब ये श्रृंगारकी तिथि तदनुसार आगै/पीछै करि लेनी।

आषाढ वद २: नित्यक्रम। **सामग्री**: राजभोगमैं मूंग दालकौ वारा (कौर मूंग दालसू), थालमैं नींबूके ४ टूक।

आषाढ वद ३: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

आषाढ वद ४: **श्रीगिरधरलालजी महाराज** (वि.सं. २००७)**कौ उत्सव**।

श्रृंगार: कुलह, वस्त्र केसरी - जरीकी किनारीवाले। **पादुकाजीकू वस्त्र, शैय्याजी पै अनवसरमैं सफेद चादर भी धरैं**। ओढनी: भारी।

सामग्री: राजभोगमैं बूरा-बुरकी, मुरब्बाकी कटोरी, तरमेवा।

सेवाक्रम: राजभोगमैं आरती थालीकी। **शयनमैं फूलमंडली** (संभव होय तौ कमलकी)।

कार्यालयके लिये: फूल श्रृंगारके दर्शनकौ समय लिखवाय देनौ।

आषाढ वद ५: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

आषाढ वद ६: **उत्सव श्रीजमुना बहुजी** (श्रीमाजी महाराज)कौ।(**नौंध**: पंचमगृहमैं बहुजीको उत्सव मात्र आज ही मनै)।

श्रृंगार: कुंडलके। वस्त्रकौ नियम नहीं, केसरी या चंदनी लेने। **पादुकाजीकू वस्त्र, शैय्याजी पै अनवसरमैं सफेद चादर भी धरैं**। ओढनी: वस्त्रके अनुसार।

सामग्री: राजभोगमैं आमकी बरफी या सीरा, मुरब्बाकी कटोरी। **सेवाक्रम**: शयनमैं **फूलमंडली**।

जानकारीके लिये: आज, एकादशी तथा अमावस्याकू गोन्दिजी हवेलीमैं फूल श्रृंगार होवैं। दोनों स्थान पै एक दिनमैं सेवा न पहुँची जाय यासू पाल हवेलीमैं फूल श्रृंगारकी तिथि ८ तथा १२ राखी हैं। ११/१२ एक होवैं तो १३कू फूल श्रृंगार।

कामवनमैं फूल श्रृंगार ६ तथा अमावस्याकू होवैं। श्रीब्रजवल्लभजी वाली प्रणालिकामैं उल्लेख मिलै है कि प्राचीन समयमैं पंचम-निधि श्रीगोकुलचन्द्रमाजीकू ११के दिन फूल श्रृंगार होते। परंतु वाही तिथि पै सप्तम-निधि श्रीमदनमोहनजीमैं भी यह क्रम होयवेसू श्रीदेवकीनन्दनजीने तिथि बदलके आ.व. ६ करी हती।

आषाढ वद ७: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

आषाढ वद ८: प्रथम फूल-श्रृंगार **(मल्लकाछ-टिपाराके)**।

श्रृंगार: अभ्यंग (फूल श्रृंगार होवेसू या दिन अभ्यंग निश्चित राख्यो है)। श्रृंगार दुमालाके, वस्त्रके रंगकौ नियम नहीं - हरे, गुलाबी (जो फूल श्रृंगार पै सुंदर लागैं) लेने। **पादुकाजीकू वस्त्र, शैय्याजी पै अनवसरमैं सफेद चादर भी धरैं**। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: शयनभोगमैं फूल श्रृंगारकी १ सामग्री इच्छानुसार, मुरब्बाकी कटोरी।

सेवाक्रम: अनवसर भये पहले मापके लिये टिपाराके श्रृंगारकी संपूर्ण जोड तथा वेणु-वेत्र याद करकै अवश्य बाहर निकाल लेने। साँझकू उत्थापन भोग सरायके, खंड-चौपाट सराय, श्री...जीकू श्रृंगार चौकी पै पधराय वेणु-वेत्र, आभरण बडे करि **फूलके श्रृंगार** करि श्री...जीकू पाछे सिंहासन पै पधराईये, बगलमैं फूलके वेणु-वेत्र धरिये (यदि फूलके मौहरा, पंखी तथा पीठिका भी सिद्ध किये होवैं तो श्री...जीके श्रृंगार होते समय धरि देने)। आरसी दिखाय, नित्यवत् फूलमाला तथा वेत्र धरि संध्या-आरतीके दर्शन खोलिये। आरती पीछै वेत्र बडौ करि गादीजी पर ही बगलमैं धरि देनौ, विजय नहीं करनौ। टेरा डारि सीधे शयन भोग आवैं, फूलके श्रृंगार शयन पीछै बडे होवैं। शयनकौ टेरा लै श्री...जीकू श्रृंगार चौकी पै पधराय फूल श्रृंगार बडे करि श्री...जीकू पौढाने, **फूल श्रृंगार** एक टोकरी या थालीमैं पधराय **शैय्याजीके पास फूलमालाके बगलमैं पधराय देने**।

आषाढ वद ९: नित्यक्रम।

आषाढ वद १०: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

कार्यालयके लिये: रथयात्राके लिये आमकी कहलवाय देनी। रथकौ साहित्य भी संभाल लेनौ। रथयात्राके दर्शनकौ समय लिखवाय देनौ।

आषाढ वद ११: योगिनी एकादशी। **श्रृंगार**: धोती-फैंटाके। वस्त्रकौ रंग तथा ओढनी: इच्छानुसार।

सामग्री: राजभोगमैं एकादशीकौ सीधा तथा तरमेवा।

आषाढ वद १२: दूसरे/अंतिम फूल श्रृंगार **(मुकुट-काछनीके)**। **नौंध**: ११/१२ भेली होवैं तो फूल श्रृंगार १३ कू होवैं।

श्रृंगार: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी फूल श्रृंगारके अनुसार लेने। **पादुकाजीकू वस्त्र, शैय्याजी पै अनवसरमैं सफेद चादर भी धरैं**।

सामग्री: **राजभोग**मैं सिखरन भात। **शयनभोग**मैं फूल श्रृंगारकी १ सामग्री इच्छानुसार, मुरब्बा।

सेवाक्रम: अनवसर भये पहले मापके लिये मुकुट-काछनीके श्रृंगारकी संपूर्ण जोड तथा वेणु-वेत्र याद करकै अवश्य बाहर निकाल लेने। साँझकू उत्थापन भोग सरायके, खंड-चौपाट सराय, श्री...जीकू श्रृंगार चौकी पै पधराय वेणु-वेत्र, आभरण बडे करि **फूलके श्रृंगार** करिये। फूलको पटका पीठिका पै धराये पीछै श्री...जीकू सिंहासन पै पधराईये, बगलमैं फूलके वेणु-वेत्र धरिये (यदि फूलके मोहरा, पंखी तथा पीठिका भी सिद्ध किये होवैं तो श्री...जीके श्रृंगार होते समय धरि देने)। **आरसी दिखाय**, नित्यवत् फूलमाला तथा वेत्र धरि संध्या-आरतीके दर्शन खोलिये। आरती पीछै वेत्र गादीजी पर ही बगलमैं धरि देनौ, विजय नहीं करनौ। टेरा डारि सीधे शयन भोग आवैं, फूलके श्रृंगार शयन पीछै बडे होवैं। शयनकौ टेरा लै श्री...जीकू श्रृंगार चौकी पै पधराय फूल श्रृंगार बडे करि श्री...जीकू पौढाने, **फूल श्रृंगार** एक टोकरी या थालीमैं पधराय **शैय्याजीके पास फूलमालाके बगलमैं पधराय देने**।

विशेष नोंध: यदि ११-१२ भेले होवैं तो फूल श्रृंगारकौ सब क्रम १३ कू करनौ।

आषाढ वद १३: नित्यक्रम। **विशेष**: शयन पीछै निजमंदिरमैं मोतीकौ बंगला तथा सांगामाची पै खसकौ बंगला चढैं, १४कू जन्मदिन होयवे सू।

आषाढ वद १४: **श्रीद्वारिकेशलालजी महाराज** (कामवन-सूरत) को **जन्मदिन** (वि.सं. २००९)। तोरण।

श्रृंगार: पाग-पिछौरा केसरी, जरीकी किनारीवाले। ओढनी: इच्छानुसार, भारी। **पादुकाजीकू वस्त्र, शैय्याजी पै अनवसरमैं सफेद चादर भी धरैं**। **सामग्री**: **मंगलभोग**मैं बूंदी (प्रसादी बूंदी पूरे दिन वैष्णवन्मैं बँटवानी)। **राजभोग**मैं कोई भी एक प्रकारके लड्डू (उडदके नहीं), मुरब्बाकी कटोरी।

आषाढ वद ३० : **श्रृंगार**: कुंडलके। **सामग्री**: राजभोगमैं तरमेवा।

आषाढ सुद १ : **श्रृंगार**: वागा अक्षय तृतीयाके (चंदनके छापावाले)। नौंध: यह क्रम रथयात्राके अगले दिनकौ है, यदि रथयात्रा आगै पीछै होवै तौ ध्यान राखनौ।

सेवाक्रम: राजभोगमैं छिडकाव तथा जमुनाजीकौ थाल आज ताँईं आवैं। शयनमैं फूलमंडली। आज श्री...जीके पौढे पीछै दोनों घोडा श्रृंगार करि (फूलमाला नहीं) शैय्याजीके पास, श्री...जीकी तरफ मुख करि पधराने।

विशेष: चौकमैं **रथकी तैयारी** करकै ही सेवासू बाहर आनौ (रथके साज-श्रृंगार करि, रथके आगै मजबूत रस्सी बाँधि थोडो रथ खैंचकै देख लेनौ, डोलतिबारीमैं पिछवाई भी बाँध देनी)। रथकी गादी पै **गादी पै सफेदी नहीं चढै**। ओढनी: जन्माष्टमीकी। **रथयात्राके दिन मंगलामैं श्री...जी तिबारीमैं ही बिराजैं**।

कार्यालयके लिये: आज शयन पीछै चौकी सफाई करवाय खाली करि लेनौ, दर्शनकौ कठैडा घुमाय देनौ तथा **जलकी हौज खाली** करवाय चौकके बाहर पधराय देनी।

आषाढ सुद २ अथवा जा दिन पुष्य नक्षत्र उदयात् होय: **रथयात्रा।** तोरण (आसोपालव)।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। रथमैं बिराजैं तब तक: कुलह, चाकदार वागा श्वेत कारचोबाके (चरणचौकी तथा कंदरावस्त्र लाल), **श्रृंगार दुहैरा** (तिलक-अलकावली भी) - श्रीमस्तक पै माणिकके,बाकी सब हीराके। रथमैंसू पधारकै: **हल्के इकहरा** (तिलक-अलकावली भी), चाकदार वागा बडे करकै सफेद कारचोबके पिछौरा धरैं (चरणचौकी वस्त्र बदलकै सफेद)। ओढनी: सिंहासन पै सफेद कारचोबाकी (जन्माष्टमीकी ओढनी रथमैं रहै)।

जानकारीके लिये: वि.सं. १५८७में रथयात्राके दिन श्रीमहाप्रभुजीने बनारसके हनुमान घाट पै *आसुर-व्यामोह लीला* करी हती। या कारणसू बडौ उत्सव होयवे पर भी श्री...जी सफेद वस्त्र धरैं, रथमें सू पाछे पधारकै श्रृंगार हल्के होय जावैं तथा सफेदी भी बडी नहीं होवै सो जानोगे।

सामग्री: **रथके पहले तीन भोग** (प्रत्येक भोगमैं): एक टोकरीमैं ४-६ नाका किये भए आम, थोडी-सी अंकूरी (कोपराके थोडे टूक उपर बिछाय) तथा शीतलजलकौ डबरा (डबरामैं एक कटोरी सन्मुख लायकै तैरानी)। **रथके बडे भोग**: २०-२५ नाकावाले आम, अंकूरी, शीतलजलकौ डबरा, तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, सेवके लड्डू, गूंजा, मठडी, बीज-चिरौंजीके लड्डू (सब सामग्रीन्के ८-१० नग बडे),

मुरब्बा तथा उत्सवभोगके थालमैं मेदापूडी, दही, संधाणा, गुलाबकौ सीरा आवैं। **राजभोग**की अनसखडीमैं बूंदीके लड्डू, मुरब्बाकी कटोरी, तरमेवा, आमकौ केसरी बिलसारु, नींबू-आदापाचरी। सखडीमैं तीनकूडा, धोवादाल, पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, भुजैना, दहीभात तथा इमलीकी कढी। **अनवसर**मैं एक थालमैं शीतलजल, ४ आम तथा थोडी-सी अंकूरी भीने वस्त्रसू ढाँकि आवैं । **उत्थापन**मैं छुकी भई अंकूरी। **शयनभोग**मैं अमरस-भात।

सामग्री-क्रममैं बदलाव: ❖उत्थापन भोगमैं चना/मूंगकी दाल आजसू नहीं आवैं।

सेवाक्रम: **शंखनाद प्रात: ५:१५ बजे** (मंगलासू पहले दोनों घोडा सराय रथमैं जोड देने) । **मंगलामैं श्री...जी तिबारीमैं ही बिराजैं, दर्शन करवाने अनिवार्य नहीं**, मंगलामैं फूवारा अवश्य चलै, फेरि बन्द। श्रृंगार भये पै आरसी दिखाय, तुलसी समर्पण करि, ग्वालके दूधकौ कटोरा अथवा अनसखडीके ४ नग भोग धरि झारीजी तथा सिंहासनकी दोनों चाँदीकी पडघी सराय बाहर आईये। झारीजी भरकै सीधे रथमैं पधाराय, दोनों घोडान्कू फूलमाला धराय **रथकौ अधिवासन** करिये (श्रृंगार होते रहैं तब ही अधिवासनके लिये जलकी लोटी, अक्षत, एक कटोरीमैं थोडौ-सौ घिसौ भयौ चंदन, मिसरीकौ दौना तथा धूप-दीपकी तैयारी करि लेनी) । हाथमैं जल तथा अक्षत लै यह संकल्प बोलिये - *ॐ विष्णु: विष्णु: विष्णु: श्रीमद्भागवत् पुरुषोत्तमस्य रथाधिरोहणार्थं रथाधिवासनं अहं करिष्ये*। **संकल्प**कौ जल छोडि, हाथ खासा करि, **मिसरीकौ दौना** सन्मुख पधराय **धूप-दीप** करि, रथ तथा घोडान् पै **चंदनकी टिपकी** लगाय ग्वालभोग सराईये। श्री...जीकू आचमन करवाईये।

रथमैं पधारनौ तथा पहले ३ भोग: दंडवत् करि शंख-घंटा-टकोरा बजत श्री...जीकू सावधानी-पूर्वक रथमैं पधराईये। श्रीशालिग्रामजीकौ बंटा (बीडाकी तपकडीके पास) तथा लालन (श्री...जीकी गादीके आगै अलग गादी पै) भी रथमैं पधारैं, पादुकाजी निजमंदिरमैं ही बिराजैं। पहले माला धराय भोगकी टोकरी श्री...जी सन्मुख हाथमैं लेकै, आँख बंद करि खडे रहि भोग अरोगवेकी भावना करिये। १-२ मिनिट पाछैं शीतलजलमैं ही आचमन-मुखवस्त्र करि २ बीडा पधराय, दंडवत् करि रस्सी पकड सावधानीसू धीरै-धीरै थोडौ-सौ रथ चलाईये (घरके बडे बालक सावधानीके लिये स्वरूप पै हल्केसू हाथ राखि श्री...जीके साथ-साथ चलैं, अन्य सब रथ खैंचैं) । अब, फूलमाला तथा २ बीडा बडे करि रथमैं ही बीडाकी तपकडीके पीछै धरिये। पहले भोगकौ क्रम यहाँ समाप्त भयौ। दूसरे भोगमैं भी ऐसौ ही क्रम चलै: झारीजी-मालाजी बदलैं, हाथमैं भोग आरोगैं, डबरामैं आचमन होवैं, २ बीडा पधराय रथ थोडौ

चले, माला-बीडा सराय रथमैं ही बिराजैं। फेरि, तीसरी बेर झारीजी-मालाजी बदलैं, हाथमैं भोग आरोगैं।

रथके पहले दर्शन: तीसरे भोग सराय, २ बीडा पधराय, पंखा-मोरछल होते भये रथके पहले दर्शन खोलिये, टकोरा नहीं होवै। पलभर पीछै पंखा-मोरछल राखि सब वल्लभकुल बालक तथा सेवक-टहलवा दंडवत् करि पहले दो भोगके समान थोडौ-सौ रथ खैंचि रस्सी राखि सब अपने-अपने स्थान पै ठाडे होयकै पंखा-मोरछल करैं। या प्रकारसू खुले दर्शनमैं रथ थोडौ-थोडौ ४ बार चलै, चौथी बारमैं रथ डोल-तिबारीमैं जाय घुमायकै (दर्शनीन् की तरफ मुख होय ऐसे) राखि देनौ। टेरा दै, माला बडी करि दौनौं झारीजी पधराय बडौ भोग धरिये, भोगकी घडी राजभोग जितनी रहै।

नोंध: बडे भोग आये पै १२-१२ बीडीकी ३ जोड तैयार करि लेनी (रथके दर्शनकी २ तथा राजभोगकी १)। बीडाकौ बंटा जामैं ४ बीडा, बीचमैं बरासकी एक छोटी कटोरी पधराय तैयार करि लेनौ।

रथके दूसरे (छेले) दर्शन: समय भये *जय महाराज* करि आचमन, मुख-वस्त्र करवाय, बीडीकी १ जोड अरोगावनी। दोनों झारीजी सराय एक पडघा पै बडी झारीजी तथा दूसरे पै बीडाकौ बंटा पधराय, फूलमाला धरायके दर्शन खोलिये, अभी टकोरा नहीं होवै (दर्शन खोलवेसू पहले चांदीके एक कटोरामैं बीडीकी दूसरी जोड, तृष्टि तथा बीडा बाँधवेको एक पत्ता भी एक पडघा पै पधराय तैयार करि राखने)। दर्शन खुलते ही बीडीकी दूसरी जोड अरोगैं (तृष्टि परचारककू झिलाय अथवा जमीन पै पधराय प्रत्येक बीडी अरोगाते समय पत्तासू आड राखनी जासू दर्शनीन्कू बीडीके दर्शन न होवैं, एक पल आँख बन्द करि बीडी अरोगवेकी भावना करनी। प्रसादी बीडी उपरसू तृष्टिमैं छोडते जानी)। बीडी अरोगाय दर्शनवत् टकोरा बजवाय आरती चाँदीके दीवलावाली थालीकी करिये, न्यौछावर होवै। ता पाछैं दंडवत् करि, रथकू बिना रुके चलाय चौकके मध्यमैं पधराय देनौ (मुख दर्शनीन् की तरफ रहै या प्रकारसू)। सब बालक तथा चरणस्पर्शवाले सेवक रथकी तीन परिक्रमा करि लैं तब साष्टांग दंडवत् करि टेरा लीजिये।

शयन तककी सेवा: टेरा लेकै श्री...जी, अन्य स्वरूप, झारीजी तथा सब भोगके माला-बीडान्कू श्रृंगार चौकी पै पधराय राइ-लोन करिये। शीतलजलकौ डबरा श्री...जीके बगलमैं पधराय झारीजी-माला-बीडा तथा वेणु-वेत्र सराईये। दुहैरा श्रृंगार तथा चाकदार वागा बडे करि पिछौरा धराय मोतीके हल्के श्रृंगार करि, आरसी दिखाय (तुलसी समर्पण नहीं) राजभोग धरिये। राजभोग सराय, माला-बीडा, राजभोगकौ सब साज (खंड तथा ३ चौकी) माँढि दर्शन खोलिये। आरसी दिखाय

आरती थालीकी करि अनवसर करिये (नौंध: अनवसरके समय तीन चौकीन्के तथा शैय्याजीके पास एक-एक गादी पधराय देनी, श्री...जीके पधारवेके लिये। अनवसरके समय हिंडोला खाट रहै)। साँझकू शंखनाद सायं ५ बजे, सब सेवा नित्यवत्। **सेवाक्रममैं बदलाव** : ❖वर्षाकालके अत्तर शुरु (सौंधा, पानडी, केवडा, कदम्ब आदि) ❖रथमैंसू पाछे पधारि सब सेवा निजमंदरिमैं होवै (जानकारीके लिये: कामवन तथा गोविन्दजीकी हवेलीमैं आजसू दशहरा ताँईं सब सेवा तिबारीमैं होवै) ❖मंगलासू गादी-तकियान् पै आधी सफेदी चढै ❖पादुकाजी नित्यमैं वस्त्र धरैं ❖यमुनाजी, खसके टेरा-पंखा तथा छिडकाव बंद ❖सब समय शैय्याजी पै एक सफेद चादर शुरु। **कीर्तन**: रथके दूसरे दर्शनसू सब समय मल्हारके कीर्तन शुरु।

आषाढ सुद ३: **श्रीगिरधरजी (वि.सं.१७२५) तथा श्रीवल्लभलालजी (वि.सं.१९४८) के उत्सव**

श्रृंगार: कुलह-पिछौरा पिस्तई (जानकारीके लिये: कामवनमैं प्राचीन समयमैं केसरी वस्त्र धरते परंतु रंगके क्रममैं फेरफार भयौ ऐसी नौंध ब्रजवल्लभजीवाली प्रणालिकामैं मिलै है।)। श्रृंगार हल्के, सब आभरण हीराके। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी,तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु तथा चन्द्रकला। सखडीमैं अमरस-भात। **शयन-भोग**मैं अमरसकी कढी।

सेवाक्रम: राजभोगमैं आरती थालीकी।

आषाढ सुद ४: पाग-पिछौरा-ओढनी उष्णकालके। **सामग्री**: उत्थापनभोग: अनसखडीमैं छुकी चनाकी दाल।

आषाढ सुद ५: पाग-पिछौरा अक्षय तृतीयाके, पीठिका पै ओढनी नहीं।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖चंदनकी कटोरी तथा सिंहासन पै गुलाबदानी आज ताँईं ❖आज शयन पीछै खंडके लकडीवाले खिलौना हटकै चाँदीके आय जावैं (उत्थापन पीछै खिलौना स्वच्छ करवाय लेने)।

आषाढ सुद ६: **कसूंबा छठ।**

श्रृंगार: **अभ्यंग**। कुलह-पिछौरा कसूंबी। श्रृंगार इकहरा भारी, सब आभरण हीराके। ओढनी: अभ्यंगकी। नौंध: यदि ६/७ **भेली होवैं तौ** श्रृंगार कसूंबा छठके, सप्तमीकी सामग्री भी छठकू ही आवै।

सामग्री: **राजभोगमैं** बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी,तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु।

सेवाक्रम: राजभोगमैं आरती थालीकी।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖मोतीके आभरण़ बंद होयकै हीराके आभरण शुरु होवैं ❖नित्यमैं जरीकी किनारीवाले सूतराउ वस्त्र शुरु।

आषाढ सुद ७: **श्रीगोविन्दजी महाराज (गोविंद प्रभु) कौ उत्सव (वि.सं.१८९३)**

श्रृंगार: कुलह-पिछौरा केसरी। ओढनी: नियम नहीं।

सामग्री: **राजभोगमैं** बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी,तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु तथा चन्द्रकला।

सेवाक्रम: राजभोगमैं आरती थालीकी।

कार्यालयके लिये: श्रावण महीनाके दर्शनकौ समय लिखवाय देनौ।

आषाढ सुद ८: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

आषाढ सुद ९: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

आषाढ सुद १०: **बैंगन दशमी।**

श्रृंगार: **अभ्यंग**। बैंगनी धोती-उपरणा तथा फैंटा, आभरण खुलते। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी,तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु। सखडीमैं बैंगनकी टोकरी(बैंगन-आलू), भरता, रायता तथा भुजैना अवश्य आवैं।

शयनभोगमैं बैंगनकी १ टोकरी।

सेवाक्रम: राजभोगमैं आरती थालीकी।

आषाढ सुद ११: **देव-शयनी एकादशी।**

श्रृंगार: मल्लकाछ-टिपारा, रंगकौ नियम नहीं। आभरण तथा ओढनी: खुलते।

सामग्री: **राजभोग**मैं एकादशीकौ सीधा तथा तरमेवा। **उत्थापन भोग**मैं बीजकी बरफी (घडी २० मिनिट)। **सामग्री-क्रममैं बदलाव** ❖आजसू देव-प्रबोधिनी तांईं **बैंगन बंद**।

सेवाक्रम: राजभोगमैं आरती थालीकी।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖श्रीगुसांईजीके उत्सव तांईं नित्य राजभोगमैं आरती थालीकी चाँदीके

दीवला वाली होवै। जानकारीके लिये: कामवनमैं उत्सव होय तब दीवलामैं दुहैरा बाती आवैं।

आषाढ सुद १२: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

सामग्री: राजभोगमैं उष्णकालकौ सिखरन-भात आज तांईं।

आषाढ सुद १३: नित्यक्रम। **सामग्री**: राजभोगमैं मूंग दालकौ वारा (कौर मूंग दालसूं), थालमैं नींबूके ४ टूक।

आषाढ सुद १४: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार।

आषाढ सुद १५: **श्रृंगार**: कुलह-पीछौरा कसुंबी, श्रृंगार थोडे भारी। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: राजभोगमैं फीकी कचौरी, चिरौंजीकी बाटी, सौंठकी बुकनी, रायता, तरमेवा।

कार्यालयके लिये: हिंडोला, झूल, बिछात आदि तपास लेने।

❖❖❖

श्रावण

❖❖❖

श्रावण वद १: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार। (आजसू पाटोत्सव ताँईं हरे, नीले, श्याम, कत्थई आदि रंगके वस्त्र नहीं धरने)।

कीर्तन: झाँझसू पाटोत्सवकी बधाई शुरु।

श्रावण वद २: नित्यक्रम। **सामग्री**: उत्थापनभोग: अनसखडीमैं छुकी चनाकी दाल।

श्रावण वद ३: **श्रृंगार**: पाग-पिछौरा कसुंबी, आभरण पिरोजाके। ओढनी: आसमानी।

नौंध: श्रृंगारकौ यह क्रम पाटोत्सवके एक दिन पहलेकौ है। यदि ३को क्षय होवै तो यह क्रम २ मैं होवै।

विशेष: शयन पीछै गादी-तकियान्की सफेदी उतरे, **हिंडोलाकी तैयारी** होवै। डोल-तिबारीमैं बडी दीवालगिरी तथा टेरा बँधैं, झूल तथा बिछातके पेटा तिबारीमैं पधराय जावैं। दोनों हिंडोला उतरवाय डोल-तिबारीमैं पधराने (यदि पाटोत्सवके दिन मंगल या रविवार होवै तौ पाटोत्सवके अगले दिन हिंडोला-रोपण होय जावै)। दर्शनके कठैडान्मैं भी फेरफार होवै।

श्रावण वद ४: **श्रीगोकुलचन्द्रमाजी (कामवन) कौ पाटोत्सव**। थापा, तोरण (आसो., गल.), शहनाई।

(जानकारीके लिये: यह पाटोत्सव सबनसू बडौ गिन्यौ है। वि.सं.१७३२ के आसपास आषाढ सुद १५के दिन श्रीगोकुलचन्द्रमाजी तथा उनके संग बिराजते दोनौं स्वामिनीजी चंद्रसरोवरसू चोरी पधारे। ३ दिन बाद मात्र श्रीगोकुलचन्द्रमाजी राधाकुंडके समीप प्राप्त भये, स्वामिनीजी प्राप्त नहीं भये। श्रीगोकुलचन्द्रमाजीकू आजके दिन श्रीगिरधरजीने पुन: पाट पधराय हिंडोला आरंभ किये। याही कारणसू **पंचमगृहमैं हिंडोला आजसू प्रारंभ होवैं**, अन्य सभी घरन्मैं १ सू ही स्वरूप हिंडोलामैं बिराज जावैं)।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। कुलह-पिछौरा केसरी। तिलक-अलकावली दुहैरा, **श्रृंगार दुहैरा**। ओढनी: जन्माष्टमीकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं बूंदी, जलेबी, मणकाकी खीर (नित्यसू अलग), मुरब्बाकी कटोरी, सिखरन भात, रायता, मैदापूरी, तरमेवा, बिलसारु, नींबू-आदापाचरी। दूध, खीर, पाटिया केसरी। सखडीमैं तीनकूडा, धोवादाल, पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, भुजैना, कचरीया। **हिंडोला भोग**मैं थूली (लापसी), मुरब्बा। नौंध: जब भी मनोरथी हिंडोला होय तो वाकी सामग्री उत्थापन भोगके संग ही अरोगाय लेनी।

सेवाक्रम (प्रात:): मंगलासू शयन पर्यन्त सब आरती थालीकी। राजभोग सरे पीछै माला धराय, खंड मांडि, खिलौनान्की तपकडी पधराय राजभोगके दर्शन खोलि टकोरा करिये। पहले सब आरसी दिखईये, फेरि शंख-टकोरा बजत **श्री...जीकू तिलक** करि दो बीडा कंकूमैं डुबाय गादी पै दोनों तरफ पधरईये, पीठिका पै पीताम्बर धरिये। पाछै, **सब स्वरुपन्कू तिलक** (पादुकाजी भी) करि **सबन्की ओरसू श्रीफल भेट** करिये (घरके सभी बालक-बहुजी-बेटीजी तथा २ गादीजीके भावसू - या प्रकार गिनती करनी)। मुठिया वारि चूनकी दुहैरा बातीवाली आरती थालीकी करिये, न्यौछावर होवै। टेरा डारि **सुजनी बिछाय, गैंद-चौगान मांडि**, माला बडि करि, तृष्टि पधराय दर्शन खोलिये। अनवसर करिये। नौंध: आज दोपहरकी शैय्याजीकी रंगीन चादर प्रतिवर्ष नई सिद्ध होवै, रंगकौ नियम नहीं।

हिंडोला-रोपण: यदि रवि/मंगल वार न होवैं तौ साँझकू उत्थापनसू पहले हिंडोला रोपण करि गादी पधरावनी। या समय हिंडोलाकू बराबर झुलाय, थोडौ वजन दै परीक्षण करि लेनौ जासू श्री...जीकू श्रम न पडै। संभव होय तौ हिंडोलाकौ अलग कोरौ मुखवस्त्र राखनौ (सिंहासनवालौ धरैं तो वह नित्य दर्शन पीछै वापिस पधार जावै)। बडे हिंडोलाके बगलमैं लालनकौ हिंडोला भी रोप्यौ जाय, याकौ सब क्रम श्री...जीके हिंडोला समान ही होवै।

हिंडोलाकी तैयारी: हिंडोलाकी गादी पै सफेदी नहीं (अपरस छिब न जावै यासू), पीठिकाकी ओढनी श्री...जीके वस्त्र अनुसार आवै। हिंडोलामैं नित्य २ झूल धरैं, एक बजनी घुंघरुवाली भीतर रहै, दूसरी श्री...जीके वस्त्र अनुसार धरैं जाके दर्शन होवैं। हिंडोलाके प्रथम तथा अंतिम दिन हिंडोलाकौ कोई मनोरथी नहीं होवै, ये दोनों दिन नियमसू सुरंग हिंडोला ही रहै।

सेवाक्रम (सांझ): उत्थापन भोग धरि अधिवासनकी तैयारी करि लेनी (कंकू, अक्षत, धूप-दीप, मिसरीकौ दौना, घिसे भये चंदनकी कटोरी, जलकी लोटी)। उत्थापन भोग सराय, नित्यवत् मालाजी तथा वेत्र धराय टकोरा करिये, हिंडोलाके दिनन्मैं संध्या-आरतीके दर्शन नहीं खुलैं, आरती पीछै सिंहासनकी

पंखी बडी होयकै हिंडोलामैं पधारैं (कामवनमैं हिंडोलाकी अलग पंखी हैं जो वहीं बिराजैं)। संध्या-आरती पीछै फूलमाला बडी करि, अनसखडीके ४ नग अथवा दूधकौ डबरा श्री...जी सन्मुख पधराय हिंडोलाकौ अधिवासन करिये। विशेष: चँवर/फौंदना बँधकै ही हिंडोलाकौ अधिवासन होवै।

अधिवासन: सर्वप्रथम हाथमैं जल-अक्षत लै संकल्प बोलनौ - ***ॐ विष्णु: विष्णु: विष्णु: श्रीमद् भागवत् पुरुषोत्तमस्य हिंडोलाधिरोहणार्थं हिंडोलाधिवासनं अहं करिष्ये।।*** - हाथ खासा करि, मिसरीकौ दौना सन्मुख पधराय धूप-दीप करि हिंडोलामैं सब तरफ चंदनकी टिपकी लगाईये। अन्तमैं हिंडोला सन्मुखसू अधिवासनकी सब सामग्री हटाय मंदिरवस्त्र करिये। अब भीतर जायकै डबरा भोग सराय, झारीजी बदलकै सीधे हिंडोलाके बगलमैं एक पडघा पै पधराईये (मात्र तपकडी पै, चाँदीकी पडघी नहीं)। अब, शंख-टकोरा बजत श्री..जीकू हिंडोलामैं पधराय हिंडोला भोग धरिये (१५ मिनिट)। समय भये भोग सराय, २ बीडा झारीजीके साथ पडघा पै पधराय, माला धराय हिंडोलाके दर्शन खोलिये (आज हिंडोलाकी माला जूदी, नित्यमैं संध्या-आरतीकी मालाजी धराकै ही हिंडोलामैं बिराजैं)। **आज हिंडोलामैं ६ कीर्तन होवैं**: पहले ४ मैं श्री...जी झूलैं, पाँचवें कीर्तनमैं टकौरा कराय चाँदीके दीवलावाली थालीकी आरती , छट्ठौ *आशीष*। सब कीर्तन होय जावैं तब झारीजी तथा बीडा सराय टेरा लीजिये, **हिंडोलावाली फूलमाला बडी करि हिंडोलामैं ही पधराय देनी**। श्री...जीकू श्रृंगार-चौकी पै पधराय श्रृंगार बडे करि (जोडके नूपुर रहैं) शयन भोग धरिये, पाछैं नित्यवत् पौढैं। नौंध: हिंडोलाके दिनन्मैं शयनके समय श्री...जी मात्र तनीयामैं ही बिराजैं, दर्शन नहीं खुलैं उतने दिन - अन्यथा पिछौरा धरैं (यदि कोई जनानेन्कू दर्शन करने होवैं तो भी पिछौरा धरनौ)। शयन पीछै गादी-तकियान् पै आधी सफैदी चढै।

सेवाक्रममें बदलाव: ❖राजभोग दर्शनमैं सुजनी तथा गैंद-चौगान शुरु ❖अनवसरमैं तीन चौकी शैय्याजीके पास लगैं ❖अनवसरके समय शैय्याजी पै मात्र १ रंगीन चादर आवै (नीचै सफेद नहीं), शयनमैं सफेद मलमलकी एक चादर धरैं ❖राधाष्टमी तांईं शयनमैं श्रृंगार समयके नूपुर रहैं ❖पवित्रा एकादशी तांईं संध्या-आरती तथा शयन भीतर ❖अनवसरमैं लकडीके पट्टा बंद।

हिंडोला झुलायवेकौ क्रम: नित्यमैं श्री...जी ४ कीर्तन झूलैं (श्री...जीकू दंडवत् करि सन्मुखमैं ठाडे होय झुलानौ प्रारंभ करनौ। बीच-बीचमैं दाँए, बाँए सब तरफसू क्रमवार झुलाते रहनौ जासू सब वैष्णवन्कू दर्शन होवैं। हिंडोला रोकनौ होवै तब पुन: सन्मुखमैं आय धीमैसू रोकनौ)। पंचमगृहमैं कीर्तनके आरंभसू श्री...जी नहीं झूलैं, एक तुक भये पीछे कीर्तनिया दंडवत् करि झाँझसू चलती बजावैं उतनी देर ही झूलैं। यदि कीर्तनिया नहीं होवैं तो cd चलाय कीर्तनकी एक तुक भये पीछै

झुलानौ शुरु करि कीर्तनके अंतमैं *चलती*के समय *छाप* (कीर्तन रचवे वालेकौ नाम) आवै तब हिंडोला रोकि देनौ। चौथे कीर्तनमैं श्री...जी झूल लैं तब झारीजी तथा २ बीडा सराय प्रसादीमैं पधरायकै टेरा लेनौ। हिंडोलामैं ही फूलमाला बडी करि श्री...जी भीतर पधारैं, मालाकी जोड रात भर हिंडोलामैं ही रहै। हिंडोलामैं सू श्री...जी मंदिरमैं पधार जावैं तब एक चौकी पै गादी पधराय हिंडोला सन्मुख पधराय देनी, प्रभु रात्रीकू झूलवे पधारैं या भावनासू।

श्रावण वद ५: **श्रृंगार**: वस्त्र परचारगीके (अगले दिनके), पाग केसरी (श्रृंगार विषयक नोंध: श्रावणकी परचारगीमैं पाग-चंद्रिका आवै, **हिंडोलाके दिनन् मैं जरीकी चंद्रिका भी धर सकैं**) आभरणकी जोड हरे हीरा (पन्ना) की। ओढनी: कमलकी (अथवा इच्छानुसार)।

हिंडोलाके दिनन्मैं नित्य साँझके शंखनादसू हिंडोलामैं पधरायवे तककी सेवा: शामकू शंखनाद सजावट वाले वैष्णवन्सू बात करके करने, सायं ५ पीछै ही। उत्थापनके दर्शन खुलैं (सजावट अधिक होय और दर्शन खोलनो संभव नहीं होवै तो दर्शन भीतर भी होय सकैं)। उत्थापनकौ टेरा डारि उत्थापन भोग धरने, हिंडोलामैं जितने मनोरथी होंय वा प्रमाणे हिंडोलाकी सामग्री भी या समय ही धर देनी। समय भये (हिंडोलाकी सजावट देखिकै, सजावट वाले वैष्णनवन्सू बात करि, पीठिकाकी ओढनी धराय, चँवर बाँधि, बिछात बिछायके ही भोग सरावने, यदि तैयार नहीं भई होवै तो घडी चढाय देनी) फूलकी माला धराय संध्या-आरती भीतर ही होय। आरती पीछै वेत्र गादी पर ही पधराय देनो, विजय नहीं होवै। खंड-पाट, कुंजा, बगली तकीया, खिलौनान् की तपकडी बडी होवैं - पंखी हिंडोलामैं पधारैं। हिंडोलामैं मालाजी संध्या-आरतीके ही रहैं (जा दिन श्री...जी हिंडोलामैं भोग अरोगैं ता दिन ही बदलकै नई मालाजी धरैं)। पाछें, २५०-३०० ग्राम दूधकौ डबरा अथवा अनसखडीके ४ नंग सन्मुख पधराय झारीजी बडी कर टेरा लीजिए। झारीजी भरिके आचमन करवाने, झारीजी सीधे हिंडोलामैं एक पडघा पै पधारैं, साथमें वाही पडघा पै २ बीडा भी आवैं। लालनके झारीजी भी छोटे हिंडोलाके पास पधारैं। वेणु-वेत्र तथा मुखवस्त्र पहले हिंडोलामैं पधराय आने, पाछै दंडवत् करके श्री...जीकू पधराने (नित्यमैं शंख आदि नहीं बजैं)। हिंडोलामैं श्री...जी पधारे पीछै थोडोसो झुलाय देख लेनौ, यदि चंद्रिका पै चँवरी लगती होय तो वाकू ऊँची कर देनी जासू श्री...जीकू श्रम न पडै। श्रीशालिग्रामजी लालनके हिंडोलामैं आगे बिराजैं। एक पडघा पै पंखा तथा मोरछल पधरायकै, सब तैयारी तथा सजावट पै निगाह करके दर्शन खोलने।

श्रावण वद ६: मल्लकाछ-टिपारा कसूंबी, तीन चंद्रिकाकौ (वस्त्रके टिपारा पै तीन चंद्रिका तथा शीषफूल पै एक

कतरा) वस्त्र खुलते, रंगकौ नियम नहीं। ओढनी: चित्रकी।

विशेष: आजसू हिंडोला पै मोती, साटीन विगेरेके पट्टा शुरु।

श्रावण वद ७: पाग-पिछौरा कसकसी (नीले)। सब आभरण पुखराजके। ओढनी: इच्छानुसार।

सामग्री: राजभोगमैं मूंगकी दालकौ वारा।

श्रावण वद ८: मल्लकाछ-टिपारा तथा सब आभरण मीनाकारीके अथवा हरे रंगके। ओढनी: चित्रकी।

सामग्री: उत्थापनभोग: अनसखडीमैं छुकी चनाकी दाल।

श्रावण वद ९: पाग-पिछौरा आमरसी या आभीसी (आसमानी)। आभरण तथा ओढनी खुलते।

श्रावण वद १०: मल्लकाछ-टिपारा गुलैनार या झूमरदी (हलकौ बैंगनी)। आभरण तथा ओढनी खुलते।

श्रावण वद ११: कामिका एकादशी। **उत्सव श्रीछोटे रघुनाथजी** (वि.सं.१६६०)कौ।

श्रृंगार: अभ्यंग। कुलह, पिछौरा गुलाबी **लहरीया**। श्रृंगार इकहरा, आभरण हीराके। ओढनी: जन्माष्टमीकी। जानकारीके लिये: कामवनकी प्राचीन प्रणालिकामैं लहरीया-चूंदडीके वस्त्र ठकुरानी त्रीजसू लिखे हैं, सूरतमैं जल्दी क्रम प्रारंभ कियौ है।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं बूंदी, जलेबी, मुरब्बाकी कटोरी, १ रायता, द्राक्षकौ गोरस, तरमेवा, बिलसारु, नींबू-आदापाचरी तथा एकादशीकौ सीधा (एकादशी व्रत होय तौ)। सखडीमैं तीनकूडा, धोवादाल, पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, भुजैना।

सेवाक्रम: राजभोगमैं आरती थालीकी। आजसू **फूलके हिंडोला शुरु**, आज नियमसू होवै।

श्रावण वद १२: पाग-पिछौरा परचारगीके (गुलाबी लहरीया), आभरण हरे हीराके। ओढनी: इच्छानुसार।

श्रावण वद १३: **जन्मदिवस गो. श्रीकन्हैयालालजी महोदय** (वि.सं. २०३४)कौ ।

श्रृंगार: वस्त्र केसरी लहेरीया। टिपारा तथा पटका जडाऊ (वस्त्रकौ पटका अनिवार्य नहीं)।

सामग्री: **मंगला**मैं बूंदी (५०० ग्राम घीकी, प्रसादी वैष्णवन्मैं बँट जावै)। **राजभोग**की अनसखडीमैं मगदके लड्डू, मुरब्बाकी कटोरी तथा सखडीमैं रगडा-पेटिस, खजूर अथवा हरे धनीयाकी चटनी।

श्रावण वद १४: पाग-पिछौरा आभासी, लहेरियाके। आभरण तथा ओढनी: खुलते।

सामग्री: उत्थापनभोग: अनसखडीमैं छुकी चनाकी दाल।

श्रावण वद ३०: **हरियाली अमावस्या**। तोरण (आसोपालव)।

श्रृंगार: कुलह-पिछौरा हरे या झूमरदी (हरे अंगूर जैसे)। सब आभरण पन्नाके। ओढनी: हरी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडी: पचधारी (मूंगकौ मगद) अथवा पिस्ताकी १ सामग्री, मुरब्बा, तरमेवा। सखडी: पत्तरवेलीया (पात्रा) अथवा मूंगकी दालके चीला, हरे धनीयाकी चटनी।

सेवाक्रम: हिंडोला हरी पत्ती या आसोपालवकौ।

श्रावण सुद १: वस्त्र लहेरिया, टिपारा इच्छा होय सो। आभरण तथा ओढनी: खुलते।

श्रावण सदु २: **श्रृंगार**: पिछौरा-फैंटा कसूंबी लहेरियाके (फैंटा पै पिछौराकौ निषेध नहीं है)। आभरण तथा ओढनी: खुलते।

श्रावण सुद ३: **ठकुरानी त्रीज**। तोरण (आसोपालव)।

श्रृंगार: **अभ्यंग**। पाग-पिछौरा सुरंग चुंदडीके (लालमें पीरी चूंदडी)। श्रृंगार **इकहरा भारी**, चंपकली, तोतापदक, कंठा आदि, आज **हस्तसांकला** अवश्य धरैं। तिलक-अलकावली दुहैरा। सब आभरण हीराके। ओढनी: जन्माष्टमीकी। (जानकारीके लिये: आज गोविन्दजी हवेलीमैं पाग पै सहेरा)।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं इंदरसा, खुली बूंदी, मुरब्बा, तरमेवा तथा सखडीमैं फीकी बूंदीकौ रायता। विशेष: हिडोला काँच अथवा फूलकौ।

श्रावण सुद ४: पाग-पिछौरा चुंदडीके, रंग इच्छानुसार। सब आभरण हरे हीरा (पन्ना)के। ओढनी: चाँद-ताराकी।

कार्यालयके लिये: पवित्रा एकादशी तथा राखीके दर्शनकौ समय लिखवाय देनौ।

श्रावण सुद ५: **नाग पंचमी**।

श्रृंगार: कुलह-पिछौरा सोसनी या करौंदाकौ लहरिया (श्याम जैसे)। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: राजभोगमैं पाटिया, मणकाकी खीर - केसरी, थूली तथा तरमेवा।

नौंध: आज पवित्रा-राखी मँगवायवेकी कार्यालयमैं सूचना दे देनी जासू समय पर आय जावैं (नियमके सूतराउ तथा तासके पवित्रा अवश्य मंगवाने, छोटे-बडे मिलकै कमसू कम २०० नग। राखी भी जरीकी तथा रेशम आदिकी कमसू कम २०० राखनी)।

श्रावण सुद ६: मल्लकाछ-टिपारा बाकी रह्यौ होय सो, वस्त्र लहरियाके।

सामग्री: उत्थापनभोग: अनसखडीमैं छुकी चनाकी दाल।

विशेष: ६ सू ९ मैं रविवार आवै तौ ता दिन **बगीचा**। प्राय: दो दिन बगीचा रहै।

बगीचाके दूसरे दिनकौ सेवाक्रम: यदि दो दिन बगीचा होवै तौ मंगलभोग भीतर तिबारीमैं अरोगाय आचमन-मुखवस्त्र पीछै श्री...जीकू चौकमैं बगीचाके मध्य सांगामाची पै बिराजमान करि मंगलके दर्शन खोलने, वैष्णव चौकके बाहरसू दर्शन करैं। राजभोगके दर्शनमैं भी दर्शनी चौकके बाहर रहेवैं, श्री...जी निजमंदिरमैं बिराजैं। आज भी हिंडोलाके दर्शन **बगीचा**मैं ही होवैं (पिछले दिनके बगीचामैं थोडौ-सौ बदलाव कर देनौ, पूरौ बगीचा नयौ नहीं होवै)।

श्रावण सुद ७: मल्लकाछ-टिपारा अथवा पाग-पिछौरा, वस्त्र इच्छानुसार चुंदडीके।

सामग्री: राजभोगमैं मूंगकी दालकौ वारा। (विशेष: ७/८ भेली होय जावैं तौ वारा ६ अथवा ९कू करनौ।)

श्रावण सुद ८: **उत्सव श्रीगोकुलनाथजी** (सं.१७८७)कौ।

जानकारीके लिये: श्रीगोकुलनाथजी पंचम गृहमैं तिलकायत नहीं भये फिर भी इनकू श्रीगोकुलचन्द्रमाजीमैं अति आसक्ति हती यासू आपश्रीकौ उत्सव मनायौ जावै। कामवनमैं आजके दिन जो मुकुट धरते वो प्राचीन मुकुट स्वयं श्रीगोकुलनाथजीनै खुदके श्रीहस्तसू सिद्ध कियौ हतौ (थोडे वर्ष पूर्व तक यह क्रम हतौ, अब जीर्ण होयवेसू नहीं धरैं)।

श्रृंगार: मुकुट मोतीकौ। कंठवस्त्र श्याम, काछनी-पीताम्बर पीले, लाल या गुलाबी - अन्य स्वरूपन्के वस्त्र काछनीके रंगके। सब श्रृंगार हीराके। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: राजभोगमैं मनोर (कामवनमैं गोकुलनाथसाई मनोर अरोगैं), मुरब्बाकी कटोरी, तरमेवा, गोरस।

श्रावण सुद ९: मल्लकाछ-टिपारा, वस्त्र हरे - लहरिया या चुंदडीके।

श्रावण सुद १०: बाकी रह्यौ होय सो टिपारौ, वस्त्र लहेरियाके।

सेवाक्रममैं बदलाव : शयन पीछे गादी-तकियान्की सफेदी हटै, राधाष्टमी तांई।

श्रावण सुद ११: पुत्रदा - **पवित्रा एकादशी**। तोरण (आसोपालव, गलगोटा)

श्रृंगार: अभ्यंग। पाग-पिछौरा गुलैनार। श्रृंगार भारी इकहरा, तिलक-अलकावली दुहैरा। सब आभरण हीराके (तोतापदक, चंपकली आदि भी धरैं)। आजसू **चरणचौकी वस्त्र तथा कंदरावस्त्र लाल सूतराऊ शुरु**। ओढनी: जन्माष्टमीकी।

सामग्री राजभोगकी अनसखडीमैं बूंदी, मुरब्बाकी कटोरी, १ रायता, तरमेवा, बिलसारु, नींबू-आदापाचरी। सखडीमैं तीनकूडा, धोवादाल, पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, भुजैना, एकादशीकी सामग्री। उत्सव भोग (यदि सुबह होवैं तो राजभोगमैं तथा साँझकू होवैं तो संध्याभोगमैं। राजभोगकी घडी नित्यवत् रहैं, संध्याभोगकी २० मिनिट होय जावै) : केसरी मिसरी तथा सफेद पेडा।

सेवाक्रम: भद्रा न होय ता समय पवित्रा धरैं - सुबह श्रृंगारमैं धरैं, सांझकू भोग दर्शनमैं (यदि साँझकू पवित्रा धरवेकौ क्रम होवै तौ भोग तथा संध्या-आरतीके क्रम जूदे होवैं)। श्रृंगार अथवा उत्थापन भोग धरि (भद्राके अनुसार) पवित्रा तथा राखीकौ एक-साथ अधिवासन होवै। हथेलीमैं जल-अक्षत लै यह संकल्प बोलनौ: ***ॐ विष्णु: विष्णु: विष्णु: श्रीमद्भागवत् पुरुषोत्तमस्य पवित्रा रोहणार्थं रक्षा बंधनार्थं उभयोरधिवासनं अहं करिष्ये***। जल छोड मिसरीकौ दौना सन्मुख धरि धूप-दीप करिये, पवित्रा-राखीन् पै चन्दनके छींटा लगाईये। राखी भीतर पधराय, सब पवित्रा व्यवस्थित जमाय, **पवित्राकी वनमाला** सिद्ध करि एक बडे थालमैं साजि समय भये भोग सराय फूलकी माला धरि पवित्राके दर्शन खोलिये। नौंध: पवित्रा सुबह धरैं तब श्रृंगारके दर्शनकौ तथा साँझकू धरैं तो भोगके दर्शनकौ साज मढै।

पवित्रा धरवेकौ क्रम:पहले एक कीर्तन लाल पागकौ होवै इतनी देर पंखा, मोरछल होते रहैं। ता पाछै पवित्राकौ कीर्तन शुरु होवै तब खंड-चौकी-खिलौना आदि सर जावैं (साँझकू होवैं तो कुंजा, पंखी तथा बगली-तकिया भी बडे करि लेने)। अब, घरके बडे बालक फूलके मालाजी बडे करि पीठिका पै पधराय दंडवत् करि शंख-टकोरा बजत पवित्रा धरैं (तिलक नहीं होवै)। सर्वप्रथम केसरी सूतकौ, ता पाछै तासकौ रंगीन धरि अन्य सब पवित्रा श्रीअंग पै श्रृंगारवत् तथा पीठिका, गादी पै सुंदरता-पूर्वक धरने (अन्य सभी वल्लभकुल बालक एवं चरणस्पर्शकी आज्ञावाले मुखिया-परचारक भी एक-एक पवित्रा अवश्य धरैं)। एक पवित्रा बडौ (वनमाला) अन्तमैं धरनौ। फेरि, पादुकाजी प्रभृति अन्य सब स्वरूपनकू दो-दो पवित्रा धरिये। बचैं उतने पवित्रा गादी तकिया तथा सिंहासनकी पीठक पै

सुंदरतासू गुच्छाके गुच्छा लटकाय देने। इतनौ भये सबन्की ओरसू श्रीफल भेट करिये (घरके सभी बालक-बहुजी-बेटीजी तथा २ गादीजीके भावसू - या प्रकार गिनती करनी)। अब, शंख-टकोरा रखाय, झारीजी भरिकै पधराय (सुबह २, शामकू १) टेरा दीजिये।

वशेष: पवित्रा कभी भी धरैं, राजभोग तथा संध्या-आरतीकौ क्रम नित्यवत् ही होवै। श्री...जी पवित्रा सहित हिंडोलामैं पधारैं, फूलमाला संध्या-आरतीकी रहै। हिंडोलाके दर्शन पीछै आज श्रृंगार बडे होवैं तब सभी स्वरूपन्के तास तथा सूतके पवित्रा राख लेने, बाकी सब प्रसादीमैं निकल जावैं। आजसू शयनके दर्शन खुलैं।

कीर्तन: पवित्राके समय झारीजी बडे होते ही जन्माष्टमीकी बधाई -**ब्रज भयौ महरके पूत**- गवै, टेरा आए पीछै भी कीर्तन संपूर्ण होवै तबतक चालू रहै। या पीछै सब समय जन्माष्टमीकी बधाई ही गवै।

श्रावण सुद १२: **पवित्रा द्वादशी**।

श्रृंगार: कंठवस्त्र श्याम, काछनी-पीताम्बर-सूथन-तनीया सब गुलैनार, सब आभरण तथा मुकुट हीराके। अन्य स्वरूपन् के वस्त्र गुलैनार, पादुकाजीके वस्त्र केसरी। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: राजभोगमैं सकलपारे, मुरब्बा, तरमेवा।

सेवाक्रम: आज श्रृंगार भये पै २ पवित्रा धरने (अगले दिनके रखे भयेमैं सू १ सूतराउ पाटकौ तथा १ जरीकौ), ता पाछै आरसी देखि तुलसी समर्पण होवै। **विशेष**: आज गादीजीकू तथा बालकनकू पवित्रा धरैं।

विशेष नौंध: ११/१२ भेले होवैं तो पहले दिन श्रृंगार एकादशीके करने, दूसरे दिन ही मुकुट आवै। ऐसी स्थितिमैं १३ के श्रृंगार नहीं होवैं।

श्रावण सुद १३: **श्रृंगार**: धोती-उपरणा-फैंटा पीले, आभरणकी जोड तथा ओढनी: खुलते।

सामग्री: उत्थापनभोग: अनसखडीमैं छुकी चनाकी दाल।

सेवाक्रम: आज १ पवित्रा धरैं (तासकौ), क्रम १२ वत्।

श्रावण सुद १४: बाकी रह्यौ होय सो टिपारा, आभरण तथा ओढनी खुलते।

श्रावण सुद १५: **राखी** तथा **श्रीदेवकीनंदनजीकौ उत्सव** (वि.सं. १९९७)। थापा तथा तोरण (आसो, गल)

श्रृंगार: अभ्यंग। कुलह-पिछौरा नींबूआ, श्रृंगार **भारी इकहरा**। आभरण माणिकके, मुखारविन्द पै हीराके। ओढनी: जन्माष्टमीकी।

सामग्री: **राजभोग**की अनसखडीमैं बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी, १ रायता, तरमेवा, बिलसारु, नींबू-आदापाचरी। सखडीमैं तीनकूडा, धोवादाल, पाटिया, छाछवडा, पापड, रोटी, पूडी, भुजैना। **उत्सवभोग**मैं गुडपापडी, मुरब्बाकी कटोरी।

सेवाक्रम: नाथद्वाराकी टिप्पणी देख जा समय भद्रा न होय ता समय श्री...जी राखी धरैं, सुबह अथवा साँझकू। आजसू जन्माष्टमी ताँईं खेलके दर्शन खुलैं (अंदाजित समय प्रात: १० बजे)।

राखी धरवेकौ क्रम: सर्वप्रथम १ कीर्तन होवै तबतक पंखा-मोरछल होते रहैं। ता पाछैं, शंख-टकोरा शुरु करवाय दंडवत् करिये। श्री...जीकू तिलक करि अक्षत लगाय गादी पै २ बीडा कंकूमैं चौंच डुबाय पधराईये। अब, पहले दक्षिण श्रीहस्तमैं फेरि वाम श्रीहस्तमैं राखी धरिये, २ रेशमी फौंदनावाली राखी स्वामिनीजीके भावसू गादीजी पै दोनों तरफ पधराईये। पाछैं, पादुकाजी सहित सभी स्वरूपनकू तिलक करी राखी धरिये। फेरि, जो अधिककी राखी होवैं उनकू गादीजी तथा सिंहासन पै सुंदरतासू सजाय देनी। अन्तमैं, शंख-टकोरा रुकवाय, झारीजी सराय टेरा दीजिये। माला बडी करि समय अनुसार १ अथवा २ झारीजी पधराय भोग/सेवाकौ क्रम करिये।

❖**राखीकौ क्रम सुबह होवै तौ**: ❖खेल/राखीके दर्शन १०:१५, राजभोग दर्शन ११:४५ ❖श्रृंगार करि आरसी-तुलसी समर्पण करने, **झारी-बीडा-मिठाई मंगलावाले ही रहैं** ❖दर्शन खुलैं तब पहले २ कीर्तन पलनाके होवैं, तब तक खेलकौ क्रम होवै ❖**खेलकौ साज सराय राखी धरैं**। उत्सवभोग: राजभोगके साथ (घडी नित्यवत्)।

❖**राखीकौ क्रम साँझकू ६:३० तक होवै तौ** ❖साँझकू शंखनाद ४:३०, राखीके दर्शन ५:१५, हिंडोला ६:३० ❖उत्थापन भोगमैं संध्याभोगकी २ मठडी नहीं आवैं ❖भोग सराय फूलमाला धरि भोगकौ साज माँडि दर्शन खोलिये (अभी टकोरा नहीं) ❖एक कीर्तन भये पीछै खंड-खिलौना-पंखा-कुंजा बडे करकै (बगली तकिया नहीं) राखी धरनी ❖संध्या-भोग/आरतीकौ क्रम करि श्री...जीकू हिंडोलामैं पधराने,**फूलमाला राखीवाली ही रहै** ❖हिंडोला पीछै श्रृंगार बडे करि शयनभोग धरिने। उत्सवभोग: संध्याभोगके साथ (घडी २० मिनिट)।

❖**राखीकौ क्रम साँझकू ६:३० बाद होवै तो**: ❖साँझकू शंखनाद ५:१५, हिंडोला ६:३०, राखीके दर्शन ७ ❖श्री...जीकू हिंडोलामैं सू सिंहासन पै पाछे पधराय झारीजी भरैं उतने समय अनसखडीकी १ सामग्री

सन्मुख भोग धरनी ❖आचमन करवाय, फूलमाला धराय राखीके दर्शन खोलिये (अभी टकोरा नहीं) ❖राखीकौ सब क्रम भये पै शयनभोग धरिये ❖**श्रृंगार शयन दर्शन पीछै बडे होवैं**। उत्सवभोग: शयन भोगके साथ (घडी ३० मिनिट)।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖हिंडोला खाट बंद, आज नहीं आवै। जानकारीके लिये: कामवनमैं आजसू भा.व.९ ताँईं दर्शनके समय नौबत/शहनाई बजै।

कार्यालयके लिये: जन्माष्टमी/पलना/नसदमहोत्सवके दर्शनकौ समय लिखवाय देनौ।❖❖❖

———————————————: खेलके दर्शन :———————————————

श्रृंगार भये दर्पण दिखाय तुलसी समर्पण करि (बीडा-झारीजी अभी बडे नहीं करने) फूलकी माला धराय खंडके खिलौनाकी झुनझुनावाली २ तपकडी सिंहासन पै दोनो बगल पधराय, सिंहासनके खिलौना तथा बगलके पडघान् पै खिलौनाकी दोनों तपकडी साज, एक पडघा पै चाँदीकी थाली सन्मुखमैं पधराय तामैं २-४ फिरकनी धरि खेलके दर्शन खोलिये, **टकोरा नहीं होय**। दर्शनमैं सर्वप्रथम श्रृंगारके दर्शनवत् छोटी-बडी आरसी पाससू दिखाय, बडी आरसी खोलिकै सिंहासन पै पधराय देनी। पाछै, दंडवत् करि श्री...जीकू २ पलनाके कीर्तन गवैं इतनी देर खिलावने। तीसरे पलनामैं सब खिलौना, पडघा आदि सराय, आरसी पास-दूरसू दिखाय स्थान पै पधरावनी। अब, झारीजी तथा बीडा विजय करि दोनों झारीजी भरि पाछे पधराय टेरा लेनौ, फूलमाला बडी करि राजभोग धरिने।

———————————————————————————————————————-

❖❖❖

भादौं

❖❖❖

भादौं वद १ या २: **हिंडोला विजय** (मंगल या रविवारकू हिंडोला विजय नहीं होवैं)।

श्रृंगार: कुलह-पिछौरा कसूंबी, सब आभरण हीराके, श्रृंगार इकहरा भारी। ओढनी: अभ्यंगकी।

सामग्री: थूली (आज हिंडोलामैं जूदे भोग आवैं, क्रम हिंडोला आरंभवाले दिन लिख्यौ है वैसौ ही करनौ)।

सेवाक्रम: आज दर्शनमैं ४ कीर्तन झूलैं पीछै झारीजी या बीडा सरैं नहीं। ५वें कीर्तनमैं **टकोरा करि आरती, न्यौछावर तथा ३ परिक्रमा** होवैं, फेरि १ कीर्तन आसीसकौ गवै (हिंडोलामैं कुल ६ कीर्तन होवैं)। हिंडोलाकौ टेरा डारि मालाजी, झारीजी, बीडा सहित सब स्वरूपन्कू श्रृंगार चौकी पै पधराय राई-नौंन करिये। ता पीछै सेवा नित्यवत्। नौंध: प्रभु हिंडोलामैं सू पाछे पधारे पीछै कम-सू-कम हिंडोलाकौ एक कलश आज ही अवश्य विजय करि लेनौ, आज चौकी नहीं लगै।

विशेष: हिंडोलाकी छेले दिनकी चँवरी गादीजीमैं वर्ष पर्यन्त लटकी रहै, यदि बीचमैं ग्रहण आ जाय तौ निकाल देनी।

भादौं वद १ या २: जा दिन **हिंडोला-विजय नहीं होवैं** ता दिन

श्रृंगार: पाग-पिछौरा नींबूआ, आभरण तथा ओढनी खुलते।

भादौं वद ३: पाग-पिछौरा कसूंबी, आभरण हरे हीरा (पन्ना)के, नित्यक्रम।

सामग्री: राजभोगमैं मूंगकी दालकौ वारा। उत्थापनभोग: अनसखडीमैं छुकी चनाकी दाल।

नौंध: यदा-कदा तिथिकी वध-घटके कारण हिंडोला विजय ३ कू भी आय जावै है, ऐसेमैं हिंडोला विजयकौ सब क्रम ३ कू करनौ (श्रीगोकुलचन्द्रमाजीके घरमैं ३कू हिंडोला विजय होवैकौ निषेध नहीं है)।

भादौं वद ४: गो. चि. श्रीगोविंदरायजी (आदित्य) बावाश्री (वि.सं.२०५७) कौ जन्मदिन।

श्रृंगार: पाग-पिछौरा केसरी। ओढनी: भारी। **सामग्री**: राजभोगमैं बूरा-बुरकी, मुरब्बाकी कटोरी।

विशेष: आज चाँदीके खिलौना, सिंहासनके पाया आदि स्वच्छ करवाय लेने।

भादौं वद ५: नित्यक्रम। पाग-पिछौरा-ओढनी इच्छानुसार - लाल, गुलाबी, नींबूआ अथवा केसरी।

जानकारीके लिये: विं.सं. २०२३मैं नाथद्वाराके तिलकायत नि.ली.गो. श्रीगोविन्दलालजी महाराजके मनोरथ-स्वरूप सातौं स्वरूपन्नै साथ बिराजके श्रावण सुद ९कू भव्य छप्पनभोग अरोग्यौ। लाखौं वैष्णवन्की उपस्थितिमैं ये अलौकिक दर्शन सलंग १८ घंटा खुले रहे हते। आज पाछे कामवन पधारे। यह पाटोत्सव कामवनमैं मनायौ जाय, सूरतमैं नहीं।

भादौं वद ६: **श्रीगोपाललालजीकौ उत्सव** (वि.सं.१६३७)।

श्रृंगार: वस्त्र-कुलह गुलाबी। ओढनी: इच्छानुसार, भारी।

सामग्री:: **राजभोगमैं** बूंदी, सकलपारे, मुरब्बाकी कटोरी,तरमेवा, नींबू-आदापाचरी, बिलसारु।

जानकारीके लिये: श्रीगोपाललालजी परम प्रतापी हते। इनके नामसू *जय गोपाल* पंथ चलै है, जो इनके बेटीजी श्रीजमुना बेटीजी (जो जमुनेश महाप्रभुके नामसू भी जाने जावैं)ने प्रारंभ कियौ हतौ। श्रीगोपाललालजीके धरे भये प्राचीन पादुकाजी श्रीगोविन्दजीकी हवेलीमैं बिराजैं हैं यासू आजकौ उत्सव वहाँ श्रीमहाप्रभुजी/श्रीगुसाँईजीके उत्सववत् मनायौ जावै।

भादौं वद ७: **छटीकौ उत्सव**।

श्रृंगार: किरणकौ फैंटा तथा खुले बंदकौ वागा लाल, धोती पीली (लाल कोरकी), अन्य सब स्वरूपन् के वस्त्र लाल। सब आभरण पिरोजाके। ओढनी: आसमानी।

सामग्री: राजभोग: सीराकौ कटोरा, मुरब्बाकी कटोरी, तरमेवा, रायता। उत्थापनभोग: अनसखडीमैं छुकी चनाकी दाल। शयनभोग: अनसखडीमैं मगदके लड्डू, मुरब्बाकी कटोरी। सखडीमैं संधाणा, सौंठकी बुकनी, थपडी, **कोला तथा तोरईकी टोकरी तथा भुजैना अवश्य आवैं** - शयनभोगकी घडी राजभोग जितनी (५० मिनिट)।

सेवाक्रम: साँझकू श्रृंगार विजय होवैं तब लाल कुलह-पिछौरा धरैं (श्रीगोविन्दजीकी हवेलीमैं *झगुला-टोपी*के दर्शन होवैं, पालमैं नहीं)। आज शयनके दर्शनमैं ❖दो दीवी जुडैं ❖दोनों झारीजी आवैं ❖गुलेबाँसकी माला(वर्षमैं मात्र एक ही दिन आवै) ❖शयन आरतीमैं डांडेकी आरतीके सब खंड जुडैं।

विशेष: आज शयन पीछै जन्माष्टमीके पंचामृतके लिये चन्दन घिसवाय लेनौ।

सेवाक्रममैं बदलाव: ❖राजभोगमैं बिलसारु आज ताँईं आवै ❖माटीकौ कुंजा आज संध्या-आरती ताँईं, आज शयनमैं शैय्याजीके पास कुंजा करुआ नहीं।

।। इति सूरत स्थित श्रीगोकुलचन्द्रमाजी हवेलीकौ सेवाक्रम संपूर्ण ।।

❖❖❖ ।। श्रीगोकुलेन्दुर्जयति ।। ❖❖❖

❖❖❖

कौन सी वस्तु/सेवा/सामग्री कब सू कब-तक

:साहित्य:

- **अत्तरकी विगत:**
  - ♦**उष्णकाल** (द्वितीया पाटसू रथयात्राके एक दिन पहले): गुलाब, मोगरा, खस।
  - ♦**वर्षाकाल** (रथयात्रासू धनतेरस): सौंधा, पानडी, केवडा, कदम्ब।
  - ♦**शीतकाल** (रूप चतुर्दशीसू डोल): केसर, अंबर, कस्तूरी, हिना।

  विशेष: ऋतुके अत्तर न होवैं तब गुलाब अथवा सौंधा पूरे वर्ष कभी भी ले सकैं।

- **गादी-तकीया पै लाल/सफेद साज:**
  - ♦**लाल/मखमल**: (१) द्वितीया पाटसू चैत्र सुद ८ (रामनवमीके एक दिन पहले)।
    (२) पवित्रा एकादशीसू राधाष्टमी।
    (३) कार्तिक वद ८ सू महा वद ४
  - ♦**आधी सफेदी**: (१) रामनवमीसू वैशाख सुद २
    (२) रथयात्रासू श्रावण सुद १०
    (३) भादौं सुद ९ सू कार्तिक वद ७
  - ♦**पूरी सफेदी**: (१) अक्षय तृतीयासू आषाढ सुद १
    (२) वसंत पंचमीसू डोल (खेलके दिन)।

- **शैय्याजी पै चादर/रजाईकौ क्रम तथा दीवालगिरी:**
  - ♦**सब समय २ सफेद चादर**: (१) संवत्सरसू चैत्र सुद ८
    (दोनों नवरात्रीन् मैं) (२) आश्विन सुद १ आश्विन सुद ९ (दशहराके एक दिन पहले)।
  - ♦**सब समय १ सफेद चादर**: (१) रामनवमीसू वैशाख सुद १३ (नृसिंह जयन्तीके एक दिन पहले)।
    (२) रथयात्रासू श्रावण वद ३ (हिंडोला आरंभसू एक दिन पहले)।
  - ♦**दोपहरकू शैय्याजी खुले, शयनमैं १ चादर**: वैशाख सुद १५ सू आषाढ सुद १
  - ♦**दोपहरकू १ रंगीन, शयनमैं १ सफेद चादर**: श्रावण वद ४ सू आश्विन वद ३०
  - ♦**सब समय १ सफेद चादरके उपर खोल**: (१)दशहरासू कार्तिक सुद १०
    (गरमी होय तौ दोपहरकू खोल घडी करि राखनी) (२) द्वितीया पाटसू चैत्र वद ३०
  - ♦**सब समय १ सफेद चादरके उपर १ रजाई**: (१)देव प्रबोधिनी एकादशीसू मार्ग. सु. ६
    (२) श्रीनाथजीके पाटोत्सवसू डोल।
  - ♦**सब समय १ सफेद चादरके उपर २ रजाई**: मार्गशीर्ष सुद ७ सू फागुन वद ७ मंगला।
  - ♦**रुईके टेरा/दीवालगिरी तथा शैय्याजीके नीचै रजाई**: मार्गशीर्ष सुद ७ सू फागुन वद ७ अनवसर।

  नौंध:♦शैय्याजीके चादर, तकीयाकी खोल सदा मलमल अथवा मुलायम सूतराऊ ही लेने ♦हमेशा पादुकाजीके वस्त्र/रजाईकौ क्रम शैय्याके अनुसार चलै।

- **पैंडा, तह, लकडीके पट्टा तथा सुजनीकौ क्रम:**
  - **सुजनी तथा गैंद-चौगान**: (१) श्रावण वद ४ सू महा सुद ४ (वसंत पंचमीके एक दिन पहले)।
    (ऋतु अनुसार सुजनीके नीचै एक वस्त्र बिछै) (२) द्वितीया पाटसू वैशाख सुद २
  - **पैंडाके नीचै लकडीके पट्टा**: अक्षय तृतियासू श्रावण वद ३
  - **३ चौकी**: अक्षय तृतीयासू श्रावण वद ३
  - **तह**: देव प्रबोधिनी एकादशीसू महा सुद ४
  - **सुजनीके स्थान पै पैंडा** (शैय्याजी ताँईं), **ताके उपर गैंद-चौगान**: वसंत पंचमीसू डोल।

- **शयन दर्शनमैं झारीजी/कुँजाकौ क्रम**:
  - **दोनों झारीजी**: (१) संवत्सरसू वैशाख सुद २
    (२) भादौं वद ९ (प्रथम पलना) सू आश्विन सुद ९
  - **बडी झारीजी तथा कुँजा**: अक्षय तृतीयासू भादौं वद ७ (जन्माष्टमीके एक दिन पहले)।
  - **दोनों झारीजी सीधे शैय्याजी पै, दर्शनमैं नहीं**: दशहरासू चैत्र सुद ८ (रामनवमीके एक दिन पहले)।

- **झारीजीके नेवरा गीले होवैं तथा झारीजीमैं गुलाबजल**: रामनवमी मंगलासू आश्विन सुद ९

- **फूलमंडली**:
  - **राजभोगसू संध्या-आरती**: रामनवमीसू वैशाख सुद १३
  - **शयनसू दूसरे दिन मंगला**: नृसिंहजी सू आषाढ सुद १

- **हिंडोला खाट**: रामनवमीसू राखीके एक दिन पहले।

- **शयन तथा मंगलाके दर्शन तिबारीमैं**: रामनवमीके शयनसू रथयात्राके मंगला।

- **राजभोग/शयनके दर्शनमैं चन्दनकी कटोरी**: अक्षय तृतीयासू आषाढ सुद ५

- **पंखाकौ क्रम**: **श्री...जीकू पंखा होवैं**: अक्षय तृतीयासू दशहरा। नौंध: जितने दिन पंखा होवैं उतने दिन राजभोग दर्शनसू संध्या-आरती ताँईं सिंहासन पै बगली तकीयाके पीछै २ पंखा आवैं।
  - **शैय्याजीके पास रहै, होवैं नहीं**: (१) रामनवमीसू वैशाख सुद २
    (२) दशहरा शयनसू कार्तिक वद ७

- **माटीके कुंजा तथा करुआ**: अक्षय तृतीयाके दिन चन्दन समर्पण सू जन्माष्टमीके एक दिन पहले तक।
  - **कुंजा** (बिना टौंटी): राजभोग दर्शनमैं श्री...जीके दक्षिण तरफ बगली तकीयाके पास एक छोटी पडघी पै सूतराऊ सफेद वस्त्र लपेटके पधरावनौ। उत्थापनमैं झारीजीके साथ भर कै पाछौ सिंहासन पै पधारे तो संध्या आरती पीछे खुले दर्शनमैं बडौ होवै। शयनके दर्शनमैं तीसरी बार भरके छोटी झारीजीके स्थान पर पधारै, आरती पीछै शैय्याजीके पास पधारै।
  - **करुआ** (टौंटी सहित): करुआ अनवसर तथा शयनके समय शैय्याजी पर ही पधरायो जाय, कभी भी दर्शनमें करुआ नहीं आवै।

  नोंध: ♦माटीके कुंजा-करुआ आवैं उतने दिन राजभोगमैं छोटे झारीजी आवैं, शयन भोग सरे पीछै नहीं आवैं ♦माटीके कुंजा-करुआ कभी भी सखडी भोग अरोगैं तब नहीं आवैं, यदि भूलसू रह जावैं तो वे छिब जावै, उनकू निकास कै नये लेने सो जानोगे♦माटीके कुंजा-करुआमैं **कभी भी गुलाबजल नहीं पधरानौ**।

- **खसके टेरा-पंखा**: नृसिंह जयन्तीसू रथयात्रासू एक दिन पहले (अनवसर करते समय खसके टेरा भिजोय निजमंदिरके बाहर लटकाय देने)।
- **सन्मुखमैं श्रीयमुनाजी भरे जावैं तथा छिडकाव**: नृसिंह जयन्तीसू रथयात्रासू एक दिन पहले।
- **फूवारा**: नृसिंह जयन्तीसू रथयात्राके मंगल तक (नित्य राजभोग तथा शयन दर्शनमैं चलैं)।
- **सिंहासन पै गुलाबदानी**: नृसिंह जयन्तीसू आषाढ सुद ५
- **चाँदीकौ कुंजा**: जन्माष्टमीसू दशहरा संध्या-आरती (राजभोगसू संध्या-आरती तक ही आवै, गुलाबजल पधरानौ)।
- **राजभोगमैं नित्य थालीकी आरती**: देव शयनी एकादशीसू श्रीगुसाँईजीकौ उत्सव (पाछैं लिखी होय तब)।
- **सुजनी पै अधिक खिलौना**: भादौं वद ९ सू भादौं सुद ७
- **पीठिकाकी ओढनी**:
  ♦**किनारीवाली (हल्की जरीकी अथवा सूतराऊ)**:♦द्वितीया पाटसू वैशाख सुद २ ♦कसूंबा छठसू कार्तिक सुद १०
  ♦**बन्द**: देव प्रबोधिनीसू डोल (फागुनमैं अमुक दिन लिखी है तब आवै)।
  ♦**उष्णकालकी (हल्की सूतराऊ)**: अक्षय तृतीयासू आषाढ सुद ५
- **मोरछल बंद**: देवप्रबोधिनीसू डोल।
- **सुहाते गरम जलसू आचमन**: देव प्रबोधिनीसू चैत्र वद ७ (गरमी होवै तौ फागुन वद ७ पीछै बंद करि सकैं)।
- **अंगीठी**: देव प्रबोधिनीके देवोत्थापन पीछैसू चैत्र वद ७ (होरी डांडा पीछै गरमी होवै तौ कोलसा नहींवत् पधराने)।
- **खंडके खिलौना**:
  ♦**चाँदी**: ♦द्वितीया पाटसू वैशाख सुद २ ♦कसूंबा छठसू महा सुद ४
  ♦**लकडी**: अक्षय तृतीयासू कसूंबा छठके एक दिन पहले।
  ♦**बन्द रहैं**: खेलके दिनन्मैं।
- **सिंहासनके बगलकी खिलौनाकी दोनों तपकडीमैं लकडीके खिलौना**: खेलके दिनन्मैं।
- **मथनी**:
  ♦**माटी**: चैत्र वद ८ सू कार्तिक सुद १० (नौंध: माटीकी मथनीमैं कभी गुलाबजल नहीं पधरावनौ)।
  ♦**चाँदी या धातुकी गागर**: दशहरासू चैत्र वद ७ (ऋतु अनुसार प्रारंभ/अंतकी तिथि आगै-पीछै करि सकैं)।
- **फूलके छडी-गैंद**: फागुन वद ७ सू डोलके एक दिन पहले।

:श्रृंगार/वस्त्र:

- **वेणुजी कौन-कौनसे दिन धरैं**: वर्षमैं ४ दिन संध्या-आरतीके दर्शनमैं:
  (१) भादौं सुद ११: **दान एकादशी**
  (२) आश्विन सुद १५: **शरद पूर्णिमा**
  (३) कार्तिक सुद ८: **गोपाष्टमी**
  (४) फागुन सुद ११: **कुँज एकादशी**

  नौंध: ये क्रम ये सूत्र याद करि लेनौ आसानीसू याद रखवेके लिये **दान,कुँज, शरद, गोप** - ।

- **मुकुटकौ क्रम**: वर्षमैं १६(१/२) बार मुकुट धरैं। नौंध: कछु लिखी न होय तौ **शयनमैं मुकुटके रंगकी कुलह आवै**।
  (०१) भादौं सुद ११ (दान एकादशी): **वृंदावनी (जरी)**
  (०२) आश्विन वद १४ (श्रीगोपेन्द्रजीकौ उत्सव): **हीरा**
  (०३) आश्विन सुद ११ (रासके दिन): **मोती**
  (०४) आश्विन सुद १२ (रासके दिन): **पन्ना**
  (०५) आश्विन सुद १३ (रासके दिन): **पिरोजा**
  (०६) आश्विन सुद १४ (रासके दिन): **माणिक**
  (०७) आश्विन सुद १५ (शरद पूनम): **हीरा**
  (०८) कार्तिक सुद ८ (गोपाष्टमी): **वृंदावनी (जरी)**
  (०९) फागुन सुद ११ (कुँज एकादशी): **सोना।** साँझकू मुकुटकौ पान बदलै: **फूलकौ (ये आधौ मुकुट)**
  (१०) चैत्र वद ११: **मोती**
  (११) चैत्र वद ३०: **पन्ना**
  (१२) चैत्र सुद ११: **पिरोजा**
  (१३) चैत्र सुद १५ (रासके ६ महीनाकी समाप्ति)
  (१४) वैशाख वद ३०: **इच्छानुसार** (बाकी रह्यौ होय सो)
  (१५) आषाढ वद १२ (फूल श्रृंगार): **फूल** (मूल तिथि १५ है, पालमैं फेरफार कियौ है)
  (१६) श्रावण सुद ८ (श्रीगोकुलनाथजीकौ उत्सव): **मोती**

- **मंगला/शयनमैं वस्त्रकौ क्रम**:
  ♦**वाम स्कंधसू पिछौरा**: ♦आश्विन सुद १ सू आश्विन सुद ९ ♦संवत्सरसू रामनवमी मंगला (**दोनों नवरात्री**) । नौंध: दोनों नवरात्री लालनकू शयन-मंगलामैं श्रीअंगकौ वागा नहीं आवै।
  ♦**कटिसू पिछौरा**: रामनवमी शयनसू आश्विन वद ३०
  ♦**वाम स्कंधसू खोल**: दशहरासू कार्तिक वद ७ (गरमी होय तब तौ आश्विन सुद १ वालौ क्रम चालू राखनौ) ।
  ♦**श्रीमस्तकसू खोल**: ♦अन्नकूट शयनसू कार्तिक सुद १२ ♦डोल शयनसू चैत्र वद ३०
  ♦**शयनमैं चाकदार**: ♦कार्तिक वद ८ सू अन्नकूट ♦कार्तिक सुद १३ सू डोलके एक दिन पहले।
  नौंध: इन दिनन् मैं मंगलाके समय श्रीमस्तकसू खोल ओढैं।

- **चिबुक नहीं धरैं**: खेलके दिनन्मैं।

- **वस्त्रकौ प्रकार:**
  - रामनवमी शयनसू वैशाख सुद २: सूतराऊ पिछौरा - **किनारीवाले**।
  - अक्षय तृतीयासू आषाढ सुद ५: सूतराऊ पिछौरा - **पाईदार**।
  - कसूंबा छठसू आश्विन वद ३०: सूतराऊ पिछौरा - **किनारीवाले**।
  - दोनों नवरात्री: **सूतराऊ चाकदार तथा खुले बंदके वागा**।
  - दशहरासू महा सुद १४: साटीन, जरी आदिके - **चाकदार**।
  - होरी डंडा रोपणसू डोल: **फागुनके वस्त्र** (सूतराऊ चाकदार - किनारीवाले, पाईदार, वसंती छींट)।
  - द्वितीया पाटसू रामनवमी संध्या-आरती: **सूतराऊ चाकदार**।

- **चरणचौकी वस्त्र तथा कंदरावस्त्र** (ठाडेवस्त्र): ये श्रृंगारके समय आवैं - चरणचौकी वस्त्र पूरे वर्ष तथा कंदरावस्त्र चाकदार, खुलेबंद, मुकुट-काछनी, मल्लकाछ-टिपाराके साथ। ऋतु अनुसार रंग बदलैं:
  - ग़ादी पै लाल/मखमलकौ साज तब: **लाल**।
  - गादी पै आधी अथवा आखी सफेदी होय तब: **सफेद**।
  - वसंत पंचमीसू डोल: **गुलाबी**।

  जानकारीके लिये: कामवनमैं जितने दिन रुईके वस्त्र धरैं उतने दिन चरणचौकी तथा कंदराके वस्त्र रुईके आवैं, सुरतमैं यह क्रम नहीं है।

- **जरीकी चंद्रिका**: (१) कार्तिक वद १० सू महा सुद ४
  (२) द्वितीया पाटसू चैत्र सुद ८
  (३) हिंडोलाके दिनन्मैं।

- **शयनमैं जोडके** (श्रृंगारवाले) **नूपुर रहैं**: हिंडोला आरंभसू राधाष्टमी।

- **शयनके आभरण**: ♦ रामनवमीसू कार्तिक वद ७ - **मोती** ♦ कार्तिक वद ८ सू चैत्र सुद ८ - **सोना**।

- **फरगुलकौ क्रम**:
  - **१ फरगुल**: (१) देव प्रबोधिनी एकादशीसू मार्गशीर्ष सुद ६
    (२) श्रीनाथजीके पाटोत्सवसू डोल (गरमी होवै तो मात्र मंगला/शयनमैं फरगुल)।
  - **२ फरगुल**: श्रीबडे देवकीनन्दनजीके उत्सवसू श्रीनाथजीके पाटोत्सव मंगला।

    नौंध: दुहैरा फरगुल धरैं उतने दिन पादुकाजी संपूर्ण ढँके रहै।

- **रुईके आतमसुख**: ♦ देवप्रबोधिनी एकादशीसू वसंत पंचमीके एक दिन पहले: **लाल**
  ♦ वसंत पंचमीसू डोल: **गुलाबी**।

- **सग्गी/चोटी बंद**: देवप्रबोधिनीसू डोल।

- **मोजाजी**: श्रीबडे देवकीनंदनजीके उत्सवसू श्रीनाथजीके पाटोत्सव (देव प्रबोधिनीकू मात्र १ दिन धरैं)।

- **खासाको वागा**: ♦कार्तिक वद ८ सू देव प्रबोधिनी ♦द्वितीया पाटसू चैत्र वद ७

- **श्रृंगारकौ विशेष क्रम**: ♦अक्षय तृतीयासू आषाढ सुद ५ - **मोती** ♦महा सुद ७ सू डोल - **सोना**।

:सामग्री:

- **घुलमा सतुआ**: मेष संक्रान्तिसू अक्षय तृतीया।
- **राजभोगमैं सिखरनभात**: चैत्र सुद १२ सू आषाढ सुद १२ तक **प्रत्येक बारसकू आवै**।
- **राजभोगमैं नित्य बिलसारु**: अक्षय तृतीयासू भादौं वद ७ (जन्माष्टमीके एक दिन पहले)।
- **उत्थापनमैं शीतलजल (पना)**: अक्षय तृतीयासू भादौं वद ७
- **उत्थापनमैं चना/मूंगकी दाल**: नृसिंह जयन्तीसू रथयात्राके एक दिन पहले।
  जानकारीके लिये: कामवनमैं रथयात्रा पीछै हर चौथे दिन उत्थापन भोगमैं छुकी भई चना तथा मूंगकी दाल शुरु होवै, भादौं वद ७ ताँईं जामैं प्रथम तथा अन्तिम बार नियमसू चनाकी दाल, अन्य सब वाराभाँत। सूरतमैं यह क्रम नहीं है।
- **बैंगन बंद**: देव शयनी एकादशीसू देव प्रबोधिनी एकादशीकू देवोत्थापन पीछै (दीपावली/अन्नकूटमैं अरोगैं)।
- **अधिक माखन-मिसरी**: कार्तिक सुद १५ सू मर्गशीर्ष सुद १५ **(गोपमास)**।
- **गन्नाकौ रस (उत्थापनमैं)**: श्रीबडे देवकीनंदनजीके उत्सवसू श्रीनाथजीकौ पाटोत्सव।
  जानकारीके लिये: कामवनमैं मा. सु. ७ सू श्रीगुसाँईजीके उत्सव तक केला तथा नारंगीके रस भी लिखे हैं, गन्नाके अलावा। यह क्रम सूरतमैं खाली पहले तथा आखरी दिन राख्यौ है। **गन्नाकू पौडा अथवा साँठा भी बोलैं हैं**।
- **गुडकी गोली तथा पापड**: श्रीबडे देवकीनंदनजीके उत्सवसू डोल।
- **सुहागसोंठ**: धनुर्मास (मंगलभोगमैं २ चक्की अरोगैं)।

❖❖❖

: सामग्री विभाग :

: सामग्रीन्के विशेष क्रम :

- **मुरब्बाकी कटोरी**: प्रत्येक उत्सवकी सामग्रीके साथ मुरब्बाकी एक छोटी कटोरी अवश्य आवै (प्राचीन प्रणालिकान्मैं कई स्थानन् पै याकू *सीराकी कटोरी* भी लिखी मिलै है)। अधकी, गोपालवल्लभ, राजभोगकी अनसखडी, हिंडोलाकी मनोरथी सामग्री, अधिककी सामग्री जैसी मनोरथी सामग्रीमैं मुरब्बा कटोरी नहीं आवै।
- **दूधघरके पेडा**: हर बुधवार १लीटर दूधके पेडा आवैं (श्रीकृष्णा बहुजीकी आज्ञासू वि.सं. २०७५मैं प्रारंभ भये)। उष्णकालमैं कमसू कम एक बार आमकी बरफी, एक बार आमकी तवापूडी धरनी (पेडाकी जगह)।
- **चौकीन्कौ क्रम**: शीतकालमैं **धनकी संक्रांति पीछैसू फागुन वद १४ तक छोटी तीन तथा बडी चार चौकी** श्री...जी अरोगैं। हमेशा यह क्रम १२की चोकीसू ही प्रारंभ होवे, कदापि १४ सू नहीं। चोकीन्की विगत नीचे प्रमाणकी है:

  छोटी/कच्ची चौकी: १२ के दिन राजभोगमैं १०-१२ नग (३०० ग्राम घी)

  (१) खीरवडा

  (२) खरमंडा। फीकेमैं चुखली/चकरी (सखडी)।

  (३) माँडा (पूरनपोली)। खंडरा एवं खंडराकौ गोरस (सखडी)।

  नौंध: १२ की चौकी पीछै, १३ कू राजभोगमैं खिचडी, घीकी कटोरी, पापड, अचार (सखडीमैं अलगसू)। खिचडीके थालमैं भी घीसू कौर सान्यौ जाय।

  बडी/पक्की चौकी: १४ कू उत्थापन/संध्या-भोगसू १के दिन अनवसरके बंटा तक सब समय नित्यकी सामग्रीकी जगह आवै, कुल ५० नग (१ किलो घी में)। चौकी आवैं तब राजभोगमैं मुरब्बाकी कटोरी भी धरनी।

  (१) मेवाबाटी

  (२) दहीथरा अथवा बूराबुरकी

  (३) चूरी (महा वद १४)।(कामवनमें दहीथराकी आवै।अ.सौ. श्रीकृष्णा बहुजीके मनोरथसू सूरतमें बदली गई)

  (४) कपूरनारी (फागुन वद १४)

  ❖११/१२ भेली होवैं तो एकादशीकी सामग्रीके साथ ही चौकीकी सामग्री

  ❖१२/१३ भली होय जावैं तो चौकीकी सामग्रीके साथ खिचडी भी आवै

  ❖१४को क्षय होवै तौ १३ सू ही बडी चौकी शुरु कर देनी

  ❖दो १४ होय तो दूसरी १४सू चौकी धरगी। या १५/३० दो होवैं तो चौकीकी सामग्री एक दिन अधिक आवै।

  विशेष: १२के राजभोग सरे पे तथा बडी चोकी पूरी अरोग लें तब वह थालमें गादीजीकू भोग आवे। गादीजी अरोग लें पीछे ही वल्लभकुल, सेवक तथा वैष्णवन्में बँटै।

- **दालके वारे**: राजभोगमैं दालके वारे चलैं। **जा दालकौ वारौ होवै वासू ही कौर सान्यौ जावै**। सखडीके थालमैं २ नींबूके ४ टुकडा करके एक कटोरीमैं आवैं। जा दालकौ वारौ होवै वाकौ डबरा तुवरकी दालके स्थान पै आवै (तुवरके वारेमैं तुवर ही आवै)।३-३ महीनाके वारे हैं:

  चना: चैत्र-वैशाख-जेठ

  मूंग (छिलकावली हरी दाल): आषाढ-श्रावण-भादौं

  तुवर: आसो-कार्तिक-मार्गशीर्ष

  उडद (मंगल/रवि वार न होवैं तो ही, अन्यथा आगै/पीछै कर लेनौ): पौष-महा-फागुन

  जानकारीके लिये: सूरतमैं तिथि निश्चित करी हैं, कामवनमैं हर चौथे दिन वारौ चलै।

- **अन्नकूटकौ नेग** (वि. सं. २०७६मैं): **नेग**के सखडी-अनसखडीकौ **६ ड़ब्बा घी** (१५ किलोवाले)। दूध ५५ लीटर (धनतेरससू भाई दूज)। **सूकेमेवा**:

  अनसखडी सामग्रीकौ माप: १ घी किलोमैं सू ४० नग करने, सब सामग्री २-२ किलोकी करनी, थोडी मठडी बडी बनानी (किलोमैं २५ नग)।

  सखडी (कमसू कम): आयुध तथा कौर सानवेके लिये १ किलो घी, सब शाक २-२ किलो, कठोळ १-१ किलो, पूडी ५ किलो, धोवादाल तथा कढीकी १-१ मध्यम मथनी, खीर, दहीवडा आदिके लिये छोटी मथनी।

  अधकी: **१ डब्बा** घीके सकलपारा/छोटी मठडी तथा छोटे मोहनथाल **अधकी** धनतेरसके राजभोगमैं अरोगाय कार्यालयमैं भेज देने। नौंध: दिवालीसू अन्नकूट दर्शन तक अयवेवाले वैष्णवन्कू प्रसाद अधकीकी सामग्रीमैं सू ही देनौ, नेगकी सामग्रीकौ प्रसाद भाई दूज पीछै ही बँटै।

- **महीनामैं १ शयनभोगकौ क्रम**: कामवनमैं हर महीना १ दिन शयनभोग अरोगावेकौ क्रम है -तिथिकौ नियम नहीं, **यह क्रम श्रीवल्लभजी महाराज (वि.सं. १८६१)के मनोरथसू प्रारंभ भयौ हतौ**। शयनभोग करैं वा दिन श्रृंगार: कुंडलके। सामग्री: अनसखडीमैं कोई भी १ सामग्री, सखडीमैं सखडी देढी, भुजैना, रायता, केसरी दूध (नौंध: सूरतमैं यह क्रम नहीं है)।

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

: विशेष सामग्रीन् के नाम तथा सूक्ष्म समझ (सखडी) :

- **धोवादाल**: मूंगकी पीली छडियल दाल। नौंध: धोवादाल आवै ता दिन वासू ही कौर साननौ, वा दिन तुवर दाल नहीं।
- **तीनकूडा**: कढीमैं थोडेसे लाल चना पधरायवेसू तीनकूडा बन जाय
- **कचरीया**: सुकवणी (भिंडी, ग्वार, परवल आदिकी वैष्णवन् सू अपरसमैं सिद्ध करवानी अथवा नाथद्वारासू मँगवाय लेनी)।
- **छाछ वडा**: उडदकी दालके वडान् कू मसालावाली छाछमैं तैराय देने।
- **काँजी वडा**: उडदकी दालके वडान् कू काँजी (सौंठकौ मसालेवालौ जल) मैं तैराय देने।

- **मिर्चकौ शाग**: बिना दहीकी बेसन तथा थोडी काली मिर्चकू कढीवत् खदकाय लेनौ, वघार होवै।
- **अडबंगा**: कच्ची केरीकी छाछ/बाफला छौंक होवै।
- **खंडरा**: तले भए ढोकला जिन पै हल्को बुरा पधरायो जाय।
- **टोकरी**: शाग
- **तवासेवा**: रोटी
- **सतुआ सिद्ध करवेकी रीति**: समान मात्रामैं चनाकी दाल तथा गेहुँ एक कढाईमैं धीमे ताप पै सेककै अच्छी तरह पीस लेने। तामैं दळेली खांड दुगनी (यदि ५००-५०० ग्राम चना तथा गेहुँ होवैं तो १ किलो खांड) तथा थोडी-सी इलायची पधराय बराबर मिलाय बरणीमैं भरि लेनौ।

❖❖❖❖❖❖❖❖❖

: विशेष सामग्रीन् के नाम तथा सूक्ष्म समझ (अनसखडी) :

- **नींबू-आदापाचरी**: नींबू-अदरकके टुकडा
- **बिलसारु**: शक्करके जलमैं कोई भी एक फलके टुकडा तैराय देने।
- **नागरी**: गेहुँ या बेसनके लड्डू अथवा ढाली भई सामग्री जामैं बिलकुल भी जलको उपयोग नहीं होवै।
- **उक्कर पिन्नीके लड्डू**: उडदकौ मगद, त्रिकोण घाटके।
- **कपूरनारी**: शक्करकी भरमा सामग्री, लमचौरस घाटी, प्रत्येक नव पै ५ लौंग खौंसी रहैं।
- **मदनदीपक**: पिस्ताकी भरमा सामग्री, गोल घाटकी।
- **मुखविलास**: बदामकी भरमा सामग्री, त्रिकोण घाटकी
- **गूंजा**: आटाकी भरमा सामग्री, अर्ध-चंद घाटकी।
- **दुधलामृत**: पिस्ता, केसर, बरासकी भरमा सामग्री, कपूरनारी जैसे घाटकी।
- **दहीथरा**: बूराबुरकीके मोमनमैं थोडौ दही पधरानौ।
- **माखनवडा**: बूराबुरकीके मोमनमैं थोडौ माखन पधरानौ।
- **पंजीरी**:
- **अमृत रसावली**: छोटे-छोटे **उडदकी पपची**के नग, जिनके उपर **बासौंदी** पधराय सूकेमेवा बुरका देने।
- **सतुआके लड्डू**: पिसे भये सतुआमैं प्रमाणसर ताजौ घी मिलाय लड्डू बाँधि लेने।

संधाणा/मुरब्बा कितने डालने: संधाणामैं लाल अथवा हरी मिर्च नहीं आवैं, काली मिर्चसू तीखे होवैं।

- ♦कच्ची केरीकौ संधाणा (सालभर नित्य आवै): २० किलो कच्ची केरी।
- ♦मुरब्बा: ५ किलो कच्ची केरी।
- ♦नीबू: ५ किलो।
- ♦आँवलाकौ मुरब्बा: २ किलो।

गुलाबजल बनायवेकी रीति: गुलाबकी पंखुडीन्कू जालीवाले कपडामैं बाँधि काँचकी बरणीमैं उतारकै धूपमैं रख देनौ, एक-एक दिन छोडिकै पंखुडी बदलते रहनौ, अन्यथा जल बिगड जावै। ताजी पंखुडी कपडामैं भरैं तब पुरानी पंखुडी काढि देनी, उनकौ कहीं और (सामग्री आदिमैं) उपोग होयवे योगय नहीं रहेवैं यासू। नौंध: ♦लगभग ३० किलो देसी चैत्री गुलाबसू गुलाबजल की आवश्यकता रहै ♦द्वितीया पाटसू चैत्रके अंत तकके गुलाबसू ही सुंदर खुश्बूवालौ गुलाबजल सिद्ध होवै है।

❖❖❖

❖❖❖

सेवा विभाग

: विशेष सेवान् की विगत तथा उत्सव निर्णय :

- **पादुकाजीकी सेवा**: नित्य शंखनादसू थोडी देर पहले पादुकाजीकू जगाय, अंगवस्त्र करि नये वस्त्र धरावने। साँझकू उत्थापनमैं अंगवस्त्र करि ऋतु अनुसार वस्त्र धरने (पादुकाजीके वस्त्रकौ क्रम शैय्याजीकी चादरवत् चलै)। बारौं महीना साँझकी सेवा करते समय सबसू अंदर एक सफेद वस्त्र (किनारी ओट्यौ भयौ) अवश्य आवै। नित्यमैं दो बार झारीजी बदलैं (मंगला और उत्थापन)।
- **गादीजीकी सेवा**: ♦श्री...जीकी सेवाकौ संपूर्ण क्रम गादीजी ही पहोंचैं ऐसौ भाव है यासू गादीजीकी सेवा नित्य -शाम शंखनादसू पहले शुरु होवै। श्री...जीके अनवसर तथा पौढे पीछै ही सेवाक्रम संपन्न होवै ♦सुबह-शाम तालामंगल खोलते पहले **झुमकाजीकी सकोरी गादीजी सन्मुख होवै** (यदि सुबह गादीजीके मंगला न भये होवैं तो भी) ♦सेवाक्रम या प्रमाणे रहै:

  ♦**सुबह**:। सर्वप्रथम दंडवत् करि झारीजी, बीडा, भोगकौ बंटा तथा मालाजी विजय करकै नये पधराने (नौंध: नित्य श्री...जीके प्रसादी फूलमाला गादीजीकू धरैं तथा प्रसादी झारीजीके जलसू ही गादीजीके झारीजी भरे जावैं। गादीजीमैं माटीके कुंजा आदिकौ क्रम नहीं है)। **तीन बार ताली बजाय *जै जै जै महाराज जागो!*** ऐसे विनती करि सावधानीसू चादर उघार गादीजीकू जगाने, पाग तथा पादुकाजीकू सिंहासन तथा चौकी पै पधराने। जपमालाकी गौमुखी गोदमैं सजाके पधरानी, शयन तक ये यहीं रहै। मंगलासू अनवसर तक गादीजीके दर्शन खुले रहैं। ♦**शाम**: तीन ताली बजाय *जै जै आऊँ* कही अंदर प्रवेश करनौ। सर्वप्रथम दंडवत् करि झारीजी, बीडा तथा मालाजी विजय करकै नये पधराने - बंटा सुबहवालौ है रहै। उत्थापनसू शयन तक गादीजीके दर्शन खुले रहैं। श्री...जी पौढि जावैं तब दंडवत्-तालामंगल करि गादीजीमैं आय **झूमकाजी तथा माला-बीडाकी सकोरी सन्मुख करिये**। गादीजीकौ टेरा ले फूलमाला, झारीजी, बीडा, भोगकौ बंटा तथा जपमाला शैय्याजीके बाजूमैं एक चौकी पै जमाय देने। शैय्याजी पै हाथ फिराय गादीजीकी पागकू सावचेतीसू पधराने, तिनके नीचै पादुकाजी पधराय चादर विगेरे उढाय देने। चित्रजीकू भी वस्त्रसू ढाँकि दंडवत् करि बाहर आवनौ।

  ♦**भोगकौ क्रम**: जब भी श्री...जी कोई विशेष सामग्री अरोगैं अथवा प्रत्येक उत्सव पै भोग सराय दूधघर तथा अनसखडी प्रसादकौ थाल तैयार करि सर्वप्रथम गादीजीकू भोग आवै। श्रीवल्लभलालजी, श्रीगोविन्दलालजी तथा श्रीगिरधरलालजीकी *कानी* देनी, घडीकौ नियम नहीं (कमसू कम ५ मिनिट)। गादीजीकू भोग आये पीछै प्रसाद वल्लभकुल तथा सेवकन् मैं बँटै।

  ♦**वस्त्रकौ प्रकार**: नित्यमैं सफेद धोतीके उपर ऋतु अनुसार वस्त्र तथा उपरणा धरैं। प्रत्येक बडे उत्सवसू पहले धोती-वस्त्र तथा इकलाई केसरी धराय देने। गादी तकीयाकौ साज दो ही प्रकारकौ: सफेद तथा लाल/मखमल (श्री...जीके सेवा अनुसार बदल लेने)।

- **जन्माष्टमी तथा अभ्यंगकी पीठिकाकी ओढनी**: प्रति वर्ष एक ओढनी अवश्य नई सिद्ध होय -केसरी साटीनकी, श्याम साटीनकी पट्टावाली (भारी किनारीकी) - ताकू जन्माष्टमीकी ओढनी कहैं। पिछले सालन्की जन्माष्टमीकी ओढनीन्कू अभ्यंगकी ओढनी कहैं।
- **अभ्यंगकी रीति**: श्रृंगारके समय तिलक-अलकावली तथा बाँक बडे करि, एक कटोरीमें थोरो चंदन घोलि तामैं २-४ बूंद अत्तरकी पधराय एकरस करि, कटोरी श्री...जीके सन्मुख करि दो क्षण आँख बंद करि राखनी। पाछैं, कटोरी बाजू पै धरि, थोडो अत्तर हथेलीमें लेकें संपूर्ण श्रीअंग पै समर्पिये (अभ्यंग होय ता दिन फुलेलसू सेवा नहीं होवै)। ता पाछैं अंगवस्त्र करिये। या चंदनके घोलको श्रीशालिग्रामजी, श्रीगिरिराजजी तथा लालनके स्नानमैं उपयोग करनो। जा दिन अभ्यंग होवैं ता दिन **पीठिका पै ओढनी अभ्यंगकी** आवै तथा दोनों आरसी चाँदी की आवैं, छोटी डाँडेवाली। विशेष: **मंगल तथा रविवारके दिन अभ्यंग नहीं होवै** (ये वार सुंदर नहीं माने हैं यासू)। उत्सवक्रममैं अभ्यंग लिखौ होवै वार नहीं देखनौ। जानकारीके लिए: कामवनमैं *बडे अभ्यंग*के दिन सादा अभ्यंगके उपरान्त मथनी, छन्ना,शैय्याजीकी सफेदी विगेरे भी बदलैं।
- **श्रृंगार कुंडलके**: जा दिन प्रणालिकामैं *श्रृंगार कुंडलके* लिखी होवै ता दिन: दुमाला, फैंटा, टिपारा अथवा ग्वालपगामैं सू इच्छा होय सो धर सकें। नोंध: टिपारा पै श्रीकर्णमैं लोलकको आग्रह राखनौ, कुंडलको निषेध नहीं है।
  उष्णकाल: फैंटा पै धोती, दुमाला/ग्वालपगा पै पिछौरा अथवा मल्लकाछ पै टिपारा
  शीतकाल: शीतकालमैं सभी कुंडलके श्रृंगारके साथ चाकदार-सूथन ही धरैं, मल्लकाछ तथा धोती नहीं आवै। टिपारा कम आवै(निषेध नहीं), धरैं तब जडाऊकौ आग्रह राखनौ।
- **श्रृंगार परचारगीके**: जा दिन परचारगीके श्रृंगार लिखे होवैं ता दिन कुलह-पिछौरा-ओढनी पिछले दिनके रहैं, तनीया बदलो जाय। जोडकी जगह घेरा धरैं, श्रृंगार इकहरा होवैं।
  नौंध: श्रावणकी परचारगीमैं पाग-चंद्रिका, बाकी क्रम उपर लिखे प्रमाणे।
- **थापा**: मंदिर, गादीजी तथा श्रीवल्लभकुलके निवासस्थानके मुख्य द्वार पै कंकूके ५-५ थापा लगैं।
- **बंदनमाल/तोरण**: मंदिर तथा गादीजीके मुख्य द्वार पै आसोपालवके तोरण बँधैं। बडे उत्सवन् पै आसोपालव तथा गलगोटा दोनोके बँधैं।
- **भोग-वस्त्र**: नित्यमैं भोग अरोगते समय एक सफेद मलमलकौ ओट्यौ भयौ लमचौरस वस्त्र श्री...जीकी गादीजी पै प्रभु सन्मुखसू सिंहासन पै थोडौ-सौ लटकतौ भयौ बिछायौ जावै।
  नौंध: बगली तकीया धरे होवैं तब और सांगामची पै भोगवस्त्र नहीं आवै।
- **पंचामृत**: चारौं जयन्ती (रामनवमी, नृसिंहजी, जन्माष्टमी, वामनजी) तथा देवोत्थापनके समय पै श्रीशालिग्रामजीकू पंचामृत होवैं। जन्माष्टमीके दिन प्रात:काल श्री...जी कू पंचामृत स्नान होवैं तथा अन्नकूटके दिन गोवर्धन-पूजाके समय श्रीगिरिराजजीकू पंचामृत करवाये जावैं।
  पंचामृतकी वस्तु-सामग्री: एक बडौ थाल, चाँदीकी एक छोटी चौकी, चौकी पै बिछायवेकौ चार

घडी कियौ भयौ सफेद या लाल सूतराऊ वस्त्र, कच्चौ दूध, दही, शहद, घी, बूरौ (दळेली खांड), पंचामृतकौ शंख, एक चाँदीकी कटोरी मैं १०-१२ तुलसीजीके पत्ता, एक कटोरी घिसौ भयौ चंदन, जलकी लोटी, अंगवस्त्र।

पंचामृतकी पूर्वतैयारी: दर्शन खुलवेसू पहले मंदिरवस्त्र करि एक बडौ थाल पंचामृतके स्थान पै (देवोत्थापनके अलावा सभी दिन श्री...जीके सिंहासन सन्मुख) पधराय तामैं चंदनसू साथिया मांडिये। ता साथिया पै चाँदीकी चौकी पधराय तेके उपर सूतराऊ वस्त्र बिछाईये। थालके बाहर (शैय्या मंदिरकी तरफ) पंचामृतकी पाँचौं वस्तून् के डबरा (दूध, दही, घी, शहद, बूरा - या क्रमसू) जमाय देने, दूध अधिक ठंडौ न होय तथा घी जम्यौ भयो अथवा ज्यादा गरम न होय या बातकौ खास राखनौ। थालके पास ही पंचामृतकौ शंख, तुलसीकी तथा चंदनकी कटोरी एवं जलकी लोटी पधरानी। अंगवस्त्र भी संभाल लेनौ जासू समय पै मिलि जावै।

पंचामृतकौ क्रम: हमेशा पंचामृतके समय शंख-घंटा-टकोरा अवश्य बजैं। पंचामृतमैं बैठवेसू पूर्व दंडवत् करनी। पंचामृतकौ परचारक शैय्या मंदिरकी तरफ बैठै तथा पंचामृत करवायवे वालौ वाके सामने रहै। पंचामृतके समय पंखा/मोरछल होते रहैं। या रीतिसू पंचामृत होवैं:

❖सर्वप्रथम, ***पंचाक्षर* बोलते भये तुलसीजी**के एक-एक पत्ता सभी डबरान् तथा शंखमैं पधराने, जलकी लोटीमैं नहीं। बचे भये पत्ता चंदनमैं डुबोय शालिग्रामजी पै पधराने ❖तुलसीजी वाली कटोरीमैं दूध भरि शंखमैं पधराय पंचामृतकौ प्रारंभ करनौ। **दूध**के डबरामैं ३ अथवा ५ कटोरी जितनौ दूध शेष रहै तब तक दूध पधरानौ ❖ता पाछै, **दही** पधरानौ, पूरौ डबरा समाप्त करि देनौ ❖क्रमसू **घी** तथा **शहद** पधराने (५ बारमैं डबरा खतम होय जावै ये अंदाजसू) ❖**बूरौ** पधरानौ, आधौ डबरा शेष रहै तब तक ❖अब, **वापिस दूध ३ अथवा ५ बार** पधराय डबरा समाप्त कर देनौ ❖तीन बार थोडौ-थोडौ जल शंखमैं पधराय अभिषेक करनौ, तीसरी बारमैं शंखकू शालिग्रामजी पै ३ बार ओसारकै नीचै राखि देनौ। ❖अब, शालिग्रामजीकू हाथमैं पधराने, परिचारक क्रमसू बूरौ (शेष रह्यौ होय उतनौ सब) तथा घुल्यौ भयो चंदन शालिग्रामजी पै पधरावै, सब चिकनाई छुडाय देनी ❖अन्तमैं, जलसू अच्छी तरह स्नान करवाय शालिग्रामजीकू स्थान पै पधरावने।

- **तिलक**: शंख–टकोरा-घंटा बजत दंडवत् करि सर्वप्रथम श्री...जीकू तिलक करि, अक्षत (पीले चोखा) लगाय गादी पर दोनों तरफ एक-एक बीडा (चौंच कंकूमैं डुबोय) पधराईये। श्रीशालिग्रामजी तथा श्रीबालगोपालजी (लालन) कू भी तिलक-अक्षत, बीडा नहीं। श्रीपादुकाजीकू तिलक लिख्यौ होय तब करनौ (तिलककी थालीमैं सू थोडे-से कंकू अक्षत हथेलीमैं अलग निकाल पादुकाजीकू तिलक होवै)।
- **श्रीफल भेट**: बडे उत्सव, जन्मदिन आदि पै श्रीफल भेट होवै। मात्र **श्रीफल भेट** लिखी होवै दो श्रीफल पै एक-एक चाँदी अथवा चलनकौ सिक्का पधरायौ जाय।

यदि ***सब स्वरूपन् की तरफ सू श्रीफल भेट*** लिखी होवै तो परिवारमैं जितने

वल्लभकुलके बालक-बहुजी-बेटीजी भूतल पै बिराजते होवैं उन सबन् की आडीसू एक-एक श्रीफल तथा २ श्रीफल गादीजीकी आडीसू आवैं

नौंध: श्रीफल भेटकी सेवा कृष्ण-भंडार (कार्यालय)के चोपडामैं लिखी जावै। चाँदीके सिक्का धरे होवैं तो तत्कालीन भाव अनुसार भेट कृष्ण-भंडारमैं करनी।

- **भट्ठीपूजनकी रीति**: श्रीवल्लभकुल पधारैं ता पहले बालभोगमें एक भट्ठी स्वच्छ करि, ताके फिरते सूखे हल्दी तथा कंकूसू अलग-अलग रेखा खैंचकै प्राचीन भट्ठीन्के घाटकी भट्ठी माँढि राखनी - भट्ठीकौ मुख दक्षिणकी तरफ न होय ये ध्यान राखनौ। भट्ठीके पीछैकी दीवार पर पुष्टिमार्गीय उर्ध्वपुंड्र तिलक करि वाही प्रकारसू कलाई दोरा दीवाल पर लगाव अथवा गुडसू लगाय ताके मध्यमें १ रुपैया नगद गुडसू चिपकाय राखनौ। तिलकके उपर - ।। *श्रीगोकुलेनदुर्जयति* ।। तथा ।। *श्रीनवनीतप्रियालालकी जय* ।। - घुले हुए कंकूसू लिख देने, अगले सालके लिखे होंय तो उनके उपर ही। श्रीवल्लभकुल बालभोगमें पधारैं तब सर्वप्रथम भट्ठी पूजनकौ स्कल्प होवै। आपश्रीके हस्तसू चारौं कोनेन् पै सूखे हल्दी तथा कंकूके साथिया बनवाने। ता पाछै भट्ठी प्रज्वलित कर सन्मुखमें दोनों तरफ २-२ पान, जिनके उपर एक-एक सुपारी तथा थोडेसे आखे धाणा पधरावने। एक दोनामें थोडोसो गुड भट्ठीके सन्मुख पधराय देनो। एक श्रीफल भट्ठीके मुखके पास फोड ताकौ जल थोडो-थोडो चारों तरफ तथा अग्निमें पधरावनौ। पाछै, कडाही (कढाई) चढाय तामें अंदाजसू घी पधराय देनौ। कडाही तथा पलटा पै १-१ कलाई दोरा बाँधि देने। घी गरम होय उतनेमें श्रीवल्लभकुल तथा मुखिया-भीतरीयान् में से २ अथवा ४ जनेन् कू तिलक-कंकण बँधन करि देने। घी गरम होय तब आटा पधराय धीमे-धीमे हिलाते भये बदामी रंगकौ सेकिकै राख लेनो। पूजनमें आवश्यक सामग्री: १-१ दोनामें आखे धाणा, कंकू तथा हल्दी, १ रुपैया नगद, नाडा-छडी (कलाई दोरा) - १ नंग, गुड - १०० ग्राम, श्रीफल - १, घी तथा गेहुंकौ आटा - २ या ३ किलो, पान - ४ नंग, सुपारी - नंग २। १-१ कडाही तथा बडौ पलटा।
- **अक्षय तृतीया आदिके वस्त्र छापवेकौ प्रकार**: अक्षय तृतीयासू २ दिन पहले ही वस्त्र छाप लेने, **वस्त्र अपरसमैं ही छपैं**। अक्षय तृतीयाके पाग-पिछौरा तथा स्नानयात्राके धोती-उपरना तथा पिछौरा (कुल ३ जोड) भिन्न-भिन्न छपैं, स्नानयात्राकी दोनों जोड पै केसरकी किनारी बनै तथा समान छापे होवैं, अक्षय तृतीयाकी जोड पै उनसू भिन्न। प्रतिवर्ष पिछले वर्षके अक्षय तृतीयावाले वस्त्रन् पै चोवाके छापे लगाय इनकू नृसिंह जयन्तीके वस्त्र कर लेने (छेले दो-तीन वर्षकी जोड सेवामैं राखनी, तासू पुरानी सब निकाल देनी)। ♦छापवेकी रीति: ♦घट्ट केसरके जलमैं नामकू चंदन पधराय घोल बनाय लेनौ (केसर ९०, चंदन १० प्रतिशत राखने) ♦ रंग करवेकी पीछीसू छापा पै केसर चुपडैं तौ वे सुंदर एवं सुघड आवैं, केसरमैं डुबाय छापा करवेसू रंग बिखरवेकौ भय रहै।
- **चोवा बनायवेकी रीति**: चंदनकी लकडी जलाय कोलसा जैसी श्याम होय जाय तब बारीक पीस, छन्नासू छानके तामैं प्रमाणसर फुलेल तथा अत्तर मिलाय लेवेसू चोवा सिद्ध होय जाय।

♦ **ग्रहण**:

पूर्व–तैयारी: ♦ग्रहणके थोडे दिन पहलेसू भंडारमै घी-तेल, मसाले ऐसी गिनतीसू वापरने कि ग्रहणके दिन सामप्त हो जावैं ♦ग्रहणके एक दिन पहले डाभ मंगवाय राखनी ♦मथनी तथा कुँजा-करुआ नये मंगवाय राखने ग्रहण बाद चढायवेके कोरे नेवरा भी ♦ग्रहण पीछैकी सामग्रीके लिये कोरौ सीधा पहले ही मंगवाय लेनौ ♦ झाडू, पाम पौंछवेके कंतान, पौंछा-पौंछीके वस्त्र तथा बासन माँजवेके छूँछा - सब नये मंगवाय राखने, बासन माँजवेकौ पाउडर ग्रहण पहले खतम करि देनौ अथवा कोरौ करि राखनौ ♦अनप्रसादी सामग्री होय तौ अरोगाय प्रसादी करि लेनी ♦चूना कोरौ करि लेनौ, सुपारी पान अंदर राखि लेने ♦अत्तर, फुलेल, मोमके डब्बा आदि सब चिकनी वस्तु अंदर पधराय देनी ♦ग्रहण पहले फूलमाला सब अंगीकार करवाय निकाल देनी, ग्रहणमैं सिद्ध करी फूलमाला छिब जावैं - कोरे फूल नहीं छिबैं सो राखने ♦अनप्रसादी संधाणा, मुरब्बा कबाटके भीतर रेशमीसू ढाँकि धरि देने ♦प्रसादी माला-बीडा, फूलके तोरण विगेरे काढि देने ♦समय अनुसार ग्रहण पहले भोगकी सामग्री सिद्ध करि रसोई-बालभोग अच्छी तरह स्वच्छ करि सब चिकनाई निकाल (चूल्हा-कढाईमैं सू खास) कोरे करि लेने ♦फूलघरके पाट आदि भी स्वच्छ, कोरे राखने - कोई चिकने वस्त्र होवैं तो निकाल देने ♦मुखिया-भीतरियान्कू ग्रहण पीछै बदलवेकी जनेउ-कंठी सौंप देनी, सभी सेवक अपनी-अपनी अपरसकी १-१ जोड रेशमीसू ढाँकि राखैं - यह जोड ग्रहण निवृत्त भये पै पहरैं (ग्रहणमैं नई जोड नहीं मिलै) ♦ग्रहणकौ समय, दर्शन विगेरेकी विगत वैष्णवन कू ४-५ दिन पहले ही सूचित करि देनी।

ग्रहण लगवेके थोडी देर पहले: ♦झारी-कुँजाके नेवरा, गादी-तकीया एवं शैय्याजीकी सब सफेदी तथा बालभोगके चिकने टेरा विगेरे विजय करि खासा करवे पनारेमैं पधराय देने (गादीजीके गादी-तकीयाकी सफेदी भी याद करके बडी करि लेनी) ♦ग्रहण पहलेके छेले झारीजी भरि मट्टीकी मथनी निकाल देनी, कुंजा-करुआ भी निकाल देने, मथनीघर कोरौ करि लेनौ ♦शैय्याजी समेटकै खडे करि लेने ♦दान करवेकी सामग्री-भेट मँगवाय चौकमैं पधरवाय लेने ♦संकल्पके लिये जलकी लोटी, अक्षत तथा टिप्पणी भी दानके सामानके साथ ही धरि देने ♦श्री...जी सन्मुखकी गोलख हटाय लेनी

ग्रहण लगवे पहलेकौ सेवाक्रम: ♦श्रीवल्लभकुलकी आज्ञा अनुसार शंखनाद, सेवाक्रम तथा भोगकौ क्रम करनौ, भोगकौ सब सखडी महाप्रसाद गौग्रासमैं निकल जावै ♦ग्रहणके समय पादुकाजीके वस्त्र कोरे ही रहैं ♦ग्रहण लगवेके १० मिनिट पहले भोग सब स्वरूपन्के झारीजी आदि (याद रखकै गादीजीके झारी-बंटा भी) सराय एक कटोरामैं मिसरी श्री...जी सन्मुख पधराय देनी सब स्थान पै डाभ पधराय देनी (शैय्यामंदिरके द्वारसू डाभ पधरानौ प्रारंभ करि वस्त्रके कबाट, गादीजीके कबाट, रसोई-बालभोगसू लगाय वल्लभकुलके अपरसकोठा तथा निवासस्थान तक सब जगह डाभ पधरानी) ग्रहण लगवेके ५ मिनिट पहले डाभ आदिकौ क्रम सम्पन्न करि लेनौ ♦ग्रहण

लगवेके २ मिनिट पहले चौकमैं जाय बैठनौ (टिप्पणी तथा संकल्पके लिये जलकी लोटी अक्षत जरूर चौकमैं निकाल लेने), ग्रहणके दर्शन खोलि देने - टकोरा नहीं ♦ग्रहणके दर्शनमैं सर्वप्रथम महात्म्यके कीर्तन होवैं, बादमैं अन्य ऋतु अनुसार ♦ग्रहणके मध्यमैं वल्लभकुल बालक नाथद्वाराकी टिप्पणीमैं बताये क्रम तथा मंत्रसू संकल्प छोड दान तथा भेट (१०/- रू.) करैं, यह दान मंदिरकी ड्यौढीके बाहर पधरवाय देनौ (दूसरे दिन सफाईवालेकू सीधा तथा भेट ले जावैकू कह देनौ, मंदिरके सेवक नहीं लैं - बाहर काढिकै छुवैं भी नहीं), संकल्पवाली जलकी लोटी खाली करि कोरी करि लेनी।

ग्रहण निवृत्त भये पै: ♦ग्रहण मोक्षके २ मिनिट बाद दर्शनकौ टेरा ले कछू भी वस्तुकौ स्पर्श किये बिना सब सेवक अपरस करवे जावैं एक सेवक पहले अपरस करि सब स्थानकी डाभ काढि बाहर डालके पाछौ दूसरी बार अपरस करै - दूसरी बार स्नान करते समय जनेऊ-कंठी बदले ♦अन्य सब सेवक अपरस करि जनेऊ-कंठी बदलकै रसोई-बालभोगकी सेवा प्रारंभ करैं - सर्वप्रथढ़ आटेकौ सीरा तथा मगद सेक लेने, पाछैं अन्य सामग्री प्रारंभ करनी श्री...जीके स्नानकी तैयारी करि लेनी ♦वल्लभकुल पधारैं तब श्री...जीकू सुहाते जलसू स्नान होवैं, पाछै गादीजी समेत सभी अन्य स्वरूपन् के भी स्नान होवैं ♦श्री...जीकू वस्त्र-श्रृंगार होवैं इतनेमैं श्रृंगार चौकीके पास एक झारीजी भरि पधराय देने, अन्य सब स्वरूपके स्नान करवाय उनके झारीजी पधराने ♦इतनौ सेवक्रम भये पै मानभोग (आटेकौ सीरा) भोग धरनौ, या समय झारीजी सराय नये भरने - प्रसादी झारीजीके जलसू गादीजीके झारीजी भरने (सब स्वरूपन् के झारीजी भरे पीछै ही वल्लभकुल तथा सेवक जल लैं ये आग्रह राखनौ) ♦समय अनुसार भोग तथा सेवाक्रम करनौ, मानभोग गौग्रासमैं जावै - बंटा तथा अन्य भोगमैं मगद आवै जो सरे पै गादीजीमैं अरोगाय पीछै बँटै।

ग्रहणमैं कौन-सी वस्तु निकल जावैं: ♦माटीके मथनी, कुंजा-करुआ ♦चूल्हा पै चढौ घी-तेल ♦दही (कई स्थान पै जामुन जितनौ राखैं हैं), माखन तथा गरम कियौ भयौ अनप्रसादी दूध ♦तवासेवाकौ घी, पलोथन सेवामैं आये भये मसाले ♦चिकनाई न निकल सकै वो वस्त्र/पौंछना।

♦ **<u>अधिक/पुरुषोत्तम मास</u>**: अधिकके महीनामैं पूरे महीना श्री...जीकू राजभोगमैं कोई भी एक अधिक सामग्री (अंदाजित ३०० ग्राम घी की) अवश्य अरोगावनी, मुरब्बाकी कटोरी नहीं। ये भोग गादीजीमैं अरोगाय वल्लभकुलकी आज्ञा प्रमाणे बँट जाय।

जा दिन नाथद्वाराकी टिप्पणीमैं दानकौ क्रम लिख्यौ होवै ता दिन गुडके ३३ पूआ (३३ कोटि देवतान् के भावसू) राजभोगमैं अरोगावने, मुरब्बाकी कटोरी नहीं आवै। पूआ गादीजीमैं भी भोग नहीं आवैं, वल्लभकुलकू भी नहीं जाँय। ये पूआ मुखिया-भीतरिया आदिमैं सू कोई भी एककू, कछू दक्षिणा धरिकै देने। अलग-अलग दिन अलग-अलग सेवककू ये पूआ देने।

प्राचीनकालमैं पंचमगृहमैं अधिकमासमैं दर्शनके मनोरथ (हिंडोला, बगीचा आदि) नहीं होते, सन् १९७०के दशकमैं नि.ली.गो.श्रीगिरधरलालजी महाराजकी आज्ञासू सृष्टिके मंदिरन्मैं यह क्रम प्रारंभ भयो है। मनोरथ करते समय ये सावचेती राखनी कि प्रभुन्कू अति विलंब न होवै

तथा मनोरथ ऋतु अनुसार ही होवैं (उष्णकालमैं दीपदान आदि नहीं तथा शीतकालमैं जलके नहीं) यह विवेक भी राखनौ। या उपरान्त कोई भी उत्सवकौ मनोरथ (अन्नकूट, रथयात्रा, आदि) नहीं होवै ये भी ध्यान राखनौ। नित्य दर्शनके मनोरथ करनौ अनिवार्य नहीं है, ये तो यदा-कदा (पूरे महीनामैं ६-८) ही करने। विशेष: यदि **अधिक मास श्रावणके महिनामैं आवै तो** श्री...जी ठकुरानी त्रीजसू झूलैं (२ महीना नहीं, मात्र १५ दिन ही)।

सेवकन्कू अपरसकी जोड: मंदिरके प्रत्येक सेवककू वर्षमैं अपरसकी ४ जोड मिलैं ♦श्रावण तथा दीपावली पहले १-१ ♦डोल पीछै २ (अन्नकूटके समय भोगकी धोती भी सेवक आपसमैं समझकै बाँट लैं)।

: उत्सव निर्णय :

- **डोलको निर्णय**: उत्तरा फाल्गुन नक्षत्र उदयात् होय ता दिन ही डोल मनायौ जाय, होलीके दूसरे दिन ही मनानौ ऐसौ नियम पुष्टिमार्गमैं नहीं है। नाथद्वाराकी टिप्पणीके अनुसार ही डोल माननौ।
- **एकादशी कब माननी वाको निर्णय**: अनेक बार एकादशीकौ व्रत वा दिन नहीं होवै,१० अमुक घडीसू अधिक होवै तौ एकादशीकी सामग्री तथा व्रतकौ क्रम दूसरी एकादशी अथवा द्वादशीकू होवै। नाथद्वारासू प्रकाशित टिप्पणी अनुसार व्रत आदिकौ क्रम राखनौ। यदि एकादशी पै कोई बालककौ उत्सव आवै तो हमेशा उत्सव तौ प्रथम एकादशी पै ही मनायौ जावै (दृष्टांत: श्रीमहाप्रभुजीके उत्सव पै व्रत द्वादशीमैं लिख्यौ होवै तो सखडी-अनसखडी सामग्री, तिलक कीर्तन आदि उत्सवकौ क्रम एकादशीके दिन ही होवै, एकादशीकौ सीधा द्वादशीकू आवै)।
- **शरद पूर्णिमाको निर्णय**: जा तिथिमैं पूर्णिमा *निशीथ* (रात्रीके समय) होवै ता दिन ही शरद पूर्णिमा माननी।
- **रथयात्राको निर्णय**: पुष्टिमार्गमैं रथयात्रा नक्षत्रसू मानी जाय, तिथिसू नहीं। या कारणसू कई बार पंचांगसू अलग दिन रथयात्रा मनाई जाय है, नाथद्वाराकी टिप्पणीके अनुसार ही रथयात्रा माननी।
- **तिथि दो दिन होवै और वामैं उत्सव आवै तो उत्सव कौनसे दिन माननौ** ?हमेशा उत्सव पहली तिथि पै माननौ, दूसरी *रिक्ता* तिथि कही जावै।

❖ ❖ ❖

: वस्त्र/आभरण विभाग :

: वस्त्रके रंग :

- **श्वेत**: सफेद
- **श्याम**: काले
- **गुलैनार**: दाडमी (अनारके रंगके)
- **कसूंबी**: लाल।
- **आभासी**: आसमानी
- **झूमरदी**: हरे अंगूरके रंग जैसे
- **सोसनी**: थोडे गहरे आसमानी (लेवेन्डर)
- **खसखसी**: खसखसके रंगके
- **मूंगीया**: मूंग जैसे रंगके

❖❖❖❖❖❖

: आभरणके रंग :

- हीरा: सफेद
- मोती: मोती
- पन्ना: हरे। **नौंध**:कई सदथान पै हरे हीराके लिखे होवैं वहाँ भी पन्नाके आभरण ही धरने।
- माणिक: लाल
- पिरोजा: आसमानी
- पुखराज: पीले
- नीलम: गहरे नीले
- मीनाकारी: नक्शी वाले
- मूंगा: कसरी मोती

❖❖❖❖❖❖

:वस्त्रके प्रकार :

- **आतमसुख**: खाली ओटे भये रुईके लाल सूथन तथा कंठवस्त्र एवं अन्य स्वरूपन्के श्रीअंगके वस्त्र।
- **कसीदा**: सूतराऊ - एक रंगके वस्त्र पै दूसरे रंगसू डोरा-भरत।
- **जामदानी**: एक रंगके वस्त्र पै वही रंगकी (self design)।
- **दरियाई**: रेशमी (cotton silk)
- **कारचोबा**: टीकी भरत
- **पाईदार**: सूतराउ वस्त्र, सूतराउ किनारीवाले।
- **छींट**: छींट दो प्रकारकी होवैं:
  - (१) संवत्सर तथा वाके आसपास: सूतराउ वस्त्र पै रंग-बिरंगे छोटे-छोटे फूल आदि छपे रहैं।
  - (२) फागुनके: सूतराउ वस्त्र पै खुलते रंगके छींटा रहैं (इनकू वसंती छींट कह सकैं)।
- **मगजी**: वस्त्रमैं साटीनकी किनारीकू *मगजी* कहैं।
- **छापा**: सूतराऊ वस्त्र पै सुनहरी/रुपहरी छापे
- **तास**: भारी जरी।

❖❖❖❖❖❖

❖❖❖

:पंचमगृहकी विशेष परंपराएँ:

- ♦ सखडीकौ थाल धूप-दीपके बाद पधारै।
- ♦ श्रृंगारके दर्शनमैं आरती होवै।
- ♦ **पाग पै चंद्रिका** श्री...जीके **वामभाग** झुकी रहै (नौंध: बाकी सब श्रृंगार पै अन्य घरन्की तरह जोड आदि आवैं)।
- ♦ पूरे वष **गुँजामाला लाल तथा सफेद मिश्रित** मणकावाली ही धरैं, अकली लाल अथवा अकेली सफेद कभी नहीं।
- ♦ पूरे वर्ष **श्रीचरण तक श्रृंगार**, कभी भी कटि तकके श्रृंगार नहीं होवैं।
- ♦ पंचमगृहमैं परंपरासू **कौरमैं तुलसीजी** आवै, अन्य घरन् मैं नहीं आवै।
- ♦ राजभोग दर्शनके समय खंडके आगै **सुजनी बिछै** , ताके उपर गैंद-चौगान मँढैं।
- ♦ चौपडकी तीन अलग-अलग चौकी रहैं, अन्य घरन् मैं एक ही पाट रहै।
- ♦ शीतकालमैं मात्र चाकदार वागा ही आवै, घेरदार कभी नहीं।
- ♦ शयन आरती पीछै तुरंत टेरा आवै। शयन दिनकी आखरी आरती है, एक पलमैं श्री...जीकू नजर लगवेसू रातमैं कोई श्रम न होवै ऐसे वात्सल्य भावसू ये परंपरा है।
- ♦ नित्य वेणुजी नहीं धरैं, गादी पर बिराजैं। वर्षमैं ४ दिन धरैं जाकी विगत अन्य स्थान पै दई है।
  - ♦ **रासके स्वरूप हैं तो भी नित्य वेणुजी क्यौं नहीं**: अन्तर्ध्यान लीलाके स्वरूप हैं यासू कृपा-स्वरूप वेणुनाद प्रकट नहीं करैं हैं, मात्र ४ दिन लीला-दर्शन हैं।

♦**तुलसी समर्पणकौ प्रकार**: श्रृंगार होते ही दर्पण दिखायकै मात्र एक ही व्यक्ति तुलसी समर्पण करै (श्रृंगारी अथवा जाकू बडे आज्ञा करैं वो)। तुलसीदल हाथमैं लेकै दोनों चरणारविन्दके स्पर्श करते भये गद्यमंत्र बोलि तुलसी समर्पण होवै। गद्यमंत्र संपन्न होते ही तुलसी विजय हो जावैं। तुलसी समर्पणके बाद गोपीवल्लभ अथवा राजभोग आवैं।

♦ **सखडीकौ थालकी दिशा**: पंचमगृहमैं सदा सखडीके थालमै सखडी (भात) श्री...जीके वामभाग तरफ रहै ऐसे पधारै, अन्य घरन् मैं सखडी सामने तरफ रहै।

♦ **आरसी दिखायवेकी रीति**: श्रंगार होते ही भीतर दो आरसी देखैं, श्रृंगार अथवा राजभोगके दर्शनमैं भी देखैं। अन्य घरन् मैं प्रत्येक आरतीसू पहले-पीछै आरसी दिखाई जावै, पंचमगृहमैं नहीं।

♦ **काछनी धरवेकौ प्रकार**: काछनीके दो नीचेवाले छोर कटि पै दबाय दिये जावैं (मात्र निज/अंतरंग परिकरके संग रास करैं या भावसू घेर छोटौ रहै)।

♦ **शरदकौ क्रम**: प्रणालिकाके पृष्ठ सं. २२ पै दियौ है सो वाँचि लेनौ।

♦ **विज्ञप्ति**: श्रीरघुनाथजीकू श्रीगुसाँईजीमैं अति आसक्ति हती यासू **प्रथम श्रीगुसाँईजीकौ नाम आवैं, पाछे श्रीमहाप्रभुजीकौ**।

♦ **कामवनमैं पादुकाजीके चरणस्पर्श**: पंचमगृहमैं श्रीमहाप्रभुजी (ये एक पादुकाकी साथवाली जोडी नाथद्वारामैं श्रीनवनीतप्रियाजीके मंदिरमैं बिराजै - श्रीवल्लभने स्वयं चरण पधराये वह ये जोडी है यासू अमूल्य हैं), श्रीगुसाँईजी तथा श्रीरघुनाथजीके एक-एक पादुका साथमैं (एक ही पलंगडी पै) बिराजैं हैं, उनमैं सू सर्वप्रथम श्रीगुसाँईजी, दूसरे श्रीमहाप्रभुजी और तीसरे श्रीरघुनाथजी - या क्रमसू चरणस्पर्श होवैं (आसक्तिवाले कारणसू)।

♦ **जनानेकू प्राप्त सेवा तथा निषेध**: पंचमनिधि श्रीगोकुलचंद्रमाजी नारायणदास ब्रह्मचारीके सेव्य हैं यासू जनानेकू प्राप्त सेवाकौ प्रकार बहुत सूक्ष्म है।

♦**भोगमैं चमचा पधरायवेकी सेवा तथा कौर सानवेकी सेवा।**

♦**कौन-कौनसी सेवा नहीं कर सकैं**:

- ♦भोगमैं तुलसीजी पधराने।
- ♦झारीजी भरने अथवा हाथ लगानौ।
- ♦आरती तथा धूप-दीप।
- ♦श्री...जीके तनीयामैं दर्शन (जनानेकू पिछौरा अथवा वस्त्र सहित ही श्री...जीके दर्शन होवैं)।
- ♦श्रृंगारकी सेवा (श्रीनवनीतप्रियाजी बालभावके स्वरूप होवेसू उनकी श्रृंगार सेवा करवेकी बहुजीन् कू आज्ञा है)।

❖❖❖

❖❖❖

:पंचमगृह तिलकायतकी सूची:

♦ **जगद्गुरु श्रीमद् वल्लभाचार्यजी (श्रीमहाप्रभुजी)**: वि.सं. १५३५ (वैशाख वद ११)

♦ **श्रीगोपीनाथजी** (श्रीमहाप्रभुजीके प्रथम पुत्र): वि.सं. १५६८। नौंध: श्रीगोपीनाथजीकू १ पुत्र श्रीपुरुषोत्तमजी (१५८७)भये सो १९ वर्षके लीलामैं पधारे यासू उनकौ वंश आगै न बढ्यौ।

♦ **श्रीविट्ठलनाथजी (श्रीगुसाँईजी)**: वि.सं. १५७२ (पौष वद ९)

♦ **श्रीगुसाँईजीके लालजी** ७: श्रीगिरधरजी (१५९७), श्रीगोविन्दजी (१५९९), श्रीबालकृष्णजी(१६०४), श्रीगोकुलनाथजी (१६०७), श्रीरघुनाथजी (१६११), श्रीयदुनाथजी (१६१३), श्रीघनश्यामजी (१६२८)। श्रीगुसाँजीने वि.सं. १६३८, **नाग पंचमी (श्रावण सुद ५) कू ७ गृह न्यारे किये** - ये पुष्टिमार्गके मुख्य ७ *घर* अथवा *गादी* हैं, ये सब **तिलकायत (नाथद्वारा) सू भिन्न हैं**।

नाम	वि. सं.	शुभ मिति	विशेष सूचना
♦ **पंचमकुमार श्रीरघुनाथजी (बडे)**	१६११	कार्तिक सुद १२	श्रीगुसाँईजीके पंचमकुमार
♦ **श्रीदेवकीनंदनजी (बडे)**	१६३४	मार्गशीर्ष सुद ७	श्रीरघुनाथजीके प्रथम पुत्र
♦ **श्रीरघुनाथजी (छोटे)**	१६६०	श्रावण वद ११	श्रीदेवकीनंदनजीके प्रथम पुत्र
♦ **श्रीदेवकीनंदनजी (छोटे)** - इनके कोई पुत्र न भये।	१६९७	श्रावण सुद १५	श्रीरघुनाथजीके पुत्र
♦ **श्रीविट्ठलेशजी**	१६९८	भादौं वद १३	श्रीदेवकीनंदनजीके भतीजा
♦ **श्रीगिरधरजी**	१७२५	आषाढ सुद ३	श्रीविट्ठलेशजीके प्रथम पुत्र
♦ **श्रीद्वारिकेशजी (भाव-भावनावारे)**	१७५१	चैत्र सुद २	श्रीगिरधरजीके प्रथम पुत्र
♦ **श्रीगिरधरजी**	१७७८	पौष सुद ११	श्रीद्वारिकेशजीके द्वितीय पुत्र
♦ **श्रीदेवकीनंदनजी (चारभुजावाले)** - श्रीयमुना बहुजीके पति	१७९९	महा सुद १०	श्रीगिरधरजीके प्रथम पुत्र (रघुनाथजीकौ वंश यहाँ तक)
♦ **श्रीवल्लभजी महाराज** - वेणुजीके प्रसंगवाले	१८६१	महा सुद १४	द्वितीय गुहसू गोद पधारे (श्रीगिरधरजीकौ वंश शुरु)
♦ **श्रीगोविन्दजी** (ज्वलंत महात्याग वाले - **गोविंदप्रभु** कहे जावैं)	१८९३	आषाढ सुद ७	श्रीवल्लभजीके तृतीय पुत्र
♦ **श्रीदेवकीनंदनजी (बापाश्री)**	१९१५	चैत्र सुद ३	श्रीगोविन्दजीके द्वितीय पुत्र
♦ **श्रीवल्लभलालजी** (चतुर्थ-पंचम पीठाधीश्वर रहे)	१९४८	आषाढ सुद ३	श्रीदेवकीनंदनजीके तृतीय पुत्र
♦ **श्रीगोविन्दलालजी**	१९८६	कार्तिक सुद १३	श्रीवल्लभलालजीके प्रथम पुत्र
♦ **श्रीगिरधरलालजी**	२००७	आषाढ वद ४	श्रीगोविन्दलालजीके प्रथम पुत्र
♦ **श्रीवल्लभलालजी**	२०३०	फागुन सुद २	श्रीगिरधरलालजीके प्रथम पुत्र

❖❖❖❖❖❖

♦ **पंचमनिधि श्रीगोकुलचन्द्रमाजी (कामवन) कहाँ और कब बिराजे ताकौ संक्षिप्त इतिहास:**

♦ **व्रज**: श्रीबडे रघुनाथजीके माथे पधारे तबसू संवत् १८२२ तक गोकुल, गोकुलपुरा (कामवनमैं श्रीकुंडके पास बसायौ गाम हतौ जहाँ सातौं गृहन्की जगह हतीं) तथा अभी जहाँ बिराजैं वह कामवनकी हवेलीमैं सेवा चली।

♦ **जयपुर**: वि.सं. १८२२ मैं जयपुरके राजाकी विनतीसू श्रीदेवकीनंदनजी (चारभुजावाले) के सममैं जयपुर पधारे।

♦ **बीकानेर**: वि.सं. १९२२मैं जयपुरकौ राजा अवैष्णव भयौ तब १०० वर्षमैं भेट आई सगरी संपत्ति (ता करोडन् की हती) त्यागकै श्रीगोविन्द प्रभुने श्री...जीकू बीकानेर पधराये। जयपुर त्यागकौ प्रसंग पुष्टिमार्गमैं *ज्वलंत महात्याग* नामसू प्रख्यात है।

♦ **कामवन**: वि.सं. १९२८मैं श्रीगोकुलचंद्रमाजीकी आज्ञा भई तब बीकानेरके राजाकी अनेक विनती करवेके बावजूद श्री...जीकू चुपचाप कामवन पधराये। श्रीगोकुलचंद्रमाजीके वियोगमैं बीकानेरके राजाने देह-त्याग कियौ। बीकानेरके राजाके सेव्य श्रीरसिकरायजी आज कामवनमैं बिराजैं हैं, उनकू अन्नकूट अलगसू (डोलतिबारीमैं) अरोगायौ जावै है। तबसू अद्यावधि श्रीगोकुलेन्दु प्रभु कामवनमैं बिराजैं हैं।

♦ **पंचमगृहके अमुक प्रभावशाली आचार्य बालक:**

♦ **श्रीबडे रघुनाथजी**: श्रीनामरत्नाख्य सतोत्र, अनेक षोडशग्रंथकी टीका, संस्कृत ग्रन्थ-कीर्तन, श्रीपुरुषोत्तम सहस्रनाम पै नाम-चंद्रिका टीका लिखी।

♦ **श्रीबडे देवकीनंदनजी**: श्रीगोकुलेशके साथ माला-तिलक रक्षण प्रसंगमैं काश्मीर पधारे हते।

♦ **श्रीगोपाललालजी**: श्रीबडे देवकीनंदनजीके छोटे भाई, जिनके नामसू *जय गोपाल* पंथ चलै है।

♦ **श्रीछोटे रघुनाथजी**: आपश्रीनै श्रृंगार आरती आर्या एवं श्रीराघवेन्द्र स्तोत्रकी रचना करी।

♦ **श्रीद्वारिकेशजी**: आपश्रीनै **भाव-भावना** नामकी पुस्तक लिखी जो पुष्टिमार्गके भाव-साहित्यमैं सर्वमान्य है।

♦ **श्रीदेवकीनंदनजी (चारभुजा वाले)**: आपश्रीकू चार भुजा हती, बहुत प्रतापी एवं विरक्त स्वभावके हते।

♦ **श्रीगोविन्दप्रभु**: आपश्री तीन गृहकू संभालते (चतुर्थ-पंचम-सप्तम)

♦ **श्रीदेवकीनंदनजी** (श्रीदेवकीनंदनाचार्यजी): आपश्री बहुत जप-पाठमैं आसक्तिवाले हते - मुंबई, गुजरातमैं आपश्रीकौ बहुत प्रभाव हतौ।

♦ **श्रीजयदेवजी**: आपश्री बहुत प्रतापी हते। वीरमगाममैं आपश्रीके चरणारविन्द ठोकरसू जल निकल्यौ सो १०० वर्ष चल्यौ।

♦ **वर्तमान पंचम पीठाधीश्वर श्रीवल्लभलालजी महाराज श्रीमहाप्रभुजीसू १८वीं पीढी पैं है।**

❖❖❖❖❖❖

❖पंचम गृहाधीश्वरके अमुक बहुजीन्के नाम❖

♦**पंचमकुमार श्रीरघुनाथजी** (वि.सं. १६११): श्रीजानकी बहुजी।

♦**श्रीदेवकीनंदनजी** (वि.सं. १९१५): कुल ३ बहुजी - पहले २ श्रीभागीरथी, तीसरे श्रीभामिनी बहुजी।

♦**श्रीवल्लभलालजी** (वि.सं. १९४८): कुल २ बहुजी - पहले श्रीलक्ष्मीजी (अम्मा वन), दूसरे श्रीमहालक्ष्मी बहुजी (अम्मा टू)।

♦**श्रीगोविन्दलालजी**: श्रीराजलक्ष्मी बहुजी (श्रीद्वारिकेशलालजी महाराजश्रीके माता। आप अनेक बार सूरत पधारकै श्रीनवनीतप्रियाजी प्रभुकी श्रृंगार-सेवा करते)।

❖❖❖❖❖❖

:पंचमगृह (कामवन-सूरत) की परंपरा:

♦पूर्वकालीन आचार्य बालक♦

♦**श्रीगोविन्दजी महाराज** (वि.स.१७८१): ये श्रीगिरधरजी महाराज (वि.सं.१७७८)के छोटे भाई हते। श्रीगुसाँईजीके निधि श्रीनवनीतप्रियाजी प्रभु (खंभातके जीवा पारेखके सेव्य) कू गोपीपुराकी **श्रीगोविन्दजी महाराज हवेली** मैं वि.सं.१८२५के आसपास पाट पधरायके सूरतमैं स्थाई निवास कियौ। उनके छोटे भाई श्रीयदुनाथजी (वि.सं. १७९२) भी सूरत बिराजे ऐसे लेख मिलैं हैं।

♦**श्रीवल्लभजी महाराज** (वि.स.१८६१): श्रीवल्लभजी महाराज जीवनकी उत्तर अवस्था (अंतकाल) मैं सूरत ही बिराजे, यहीं लीला पधारे। पंचमनिधि श्रीगोकुलचंद्रमाजीके वियोगमैं आपश्रीनै श्रीनवनीतप्रियाजीके आभरण/खिलौना/साहित्य आदि श्रीगोकुलचंद्रमाजी जैसे ही सिद्ध करवाये जो आज भी सेवामैं आवै है।आपश्रीनै सुरत, नवसारी, चीखली, वलसाड आदिमैं पधारकै अनेक जीव शरणमैं लिये। आपश्रीने वलसाडके गादीजी मंदिरमैं अलौकिक स्वरूपसू दर्शन दिये, वहाँ आपश्रीकौ चाँदीकौ मुकुट भी बिराजै है।

❖❖❖❖❖❖

♦वर्तमान आचर्य बालक♦

♦**श्रीद्वारिकेशलालजी महाराज** (जन्मदिवस: आषाढ वद १४, वि.स.२००९): आपश्री सपरिवार वि.सं.२०३६ सू सूरतकी श्रीगोविन्दजी हवेलीमैं बिराजैं है। आपश्रीकी आज्ञानुसार सूरतमैं पंचमगृहकी अनेक हवेलीमैं सेवाक्रम प्रारंभ भयौ।

♦बहुजी: **अ.सौ.कृष्णा बहुजी** ♦पुत्र दो: (१) **गो. श्रीअनिरुद्धलालजी** (२) **गो. श्रीकन्हैयालालजी**।

♦**गो. श्रीअनिरुद्धलालजी महोदय** (जन्मदिवस: फागुन सुद ३, वि.स.२०३२): ♦बहुजी: **अ.सौ. उषालक्ष्मी (पूजा) बहुजी**

♦पुत्र २: (१) **चि. गो. श्रीगोविन्दरायजी** (आदित्य बावाश्री) - जन्मदिवस: भादौं वद ४, वि.सं. २०५७

(२) **चि. गो. श्रीगोकुलचन्द्रजी** (अनन्य बावा) - जन्मदिवस: कार्तिक सुद ७, वि.सं. २०६५

♦**गो. श्रीकन्हैयालालजी महोदय** (जन्मदिवस: श्रावण वद १३, वि.सं. २०३४): वि.सं. २०६७ सू पाल हवेलीमैं बिराजैं हैं।

♦बहुजी : **अ.सौ. भामिनी (प्रीति) बहुजी**।

♦पुत्र: **श्रीजयदेवलालजी** (राहुल बावा) - जन्मदिवस: कार्तिक सुद १०, वि.सं. २०५८।❖❖❖

:नौंध :

।। श्रीगोकुलेन्दुर्जयति ।।

❖❖❖

श्रीगोकुलचंद्रमाजी हवेली

हजीरा रोड, पाल, सूरत

सेवा प्रणालिका

भाग -१

(भादौं सू मार्गशीर्ष)

❖❖❖

तिथि	विशेष उत्सव	पृष्ठ
भादौं वद ८	जन्माष्टमी	०५
भादौं सुद ८	राधाष्टमी	१३
भादौं सुद ११	दान एकादशी	१४
भादौं सुद १२	वामन जयन्ती (द्वादशी)	१५
आश्विन सुद १०	दशहरा	२०
आश्विन सुद १५	शरद पूर्णिमा	२३
कार्तिक वद १३/१४	धनतेरस, रूप चतुर्दशी	२६-२८
का.व.३०/का.सु.१	दीपावली, अन्नकूट	२९-३५
कार्तिक सुद २	भाई दूज	३६
का. सुद ८/९	गोपाष्टमी/अक्षय नवमी	३७/३८
कार्तिक सुद ११	देव प्रबोधिनी एकादशी	३९
कार्तिक सुद १२	पंचमकुमार श्रीरघुनाथजीकौ उत्सव	४३
मार्गशीर्ष वद १३	श्रीकाका वल्लभजी (पादुकाजी)कौ उत्सव	४६
मार्गशीर्ष सुद ७	श्री बडे देवकीनंदनजीकौ उत्सव	४७

❖❖❖

।। श्रीगोकुलेन्दुर्जयति ।।

❖❖❖

श्रीगोकुलचंद्रमाजी हवेली

हजीरा रोड, पाल, सूरत

सेवा प्रणालिका

भाग -२

(पौष सू चैत्र)

❖❖❖

तिथि	विशेष उत्सव	पृष्ठ
डिस. १३-१५	धनुर्मास (धनकी संक्रान्ति)	५०
पौष वद ९	श्रीगुसाँईजीकौ उत्सव (जलेबी उत्सव)	५१
जन. १३-१५	मकर संक्रान्ति	५४
महा वद ६	पाल हवेली (श्रीगोकुलचंद्रमाजी)कौ प्रथम पाटोत्सव	५५
महा सुद ५	वसंत पंचमी	५९
फागुन वद ७	श्रीनाथजीकौ पाटोत्सव	६५
फागुन सुद ११	कुँज एकादशी	६८
फागुन सुद १५	होली	७०
चैत्र वद १	डोल	७१
चैत्र वद २	द्वितीया पाट	७५
चैत्र सुद १	संवत्सर	७७
चैत्र सुद ३	श्रीदेवकीनंदनजी (गादीजी)कौ उत्सव	७८
चैत्र सुद ९	रामनवमी	७९
————	उष्णकालके विशेष सेवाक्रम (फूलमंडली, ओसरा आदि)	८१
अेप्रि. १३-१५	मेष (सतुआ) संक्रान्ति	८२

❖❖❖

।। श्रीगोकुलेन्दुर्जयति ।।

❖❖❖

श्रीगोकुलचंद्रमाजी हवेली

हजीरा रोड, पाल, सूरत

सेवा प्रणालिका

भाग -३

(वैशाख सू श्रावण)

❖❖❖

तिथि	विशेष उत्सव	पृष्ठ
वैशाख वद ११	श्रीमहाप्रभुजी उत्सव (वल्लभ जयन्ती)	८४
वैशाख सुद ३	अक्षय तृतीया	८६
वैशाख सुद १४	नृसिंह जयन्ती	८८
जेठ सुद १०	गंगा दशहरा	९२
जेठ सुद १५	स्नान यात्रा	९३
आषाढ वद ८	फूल श्रृंगार १ (मल्लकाछ-टिपारा)	९६
आषाढ वद १२	फूल श्रृंगार २ (मुकुट-काछनी)	९७
आषाढ सुद २	रथयात्रा	९८
आषाढ सुद ६	कसूंबा छठ	१०१
आषाढ सुद १०	बैंगन दशमी	१०२
श्रावण वद ४	श्रीगोकुलचन्द्रमाजी (कामवन) पाटोत्सव तथा हिंडोला आरंभ	१०४
श्रा.व.३०/सु.३	हरीयाली अमावस्या/ठकुरानी त्रीज/नाग पंचमी	१०९
श्रावण सुद ६-९	बगीचा (रविवारकू होवै)	११०
श्रावण सु.११	पवित्रा एकादशी	१११
श्रावण सुद१२/१५	पवित्रा द्वादशी/राखी	११२
भादौं वद १/२	हिंडोला विजय	११५
भादौं वद ७	छटीकौ उत्सव	११६

❖❖❖

।। श्रीगोकुलेन्दुर्जयति ।।

❖❖❖

श्रीगोकुलचंद्रमाजी हवेली

हजीरा रोड, पाल, सूरत

सेवा प्रणालिका

भाग -४

(सेवा विगत)

❖❖❖

विगत	पृष्ठ
कौन सी वस्तु कबसे तक:	
❖**साहित्य:** ♦ अत्तर ♦ गादी-तकीयाकी सफेदी ♦ ♦ शयन दर्शनमैं झारीजी/कुंजा ♦ फूलमंडली ♦ हिंडोला खाट ♦ दर्शन तिबारीमैं ♦ पंखा ♦ मथनी ♦ अंगीठी विगेरे	११७-११९
❖**श्रृंगार/वस्त्र:** ♦ वेणुजी ♦ मुकुट ♦ वस्त्रके प्रकार ♦ जरीकी चंद्रिका ♦ फरगुल ♦ सग्गी बन्द ♦ रुईके आतमसुख ♦ मोजाजी खासाकौ वागा विगेरे	१२०-१२१
❖**सामग्री:** ♦ घुलमा सतुआ ♦ उत्थापनमैं शीतलजल ♦ अधिक माखन-मिसरी विगेरे	१२२
सामग्री विभाग:	
❖**सामग्रीन् के विशेष क्रम:** ♦ दूधघरके पेडा ♦ चौकीन्कौ क्रम ♦ दालके वारे विगेरे	१२३
❖**विशेष सामग्रीन् के नाम तथा सूक्ष्म समझ (सखडी)**	१२४
❖**विशेष सामग्रीन् के नाम तथा सूक्ष्म समझ (अनसखडी)**	१२५-१२६
सेवा विभाग:	
❖**विशेष सेवान् की विगत:** ♦ पादुकाजी तथा गादीजीकी सेवा	१२७
♦ अभ्यंगकी रीत ♦ श्रृंगार कुंडलके ♦ पंचामृत	१२९
♦ भट्टीपूजनकी रीति ♦ अक्षय तृतीयाके वस्त्र छापवेकौ प्रकार	१३०
♦ ग्रहण ♦ अधिक/पुरुषोत्तम मास	१३१-१३२
❖**उत्सव निर्णय**	१३३
वस्त्र/आभरण विभाग: ♦ वस्त्रके रंग ♦ आभरणके रंग ♦ वस्त्रके प्रकार	१३४
❖**पंचमगृहकी विशेष परंपराएँ**	१३५
❖**पंचमगृहके तिलकायतकी सूची**	१३६
❖**पूर्वाचार्यन् के बहुजी ♦ पंचमगृह (कामवन-सूरत) की परंपरा**	१३७
❖**Photo Section**	१३८सू

❖❖❖❖❖❖